सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 68 ★ अंक : 12 ★ मूल्य : 10 रु.
10 दिसम्बर, 2011 ★ मार्गशीर्ष-पौष, 2068

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

अहिंसा तीर्थ
एक संस्कार केंद्र

*"मांसाहार मानवजाति पर कलंक है।
मांस जमीनसे या झाड पर नहीं पैदा होता।
निर्दोष बेजबान प्राणियों की हत्या से
मांस तयार होता है। ऐसे पाप कार्य से
लोगों को बचाओ।"*

शाकाहार प्रसारक एवं गोपालक मा. श्री. रतनलालजी बाफना द्वारा निर्मित जलगाँव का अहिंसा तीर्थ शाकाहार प्रचार-प्रसार के लिये समूचा समर्पित है। यहाँ का यूटर्न म्युझियम देखकर आजतक लाखों लोगोंने मांसांहार त्यागा है। यह प्राणियों की मुक भावनाओं तथा उनकी असीम यातनाओं को बखुबी प्रदर्शित करता है

आपका अहिंसा तीर्थ में स्वागत है।

*आप जैन है, शाकाहार का प्रसार करो
सच्चे महावीर बनो, धर्म का नाम उँचा करो ।*

रतनलाल सी. बाफना
शाकाहार प्रवर्तक

रतनलाल सी. बाफना
गो सेवा अनुसंधान केंद्र
गोशालाही नहीं एक संस्कार केंद्र

अहिंसा तीर्थ, कुसूंबा, जळगांव. फोन : 2213415, 2270125 • www.ahimsatirth.com

जिनवाणी
हिन्दी-मासिक

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

🙛 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

🙛 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

🙛 प्रकाशक
विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

🙛 सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

🙛 सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

🙛 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-07/2009-11
ISSN 2249-2011

दीहाउया इड्ढिमंता,
समिद्धा कामरूविणो।
अहुणोववन्नसंकासा,
भुज्जो अच्चिमालिप्पभा।।
-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.27

दीर्घायु वे ऋद्धि के धारक,
कामरूप ज्योतिर्धारी।
तत्काल उदित दिनमणि के-से,
तेजस्वी प्रखर किरणधारी।।

दिसम्बर, 2011
वीर निर्वाण संवत्, 2538
मार्गशीर्ष-पौष, 2068

वर्ष 68 अंक 12

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.
आजीवन देश में : 500 रु.
आजीवन विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	भ्रष्टाचार पर विचार	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	दृष्टि की पवित्रता से आचरण की शुद्धता	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	11
संगोष्ठी आलेख -	अध्यात्म और भ्रष्टाचार	-प्रो. दयानन्द भार्गव	17
	भ्रष्टाचार उन्मूलन में अध्यात्म की भूमिका	-डॉ. सागरमल जैन	21
	भ्रष्टाचार का दर्शन	-डॉ. चन्द्रशेखर	27
	भ्रष्टाचार पर सामाजिक नियन्त्रण	-श्री के.एस. गलुण्डिया	39
	नैतिकतापूर्ण जीविकोपार्जन	-श्री पी.शिखरमल सुराणा	45
	भ्रष्टाचार-विषयक गांधी-चिन्तन	-डॉ. ओ.पी. टाक	50
	बौद्धदर्शन में भ्रष्टाचार-उन्मूलन के तत्त्व	-डॉ. श्वेता जैन	55
	चिकित्सा में भ्रष्टाचार	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	83
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Religious Harmony and Fellowship of Faiths: A Jaina Perspective (2)	*-Prof. Sagarmal Jain*	34
पत्र-स्तम्भ -	दीवार जब टूट जाती है(10)	-आचार्य विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म.सा.	63
तत्त्व-ज्ञान -	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (72)	-श्री धर्मचन्द जैन	68
नारी-स्तम्भ-	नारी में संस्कार सर्जन का बोध	-डॉ. मंजुला बम्ब	71
युवा-स्तम्भ-	दान के पर्याय भामाशाह	-डॉ. दिलीप धींग	78
बाल-स्तम्भ -	मिलावट का दौर	-श्री नितेश नागोता जैन	89
पर्युषण रिपोर्ट -	Visit to Jain Center of America	*-Dr Priyadarsna Jain*	92
प्रेरक-प्रसंग-	झूठ क्यों बोलूँ	-श्री जे.सी. कटारिया	76
	सर्वश्रेष्ठ शासक	-श्री शंकरलाल चण्डालिया	77
कविता/गीत-	हीरा गुरुवर बड़े महान्	-श्री धर्मचन्द जैन	16
	आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ाये	-श्री शशि कुमार बोहरा	26
	लेकिन रुकेगा न सफर	-रेणु सिरोया	54
	नववर्ष का संदेश	-श्री नितेश नागोता जैन	70
	बदलो	-श्री गणेशमुनि शास्त्री	88
विचार-	दान	-श्री रणछोड़मल चौपड़ा	67
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (21)	-संकलित	95
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		99
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		119

सम्पादकीय

भ्रष्टाचार पर विचार

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

भ्रष्टाचार के विरोध में आज सभी एक स्वर से आवाज उठा रहे हैं। बड़े-बड़े घोटालों एवं अनैतिक आय के स्रोतों का उल्लेख मीडिया में होता रहता है। भ्रष्टाचार के इन मुद्दों पर इसलिए ध्यान आकर्षित होता है, क्योंकि इनसे देश एवं समाज की हानि होती है तथा जनता का शोषण होता है। सूक्ष्म दृष्टि से चिन्तन किया जाए तो आज हर एक व्यक्ति को स्वयं का मूल्यांकन करने की आवश्यकता है कि वह स्वयं तो भ्रष्ट नहीं? मूल्यांकन करने पर विदित होगा कि किसी न किसी अंश में प्रायः हर व्यक्ति आचरण से भ्रष्ट है। जब तक कोई पूर्ण वीतराग अवस्था को प्राप्त न कर ले तब तक उसे अपने आचरण का सुधार करने की आवश्यकता बनी ही रहती है।

जोधपुर में 5-6 नवम्बर को 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषय पर एक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में हुआ। संगोष्ठी में जो विचार अभिव्यक्त हुए हैं, उनका कुछ निष्कर्ष यहाँ प्रस्तुत है-

1. आचरण का आधार व्यक्ति के विचार होते हैं तथा विचारों का आधार उसकी दृष्टि होती है। जो जैसी दृष्टि रखता है वैसे ही उसके विचार होते हैं तथा विचारों के अनुरूप ही उसका आचरण होता है। जो व्यक्ति यह मान लेता है कि मुझे किसी भी प्रकार धन कमाना है एवं सुख भोग के साधनों को एकत्रित करना है तो वह नीति-अनीति को नहीं देखता, सही-गलत को नहीं देखता। उसे बस अपना लक्ष्य दिखाई देता है और उसकी पूर्ति के लिए वह आचार से भ्रष्ट होने को भी बुरा नहीं मानता। उसे दूसरों के सुख-दुःख से कोई मतलब नहीं होता। दूसरों के शोषण से भी यदि अपने स्वार्थ की सिद्धि होती है तो उसके लिए भी वह तैयार रहता है। जो दृष्टि से या दर्शन से भ्रष्ट है वह ज्ञान से एवं आचरण से भी भ्रष्ट होता है। आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं-"दंसणभट्ठा भट्ठा।" जो दर्शन

से भ्रष्ट है वही भ्रष्ट है। मिथ्यात्वी व्यक्ति दर्शन या दृष्टि से भ्रष्ट होता है, इसलिए वह आचरण से भी भ्रष्ट होता है। आचारांग सूत्र में "नाणभट्ठा दंसणलूसिणो" शब्दों का प्रयोग हुआ है। जो ज्ञान से भ्रष्ट एवं दृष्टि से विनष्ट होते हैं उनका आचरण सही होगा, इसकी आशा नहीं की जा सकती। इसलिए जब तक दृष्टि सम्यक् न हो तब तक न्यूनाधिक रूप में आचारगत भ्रष्टता बनी ही रहती है।

2. प्रायः व्यक्ति अपनी दृष्टि एवं विचारों से सुदृढ़ नहीं होता, इसलिए दूसरों का आचरण देखकर स्वयं का आचरण निर्धारित करता है। वह किसी न किसी को श्रेष्ठ या आदर्श मानकर उसका अनुकरण करता है। किन्तु वह किसे श्रेष्ठ मानता है इसी में सारी भूल होती है। आज ईमानदार व्यक्ति को आदर्श मानने वाले एवं उसका अनुकरण करने वाले लोग सीमित हैं। बल्कि जो अनुचित साधनों से ज्यों-त्यों कर धनी बन जाते हैं या सफलता प्राप्त कर लेते हैं, उनका अनुकरण करने वाले लोग अधिक हैं। इसका अर्थ है कि लोगों की रुचि विषय-भोगों के साधनों, सुविधाओं, सम्पदा, सत्ता आदि में अधिक है, उसकी शुचिता में नहीं। दूसरे शब्दों में कहें तो व्यक्ति श्रेय की अपेक्षा प्रेय को अधिक महत्त्व देता है। प्रायः वह श्रेय एवं प्रेय का भेद भी नहीं जानता। श्रेय जहाँ हितकर एवं कल्याणकारी होता है वहाँ प्रेय प्रिय तो लगता है, किन्तु हितकर नहीं होता। आज व्यक्ति प्रियता की ओर दौड़ रहा है, भले ही उसे कितना ही दुष्परिणाम भोगना पड़े। भ्रष्टाचार में उसे प्रियता प्रतीत होती है। इसीलिए वह उसके आकर्षण को छोड़ नहीं पाता।

3. लोक में भ्रष्टाचार का प्रमुख कारण लोभग्रस्त चित्तवृत्ति है, जो एक बार अनुचित साधनों से लाभ होने पर व्यक्ति को उसी अनुचित साधन पर चलने के लिए प्रेरित करती है।

4. धर्मक्षेत्र में भगवान् के कानून का उल्लंघन भ्रष्टाचार है तो लोक में संविधान के कानून का उल्लंघन भ्रष्टाचार है। व्यक्ति को इन दोनों प्रकार के भ्रष्टाचार से मुक्त होना चाहिए।

5. धन-सम्पदा की प्राप्ति नैतिक आचरण से भी सम्भव है। उससे जो व्यक्ति को जीवन में संतोष एवं प्रसन्नता का अनुभव होता है, वह अनैतिक

साधनों से प्राप्त धन-सम्पदा से कदापि नहीं होता। अर्थ की शुचिता परम शुचिता है। जो आजीविका के साधन को पवित्र नहीं रख पाता, उसका अन्न और मन भी पवित्र नहीं होता। इसलिए लोक में भी सदाचारी व्यक्ति अर्थ की शुचिता को महत्त्व देता है। श्रावक के 35 मार्गानुसारी गुणों में न्यायसम्पन्न विभव को प्रथम स्थान दिया गया है। अर्थात् जो न्याय-नीतिपूर्वक धनार्जन करता है वही श्रावक बनने का अधिकारी होता है।

6. प्राप्त वस्तु, योग्यता, सम्पदा, सत्ता, शक्ति आदि का दुरुपयोग करना भ्रष्टाचार है। संसार में जो भी प्राप्त हुआ है, उसका विवेकपूर्वक समुचित उपयोग स्व एवं पर दोनों के लिए हितकारी है। वहीं उसका व्यसनों में, मौज-शौक में, सट्टों में, व्यभिचार में अथवा इसी प्रकार के अन्य दूषित कार्यों में दुरुपयोग भ्रष्ट आचरण है।
7. आध्यात्मिक दृष्टि से कहें तो स्वभाव में आना सदाचार है एवं विभाव में जाना भ्रष्टाचार है। इसलिए साधक बाह्य विषयों के प्रति आकर्षित न होकर स्वयं के जीवन को परिष्कृत करने के लिए तत्पर रहता है।
8. नैतिक बल की उच्चता से ही भ्रष्टाचार पर नियन्त्रण किया जा सकता है और यह बल आध्यात्मिक दृष्टि से प्राप्त होता है। आध्यात्मिक दृष्टि वाला व्यक्ति अन्तरात्मा की शुद्धि का चिन्तन करता है। वह जड़ पदार्थों की तुलना में आत्मगुणों को अधिक महत्त्व देता है। सभी धर्मों में जो साधना का स्वरूप है वह आत्मशुद्धि को प्रधान मानता है, किन्तु जब व्यक्ति धर्म की आराधना भी भ्रष्टाचार को छिपाने एवं अनैतिक साधनों से अर्जित सम्पदा की सुरक्षा के लिए करता है तो धर्म की पवित्रता सुरक्षित नहीं रह पाती। यही नहीं देश में कई आध्यात्मिक संत बेशुमार धन-दौलत एकत्रित करने में रुचि रखते हैं तो उससे आध्यात्मिक क्षेत्र भी दूषित दिखाई देने लगता है। किन्तु वास्तव में जिसके भीतर की दृष्टि निर्मल हो जाती है वही अध्यात्म के क्षेत्र में आगे बढ़ पाता है। इसलिए दृष्टि जब तक निर्मल न हो तब तक आचरण की शुद्धता संदिग्ध रहती है। यदि कोई शुचितापूर्वक संग्रह करता है, भोगदृष्टि नहीं रखता तथा जरूरतमंदों एवं सुपात्रों के बीच उसका वितरण करता है तो वह उस संग्रह का सदुपयोग कहा जाएगा। आज देश में नैतिक बल को जागृत करने की

आवश्यकता है। यह चाहे शिक्षा के माध्यम से हो अथवा मीडिया के माध्यम से, किन्तु सर्वत्र नैतिक मूल्यों की स्थापना अपेक्षित है।

9. आज समाज में साधनों की शुचिता को न देखकर उपलब्धि के आधार पर दुराचारी को भी सम्मान दिया जाता है तथा शुचितापूर्वक जीवन-यापन करने वाले निर्धन व्यक्ति को हेय दृष्टि से देखा जाता है। समाज की इस सोच को परिवर्तित करने की आवश्यकता है।

10. कानून के द्वारा भ्रष्टाचार का उन्मूलन सम्भव नहीं है। हाँ, कुछ अंशों में नियन्त्रण अवश्य हो सकता है। लोकपाल बिल हो या अन्य कोई बिल, सर्वत्र भ्रष्टाचार को रोकने के लिए अधिकारी नियुक्त किया जाता है। उस अधिकारी की दृष्टि जब तक पूर्ण निर्मल न हो, शुचिता से युक्त न हो तब तक उसके द्वारा उठाए गए कदमों में बल नहीं आता है। इसलिए व्यक्ति की आन्तरिक दृष्टि को निर्मल एवं सशक्त बनाने की आवश्यकता है तथा समाज में ऐसी दृष्टि वाले व्यक्तियों को आदर एवं सम्मान प्रदान करने की आवश्यकता है।

जोधपुर में आयोजित यह संगोष्ठी भले ही एक धार्मिक मंच से हुई हो, किन्तु इसमें जो वैचारिक मंथन हुआ है वह अत्यंत व्यापक है। व्यक्ति, समाज, देश और विश्व में व्याप्त भ्रष्टाचार के मूल में मानव की दूषित चित्तवृत्ति प्रमुख कारण है। चित्तवृत्ति के दोषों का निराकरण करने हेतु श्रम, कर्त्तव्यनिष्ठा, परदुःखकातरता, भोग-संयम, लोभ-संयम, प्रामाणिकता आदि मूल्यों को वैचारिक स्तर पर प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता है। उन विज्ञापनों पर रोक लगाने की आवश्यकता है जो भोगेच्छा को उद्दीप्त करते हैं। महापुरुषों ने इच्छाओं, वासनाओं के नियन्त्रण की शिक्षा इसीलिए दी है कि वही आध्यात्मिक मार्ग है जो व्यक्ति को न्यून सुविधाओं में भी संतुष्ट एवं प्रसन्न रहना सिखाता है। इसके साथ ही व्यवस्थाओं में इस प्रकार के सुधार की भी आवश्यकता है कि किसी को अपना उचित कार्य कराने के लिए विवशता में भ्रष्टाचार का सहारा न लेना पड़े। इस तरह भीतरी एवं बाह्य दोनों व्यवस्थाओं में सुधार से इस दोष से मुक्त हुआ जा सकता है। आज समाज की दिशा मोड़ने एवं यह पाठ पढ़ाने की आवश्यकता है कि भ्रष्टाचार का दुष्परिणाम अवश्य भोगना पड़ता है। कभी वह फल बाह्य रूप में सबको दिखाई देता है तो कभी केवल परिणामभोक्ता को ही उसका अनुभव होता है।

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

प्र. सोइंदिय-निग्गहेणं भंते! जीवे किं जणयइ?

उ. सोइंदिय-निग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु सद्देसु राग-द्दोस-निग्गहं जणयइ। तप्पच्चइयं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

प्र. चक्खिंदिय-निग्गहेणं भंते! जीवे किं जणयइ?

उ. चक्खिंदिय-निग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु रूवेसु रागदोस-निग्गहं जणयइ। तप्पच्चइं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

प्र. घाणिंदिय-निग्गहेणं भंते! जीवे किं जणयइ?

उ. घाणिंदिय-निग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु गंधेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ। तप्पच्चइयं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

प्र. जिब्भिंदिय-निग्गहेणं भंते! जीवे किं जणयइ?

उ. जिब्भिंदिय-निग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु रसेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ। तप्पच्चइयं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

प्र. फासिंदिय-निग्गहेणं भंते! जीवे किं जणयइ?

उ. फासिंदिय-निग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु फासेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ। तप्पच्चइयं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

अर्थः-

प्र. भगवन्! श्रोत्रेन्द्रिय के निग्रह से, जीव को क्या प्राप्त होता है।

उ. श्रोत्रेन्द्रिय निग्रह से मनोज्ञ कर्णप्रिय और अनमोज्ञ कर्णकटु शब्दों पर रागद्वेष का निग्रह हो जाता है, (फिर वह) तन्निमित्तक कर्म नहीं बांधता और पहले बंधा हुआ हो तो उसकी निर्जरा कर देता है।

प्र. भगवन्! चक्षुइन्द्रिय के निग्रह से जीव को क्या प्राप्त होता है?

उ. चक्षुइन्द्रिय के निग्रह से मनोज्ञ और अमनोज्ञ रूपों पर होने वाले राग,द्वेष का निग्रह हो जाता है? फिर वह तन्निमित्तक कर्म नहीं बांधता और पहले बंधे हुए पूर्वसंचित कर्म की निर्जरा कर देता है।

प्र. भगवन्! घ्राणेन्द्रिय के निग्रह से जीव को क्या प्राप्त होता है?

उ. घ्राणेन्द्रिय निग्रह से मनोज्ञ और अमनोघ गन्धों पर रागद्वेष का निग्रह कर लेता है। फिर वह तन्निमित्तक कर्म नहीं बांधता और पहले बंधे हुए कर्म की निर्जरा कर लेता है।

प्र. भगवन्! जिह्वेन्द्रिय के निग्रह से जीव को क्या प्राप्त होता है?

उ. जिह्वेन्द्रिय के निग्रह से मनोज्ञ और अमनोज्ञ रसों पर रागद्वेष का निग्रह कर लेता है फिर वह तन्निमित्तक कर्म नहीं बांधता और पूर्वबद्ध कर्म की निर्जरा कर लेता है।

प्र. भगवन्! स्पर्शेन्द्रिय के निग्रह से जीव क्या प्राप्त करता है?

उ. मनोज्ञ और अमनोज्ञ स्पर्शों पर होने वाले राग-द्वेष का निग्रह करता है। फिर वह कर्म नहीं बांधता और पूर्वबद्ध कर्म का क्षय कर देता है।

-उत्तराध्ययन सूत्र, उनतीसवाँ अध्ययन : सम्यक्त्व पराक्रम, सूत्र-62-66

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

एकता

- मानव जितना ही गुण-ग्राहक और सत्य का आदर करने वाला होगा, उतना ही ऐक्य-निर्माण सरल एवं स्थायी हो सकेगा।
- जैन संघ में एकता का नारे लगाने वाले एवं बोलने वाले हैं, फिर भी एकता क्यों नहीं? लौकिक एकता भय, लोभ और स्वार्थ पर आश्रित होती है, परन्तु धर्म की एकता गुणानुराग या शासन प्रेम पर आधारित होती है। जब तक राग-द्वेष के कारण समाप्त नहीं किये जाते, बाहरी दिखावे से स्थिरता नहीं आती। हमारी एकता विचार-आचार के धरातल पर होती है। जैन समाज का इतिहास बताता है कि श्रावकों ने संघ की अखण्डता का कैसा रक्षण किया और इनके सहयोग से कैसे पलभर में झगड़े मिट गये। आज समाज मातृहृदय तो है, पितृ हृदय भक्तों की आवश्यकता है।
- आज का युग मिलजुल कर काम करने का है। सामाजिक हो या धार्मिक, हर कार्य मिली-जुली शक्ति से ही अधिक प्रभावशाली और सफल होता है। राष्ट्र भी एक-दूसरे की नीति, रीति और मतभेद की उपेक्षा कर पारस्परिक सहयोग में अपना और विश्व का हित मान रहे हैं, फिर भला धार्मिक सम्प्रदायें साधारण रीति, नीति और समाचारी के भेद से एक दूसरे से बिल्कुल दूर रहें, समानताओं का उपयोग नहीं कर पाएं तो धर्म शासन की शोभा एवं तेजस्विता कैसे बढ़ेगी?
- राष्ट्र के अधिकारी रागद्वेष युक्त होते हैं और धर्माधिकारी वीतरागता एवं समता के पथिक होते हैं, अतः उनके मन में छोटी-छोटी बातों से मनभेद होना शोभनीय नहीं होता। राष्ट्रों में व्यापार, संचार, औद्योगिक क्षेत्रादि में संधि होती है, वैसी धर्म-सम्प्रदायों में भी आंशिक सन्धि हो सकती है।
- कार्य की सफलता में ध्यान रखने योग्य एक आवश्यक बात यह है कि व्यर्थ नुकताचीनी नहीं की जाय। कोई भी उचित बात कहता है तो उसकी कद्र करो। संवाद भले कर लो, किन्तु विवाद नहीं करो। अपने और दूसरों के समय का मूल्य समझो और समाज-सेवा के लिये एक शक्ति से कुछ कार्य करके दिखाओ। ***-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार***

प्रवचन

दृष्टि की पवित्रता से आचरण की शुद्धता

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा 6 नवम्बर, 2011 को द्वितीय राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी पावटा, जोधपुर (राज.) में फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन जी मेहता, जोधपुर ने किया है। **-सम्पादक**

जैसा जाना वैसा जीवन जीने वाले सर्वोत्कृष्ट आचारधारी अरिहन्त भगवन्त अपने विचार और आचार की शुद्धि के लिए महाव्रत-समिति-गुप्ति की आराधना करने वाले संत-भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन।

तीर्थंकर भगवान महावीर की आदेय-अनमोल वाणी यथाख्यात-चारित्र के रूप में जानने, मानने और पालने का भेद मिटाती है। जैसा जाना है-माना है उसी तरह की आराधना करने वाले यथाख्यात चारित्र सम्पन्न साधक वीतरागी बनते हैं। इस वीतराग मार्ग का अनुसरण कराने वाली शास्त्र वाणी का स्वाध्याय आवश्यक है। आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज) के शब्दों में जो भी जीवन बनाने और सुधारने में सहायक हैं चाहे वह स्वाध्याय है, चाहे सत्संग है, चाहे ज्ञान गोष्ठी है, चाहे साहित्य-साधना है, सभी उपक्रम जीवन-निर्माण और समाज-सुधार के लिए आवश्यक हैं उनमें विद्वत् परिषद् व्यक्ति-समाज और राष्ट्र निर्माण में मस्तिष्क और आँख का काम करती है।

विचारों में जितनी पवित्रता होगी, आचार उतना ही श्रेष्ठ होगा। विचार की पवित्रता में आचार निर्मल होता ही है। जिसका आचरण किया जाता है, वह आचार है। आचार के दो रूप भाई शिखरजी सुराणा ने आपके समक्ष रखे हैं। भगवान की आज्ञा का पालन करना विशुद्ध आचार है। सामाजिक व्यवस्था को सामाजिक आचार के रूप में विद्वानों ने प्रस्तुत किया है। समाज को संत लाभान्वित करते हैं इसी तरह विद्वान् भी अपने ज्ञान से समाज को लाभान्वित करें इस दृष्टिकोण को लेकर पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल

जी महाराज के इन्दौर चातुर्मास में सन् 1979 में प्रथम बार विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। डॉ. नरेन्द्र भानावत, फकीरचन्दजी मेहता, कन्हैयालालजी लोढ़ा जैसे विद्वानों का चिन्तन बना कि सन्त समाज अपने पास आने वालों को लाभान्वित करता है- मार्गदर्शन देकर उनका जीवन-निर्माण करता है, पर विद्वान् लोग प्रचार के माध्यम से, साहित्य के माध्यम से, संगोष्ठियों के माध्यम से सामाजिक दृष्टिकोण को लेकर समाज में आचार की पवित्रता लाने में सहयोगी बन सकते हैं। यह क्रम विद्वत् समाज में अनेक वर्षों तक चला। पूज्य गुरुदेव की विद्यमानता में 1991 तक बराबर चलता रहा। 1991 के पश्चात् भी डॉ. नरेन्द्र भानावत की मौजूदगी में दो साल तक और चलता रहा, फिर व्यवधान आया। विद्वत् संगोष्ठी के विराम को हटाने के लिए फिर से प्रयास चालू हुए और अध्यात्म-चेतना वर्ष में गत वर्ष पाली चातुर्मास में फिर से विद्वत् परिषद् का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

पाली के पश्चात् जोधपुर में विद्वत् परिषद् का कार्यक्रम चल रहा है। संगोष्ठी में अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार विषय रखा गया है। विषय कहने में जितना सरल है, उतना ही पालने में कठिन है। समाज में आचार की स्थापना करना सरल नहीं है। आचार का पालन कठिन है, क्योंकि मर्यादा विरुद्ध जितने भी काम चल रहे हैं उनकी बुराई बताकर, हानि समझाकर समाज उससे कैसे दूर रहे, विकृति से समाज कैसे बचे, यह बहुत टेढ़ा काम है।

विद्वत् संगोष्ठी में आए विद्वान् विशद विवेचन कर रहे हैं। विद्वान् चिन्तन-मनन करके, विषय की बारीकियों में जाकर समाज को राह दिखायें, उसके लिए कार्यक्रम के अनुसार सत्रों का निर्धारण किया गया है। कल सत्र चले, आज भी सत्र चलेंगे। तत्त्वचिन्तक प्रमोदमुनि जी ने अपना दृष्टिकोण रखा है। मुझे तो इतना ही कहना है कि सम्पदा मिलना पुण्यवानी का द्योतक है। जिसकी जितनी पुण्यवानी है उसे उतनी-उतनी सम्पदा मिलती है। प्रभुत्व बढ़ाना, अनुकूल साधन मिलाना, बाहर की सामग्री जुटाना अनन्त-अनन्त पुण्यवानी से होता है। उत्तराध्ययन सूत्र के तीसरे अध्ययन में जिन चार स्कन्धों का उल्लेख मिलता है वे पुण्यवानी के द्योतन में कहे गये हैं:-

खेत्तं वत्थुं हिरण्णं च पसवो दास-पोरुसं।
चत्तारि काम-खंधाणि तत्थ से उववज्जए।।

-उत्तराध्ययन सूत्र-3/17

भगवन्त ने हिन्दी में इसका रूपान्तरण किया-

क्षेत्र वास्तु हिरण्य स्वर्ण, पशुदास अंगरक्षक होते ।
ये चार जहाँ हों काम स्कन्ध, उस कुल में वे पैदा होते।।

पुण्यशाली जीव वहीं जाकर उत्पन्न होता है जहाँ खेत हों, आवास योग्य स्थान हों, पशुधन हों, दास-दासी हों। पुण्य से साधन मिलते हैं, पुण्य से सामग्री मिलती है, पुण्य से प्रभुत्व प्राप्त होता है, शक्ति मिलती है। शारीरिक शक्ति, बौद्धिक शक्ति, मानसिक शक्ति जैसे शक्ति के कई-कई रूप हैं। शरीर का बल देखना हो तो चक्रवर्ती का देखें । आपने सुना होगा कि चक्रवर्ती के हाथ की सांकल पर चारों सेनाएँ लटक जायें फिर भी हाथ नीचे आना तो दूर, हिलता तक नहीं। वहीं चक्रवर्ती अपना हाथ खींच ले तो पकड़ी हुई चारों सेनाएँ लुढ़क जाती हैं। यह चक्रवर्ती का बल पुण्यशीलता से है। आचार्य की आठ सम्पदाएँ हैं, उनमें एक सम्पदा है संग्रह परिज्ञा। संग्रहपरिज्ञा में क्षेत्र का, सन्तों की संख्या का, अनुकूल स्थितियों का जो भी संग्रह है इस सम्पदा में शुमार है। संग्रह करना न पाप है, न भ्रष्टाचार। संग्रह पुण्यवानी से होता है। हमारी जितनी-जितनी पुण्यशीलता है उतने-उतने अनुकूल साधना मिलते हैं, मिलेंगे। सम्पदा शालिभद्र के पास थी वह भ्रष्टता से नहीं, पुण्यशीलता से थी।

आपका आज का विषय है भ्रष्टाचार। भ्रष्टाचार क्या है- इस पर विद्वान् अपना चिन्तन रख रहे हैं। **मेरी दृष्टि में मिली सम्पदा का दुरुपयोग भ्रष्टाचार है। इसी प्रकार प्राप्त योग्यता, सामर्थ्य एवं बल का दुरुपयोग भी भ्रष्टाचार है।** दुरुपयोग चाहे तन का है, मन का है, वचन का है। जिसके पास जो भी बल है उसका यदि दुरुपयोग हो रहा है तो भ्रष्टाचार है। तन का बल होता है, ऐसे ही धन का बल भी होता है, परिवार का भी बल होता है। सत्ता का भी बल कम नहीं है। **प्राप्त सम्पदा का, प्राप्त बल का जहाँ दुरुपयोग है वहाँ भ्रष्टाचार है।**

भ्रष्टता कितने प्रकार की होती है आप सुन चुके हैं। मैं उन बातों को नहीं दोहराते हुए केवल इतना कहना चाहूँगा कि हर आचार में भ्रष्टता हो सकती है। नियम, कायदे-कानून और सिद्धान्तों से आप परिचित हैं। जो भी नियम हैं, मर्यादाएँ हैं सिद्धान्त हैं उनका सम्यक् पालन हो। सम्यक् पालन स्वभाव है। **स्वभाव में आने के अतिरिक्त विभाव में जाना भ्रष्टाचार है। विभाव में जाने के जितने भी साधन हैं वे सब भ्रष्टाचार में शुमार हैं।**

हमारी आत्म–समाधि जहाँ भी समाप्त होती है वह सब भ्रष्ट आचरण में समाहित है।

आचार में भ्रष्टता कैसे आती है? आचार में भ्रष्टता आती है विचार की भ्रष्टता से। **विचारों में भ्रष्टता आयेगी तो आचरण भ्रष्ट होगा। इसके लिए दृष्टि की पवित्रता चाहिये। दृष्टि पवित्र नहीं तो विचार एवं आचार की निर्मलता नहीं आ सकती।** शास्त्र की भाषा में कहूँ– बाहर का हर–एक आचार और उसका पालन करके जीव नौग्रैवेयक तक चला जाय उसमें कोई आश्चर्य नहीं, पर जब तक विचारों की पवित्रता नहीं तब तक जीव भवी नहीं बनता। ऊपर से हर नियम का सम्यक् पालन करते हुए भी अगर दृष्टि में परिवर्तन नहीं, तो कहना होगा वह बाहर का आराधक है, भीतर का विराधक।

हमारे यहाँ दर्शन–ज्ञान–चारित्र को मुक्ति का मार्ग कहा है। **जब तक दृष्टि में पवित्रता–निर्मलता नहीं, आचार की शुद्धता नहीं आ सकती।** आचार की निर्मलता के लिए विचार की पवित्रता चाहिये। आपने मुहावरा सुन रखा है– दृष्टि बदल गई तो सृष्टि बदलते देर नहीं लगती।

दृष्टि बदलने के लिए बाहर के निमित्त की जरूरत नहीं। फिर कह रहा हूँ– शास्त्र वाणी, विद्वान् संत ही नहीं, केवलज्ञानी तक भी हमें रास्ता ही दिखा सकते हैं, तारने में वे भी समर्थ नहीं हैं। भगवान तारने वाले होते तो महावीर प्रभु सबसे पहले गौतम को तारते। गणधर गौतमस्वामी का ज्ञान, उनकी श्रद्धा–भक्ति और समर्पण क्या कम था? उनकी पुण्यशीलता थी, साधना थी, ज्ञान था, सब कुछ होते हुए भी भगवान महावीर स्वामी के रहते वे केवलज्ञानी नहीं बन सके। आप जानते हैं, आपने सुन रखा है कि भगवान महावीर के निर्वाण पश्चात् गौतम स्वामी को केवलज्ञान प्राप्त हुआ। मुक्ति के लिए विचारों की पवित्रता चाहिये तो आचरण की निर्मलता भी चाहिये।

आज कई कानून हैं। नित नये कानून बन रहे हैं। **चाहे जितने कानून बन जायं, लोकपाल का विधेयक भी बन जायं उससे क्या होगा? पहले से कई अधिकारी हैं, कई और अधिकारी बढ़ जायेंगे उससे भ्रष्टाचार मिट जायेगा, कहा नहीं जा सकता। भ्रष्टाचार मिटता है दृष्टि बदलने से भ्रष्टाचार मिटता है आचार की शुद्धि से।** आप गृहस्थों में, समाज में आम लोगों में ही नहीं, साधक वर्ग भी भ्रष्टाचार से पूर्ण मुक्त नहीं है। साधना करने वाले भी जब तक यथाख्यात चारित्र नहीं प्राप्त करते तब तक भ्रष्ट आचरण रह

सकता है।

हम (साधु) भ्रष्टाचार से मुक्त होने की राह पर चल रहे हैं। पूर्ण मुक्त हो गये हैं, ऐसा नहीं कहा जा सकता। आप श्रावक हैं तो आपको परिवार की, समाज की, राष्ट्र की सेवा में भागीदारी निभानी है। यहाँ यह ध्यान में रखना होगा कि हमारी दृष्टि में पवित्रता रहे, आचरण में निर्मलता रहे। दृष्टि की पवित्रता में छोटे-बड़े का भेद नहीं किया जा सकता। एक चक्रवर्ती की दृष्टि पवित्र हो सकती है तो एक भिखारी में भी दृष्टि की पवित्रता रह सकती है। बाहर का संग्रह पुण्यवानी से है तो आचरण की पवित्रता व्यक्ति की दृष्टि पर निर्भर है। हमारे देश की आचरण की पवित्रता जगत् विख्यात थी। एक समय ऐसा भी था जब भारत में जवाहरात की दुकानों तक पर ताले नहीं लगते थे। रास्ते में छोटी-मोटी चीज नहीं, रत्नों की पोटली है तो भी उसे मालिक तक पहुँचाया जाता था। वह भारत की आदर्श स्थिति थी। भारत उस समय जगत् गुरु के नाम से विख्यात था। भारत का नाम यहाँ के निवासियों के आचरण से था। आज क्या स्थिति है?

आज की स्थिति आप देख रहे हैं, अनुभव भी कर रहे हैं। आज सुख के लिए भ्रष्टता बढ़ती जा रही है। **अपने सुख के लिए दूसरों को दुःख देना भ्रष्टाचार का मूल है।** आप इस भ्रष्टाचार को मिटाना चाहें, हटाना चाहें, निर्मूल करना चाहें तो आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज) के प्रिय भजन की कड़ी याद करें-

अपने दुःख सब सहूँ,
किन्तु पर दुःख सहा न जाय।
दयामय ऐसी मति हो जाय।।

हमारी भावना में दूसरों का दुःख खटकने लगे तो फिर भ्रष्ट आचरण के बजाय श्रेष्ठ आचरण ही रहेगा। आपने देखा होगा- काले बादल सफेद हो जाते हैं। बादल समुद्र से पानी ग्रहण करते हैं तब तक काले दिखाई देते हैं। बरसने के बाद काले दिखने वाले बादल सफेद हो जाते हैं, साफ दिखाई देते हैं। यही बात है- हम दूसरों के दुःख दूर करके आगे बढ़ सकते हैं। यही अनुकम्पा है। यही सम्यक्त्व है। हम इस आचरण का पालन करें। आचार-धर्म का पालन करते-करते हम वीतरागता प्राप्त कर सकते हैं।

आपने विद्वत् संगोष्ठी में बहुत कुछ सुना है, बहुत कुछ सुनेंगे। आप

सुनकर ही न रहें, उसे आचरण में लाएँ। टन भर सुनें, मण भर ग्रहण करें, कण भर धारण करेंगे तो भी एक-एक बूँद धारण करते-करते बहुत कुछ धारण कर सकेंगे। जरूरत है एक-एक आचार का निर्मल पालन करते हुए हम-सब अपने आपको भ्रष्टाचार से मुक्त करके जीवन को पावन करने का संकल्प लेकर यहाँ से जाएँ। अपनी लोभवृत्ति-भोगवृत्ति मिटाकर, इच्छाओं और कामनाओं को हटाकर स्वभाव में आने की दृष्टि बनायेंगे तो विद्वत्संगोष्ठी का यह आयोजन सफल हो सकेगा।

हीरा गुरुवर बड़े महान्....!

श्री धर्मचन्द जैन-रजिस्ट्रार

(तर्ज- जपो-जपो नवकार......)

(आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 11 के पावटा, जोधपुर वर्षावास के विदाई-समारोह में प्रस्तुत भजन)

हीरा गुरुवर बड़े महान्, ज्ञानी-ध्यानी क्रियावान्।
शत-शत वन्दन हमारा है पूज्यवर को-2।।टेर।।

सूरज सम चमके तेजस्वी, चन्दा सम निर्मल हैं यशस्वी।
सागर सम गंभीर मनस्वी, अमृतसम माधुर्य-वचस्वी।
ऽऽऽ इनकी दृढ़ता बड़ी महान, त्यागी, मौनी संयमवान.....।।

जोधाणा नगरी में चौमासा ठाया, पुद्गल में नहीं सुख फरमाया।
आसक्ति मिटते ही आनन्द पाया, कषाय त्याग का महत्त्व बताया।
ऽऽऽ कामना मिटे तो बन जाये शान, मिल जाय सच्चा सुख निधान.....।।

सन्त मण्डल की महिमा है भारी, साध्वीप्रमुखा की कृपा है निराली।
आशीष पाया नर और नारी, खिल गई हमरे जीवन की क्यारी।
ऽऽऽ जीवन शुद्धि का आधार, धर्म उतारे भव से पार.....।।

छोटे-बड़े बच्चों का शिविर लगाया, महिला और पुरुषों को जगाया।
स्वाध्यायियों का शिविर सवाया, विद्वानों का मंच सजाया।
ऽऽऽ नैतिकता का किया विकास, संस्कारों का दिया प्रकाश.....।।

चौमासी का दिन यह आया, क्षमा मांगे सब मिल बाया भाया।
गांव-नगरों का भाग्य सवाया, सुखे-सुखे विचरो, यही मन भाया।
ऽऽऽ गुरुवर जीएँ हजारों साल, शासन दीप्ति करें विशाल.....।।

संगोष्ठी आलेख

अध्यात्म और भ्रष्टाचार*

प्रो. दयानन्द भार्गव

व्यक्ति भ्रष्टाचार में इसलिये लिप्त होता है कि भ्रष्टाचार से सुख मिलता है। भ्रष्टाचार के पकड़े जाने पर दु:ख मिलने की भी आशंका रहती है, किन्तु प्रथम तो व्यक्ति यह प्रयत्न करता है कि उसका भ्रष्टाचार पकड़ में ही नहीं आये और यदि पकड़ में आ भी जाये तो उसे मिलने वाले दण्ड का दु:ख भ्रष्टाचार से मिलने वाले सुख की अपेक्षा कम हो। यह तो उस भ्रष्टाचार की स्थिति है जो सुख के लिये किया जाता है। एक दूसरा भ्रष्टाचार लाचारी में भी किया जाता है। पेट भरने को रोटी ही न मिले तो व्यक्ति चोरी करने के लिए भी मजबूर हो जाता है। इस दूसरी प्रकार के भ्रष्टाचार के लिए लोगों के मन में प्राय: सहानुभूति की दृष्टि रहती है, किन्तु प्रथम प्रकार के भ्रष्टाचार के लिये आक्रोश का भाव रहता है। यह प्रथम प्रकार का भ्रष्टाचार तब भी पनपता है कि जब हमें अपना कोई काम निकलवाना होता है। वह काम कभी सही भी होता है तो कभी अनुचित भी होता है। हम पैसा देकर उस काम को निकलवाना चाहते हैं या उस काम को आसानी से करवाना चाहते हैं, जबकि बिना पैसा दिये भी वह काम भले ही हो तो जाये, किन्तु कठिनाई से या देर से होता है या फिर बिल्कुल होता ही नहीं है।

भ्रष्टाचार को रोकने के लिये मानव जाति ने अनेक उपाय किये जिनमें दो प्रमुख हैं। एक उपाय तो कानून का है जो भ्रष्टाचारी को दण्ड का भय दिखाकर भ्रष्टाचार को रोकना चाहता है। दूसरा उपाय धर्म के कर्म-सिद्धान्त का है जो परलोक बिगड़ जाने का या नरक में जाने का भय दिखाकर भ्रष्टाचार को रोकना चाहता है। यह भी ध्यातव्य है कि कानून की पकड़ में स्थूल भ्रष्टाचार ही आता है जिसे हम अपराध कहते हैं, किन्तु धर्म उस सूक्ष्म भ्रष्टाचार की भी चिन्ता करता है जो कानून की पकड़ में तो नहीं आता, किन्तु जिसे बुरा मानते हैं, उदाहरणत:- किसी स्त्री को कुदृष्टि से देखना, किसी का अहित चिन्तन करना। इस प्रकार के भ्रष्टाचार को 'पाप' कहा जाता है। प्राय: भ्रष्टाचार से पैसे

* जोधपुर में 5-6 नवम्बर, 2011 को आयोजित 'अध्यात्म, समाज एवं भ्रष्टाचार' विषयक संगोष्ठी हेतु प्रेषित निबन्ध।

सम्बन्धी बेईमानी का ही ग्रहण किया जाता है, मानसिक पापाचार या बदजबानी आदि का नहीं।

क़ानून और धर्म के नियमों के बावजूद भ्रष्टाचार में कमी आती दिखायी नहीं देती। भ्रष्टाचार बहुत जबरदस्त है और अवसर आने पर ईमानदार लोग भी फिसल जाते हैं, तो फिर उन लोगों का तो कहना ही क्या जो रिश्वतखोरी जैसी बुराई को 'सुविधा शुल्क' जैसा गरिमामय नाम देकर भ्रष्टाचार करते समय किसी प्रकार हिचक-झिझक अनुभव ही नहीं करते। वस्तुतः पैसा बहुत वफादार नौकर है। वह जिसके पास होता है, उसकी हर आज्ञा का बिना ही-हुज्जत के पालन करता है। यदि मैं पैसा देकर शराब खरीदता तो पैसा यह नहीं कहता कि शराब बुरी चीज है, अतः आप शराब न खरीदें। बल्कि वह तत्काल आपके लिये शराब खरीद देगा। ऐसा आज्ञाकारी नौकर कोई दूसरा नहीं है। यदि मैं पैसा देकर अपने ऊपर छिड़क कर आग लगाने के लिये भी पैट्रोल खरीदना चाहूँ तो पैसा मुझे ऐसा करने से बिल्कुल नहीं रोकेगा। और पैट्रोल खरीद कर तुरन्त हाजिर कर देगा। इसलिये पैसे का इतना आकर्षण है। फिर पैसे से रोटी, कपड़ा, मकान, दवाई तो उपलब्ध होती ही है, शिक्षा भी मिलती है। यहाँ तक कि पैसे से किसी का उपकार करके हम यश और पुण्य भी कमा सकते हैं। इसलिये जहाँ पैसा प्राप्त करने का प्रश्न आता है, वहाँ हम उचित-अनुचित का विचार किये बिना पैसा प्राप्त करना चाहते हैं। पैसे के बिना सारे गुण बेकार सिद्ध होते हैं- **दारिद्र्यदोषो गुणराशिनाशी**। दूसरी ओर पैसा हो तो मनुष्य में सारे गुण दिखाई देने लगते हैं-**सर्वेगुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते**। इस दशा में भ्रष्टाचार रोकने के लिये जहाँ तक कानूनी व्यवस्था का प्रश्न है, लोकपाल बिल जैसी व्यवस्थायें लाने की बात चल ही रही है। लोकपाल बिल का कोई विरोध नहीं कर रहा, किन्तु साथ ही सब यह भी कह रहे हैं कि इस बिल से भ्रष्टाचार का सर्वथा उन्मूलन नहीं होगा। कुछ अंशों में भ्रष्टाचार में कमी अवश्य आ सकती है।

दूसरी ओर पाप का भय दिन पर दिन शिथिल होता जा रहा है। नरक किसने देखा? फिर कर्म का फल जब मिलेगा तब मिलेगा। अभी तो गाड़ी आगे चलने दो इत्यादि विचारों के रहते धर्म भी भ्रष्टाचार को नहीं रोक पा रहा। दुर्योधन ने इस स्थिति को यह कह कर अभिव्यक्त किया था कि मैं जानता हूँ कि धर्म क्या है, फिर भी उसे कर नहीं पाता तथा जानता हूँ कि अधर्म क्या है, फिर

भी उससे निवृत्त नहीं हो पाता हूँ-

जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः, जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः।

विचारणीय बिन्दु यह है कि अध्यात्म भ्रष्टाचार को रोकने में क्या योगदान दे सकता है। अध्यात्म का सरल सा अर्थ है- अन्तरात्मा। हम बहिर्मुख होते हैं तो उसे जैन परम्परा बहिरात्मा कहती है, हम अन्तर्मुख होते हैं तो जैन परम्परा उसे अन्तरात्मा कहती है। बहिर्मुखता से बाह्य पदार्थों का ज्ञान होता है, अन्तर्मुखता से अन्तर्जगत् का परिचय प्राप्त होता है। बाह्य पदार्थों से मिलने वाला सुख ऐन्द्रियक है, अन्तरात्मा में रहने वाला आनन्द अतीन्द्रिय है। भ्रष्टाचार से बाह्य पदार्थों से मिलने वाला सुख उपलब्ध हो सकता है, अन्तरात्मा का आनन्द भ्रष्टाचार से नहीं मिलता, अपितु भ्रष्टाचार आन्तरिक आनन्द की प्राप्ति में बाधक है।

आन्तरिक आनन्द की प्राप्ति भ्रष्टाचार से विमुख करने का एक प्रबल साधन है। हमें समझना यह होगा कि आन्तरिक आनन्द पदार्थ-जन्य सुख की अपेक्षा कई दृष्टियों से श्रेष्ठ है।

प्रथम तो ऐन्द्रियक सुख पराधीन है। पराधीन सपनेहू सुख नाहीं। दूसरे ऐन्द्रियक सुख क्षणिक है, वह जो नष्ट होता है तो अपने पीछे गहरा दुःख छोड़ जाता है। तीसरे, पदार्थ जड़ हैं, अतः उनमें सुख वस्तुतः है नहीं, केवल प्रतीति में आता है। चौथे, ऐसे सुख को भोगने से इन्द्रियों का तेज क्षीण होता है और अन्त में इन्द्रियाँ सुख भोगने में असमर्थ हो जाती हैं- 'सर्वेन्द्रियाणां जरयन्ति तेजः।' तब हम अपने को असमर्थ पाकर अतीत की स्मृति में विषाद-युक्त हो जाते हैं। पाँचवें, पदार्थजन्य सुख की प्राप्ति में तो कष्ट है ही उसे बनाये रखने में भी कष्ट है और जब वह छिन जाता है तब भी कष्ट है। इसलिये पतञ्जलि ने योगसूत्र में कहा-

परिणाम-ताप-संस्कारदुःखैर्गुणवृत्तिविरोधाच्च दुःखमेव सर्वंविवेकिनः।

दूसरी ओर अध्यात्म अर्थात् आत्मा में जो आनन्द है वह स्वाधीन है- जब जरा गर्दन झुकायी देख लिया। वह स्वाभाविक है, अतः स्थायी है। वह चैतन्य है, अतः वास्तविक है। वह अनन्त है, अतः सदा तृप्ति देता है, कभी ऊब पैदा नहीं करता। वह इन्द्रियों के आधीन नहीं है, अतः उस पर शारीरिक निर्बलता का असर नहीं होता।

इस आध्यात्मिक आनन्द का वर्णन शास्त्रों में तो है, किन्तु यह हमारे

अनुभव में नहीं आया, जबकि सांसारिक सुख का अनुभव हमें सदा से होता रहा है। यही कारण है कि आत्मानन्द पर सांसारिक विषयों का सुख सदा हावी रहता है और अध्यात्म भ्रष्टाचार को नहीं रोक पाता, इस स्थिति से निपटने का उपाय यह है कि अध्यात्म के क्षेत्र में ज्ञात से अज्ञात की ओर चलें।

जैन धर्म की भाषा में हम शुभोपयोग से शुद्धोपयोग की ओर चलें। पाप करने में जो हमारा अन्तःकरण हमें धिक्कारता है, उसकी पीड़ा का अनुभव हम सबको है। कोई अच्छा काम करने पर जिस प्रसन्नता का अनुभव हमें होता है, उस प्रसन्नता का भी अनुभव सबको होता है। इस प्रसंग में हम अपनी अन्तरात्मा की आवाज सुनें-**सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः।** बोलचाल की भाषा में हम कहेंगे कि हम तमोगुण से रजोगुण की ओर तथा रजोगुण से सत्त्वगुण की ओर बढ़ें। जैनधर्म की भाषा हम कहेंगे कि हम अशुभलेश्या से शुभलेश्या की ओर चलें। फिर एक दिन शुभ से शुद्धोपयोग में भी जा सकेंगे। इस प्रकार हम क्रमशः अध्यात्म की ओर बढ़ें।

महात्मा गांधी ने एक अन्य महत्त्वपूर्ण बात की ओर हमारा ध्यान दिलाया। केवल साध्य ही शुद्ध नहीं होना चाहिये, साधन भी शुद्ध होना चाहिये। जो यह समझते हैं कि अशुद्ध साधनों से पैसा कमाकर वे उसे अच्छे कार्य में लगा देंगे, वे भ्रष्टाचार से मुक्त नहीं हो सकते। ऐसे भ्रम में अनेक लोग रहते हैं। अतः बहुत से अच्छे काम भी इस देश में हो रहे हैं, किन्तु भ्रष्टाचार जा नहीं रहा, क्योंकि साधन-शुद्धि पर हमारा ध्यान नहीं है। टैक्स की चोरी को तो हम चोरी मानते ही नहीं, बल्कि यह तर्क देते हैं कि टैक्स के सम्बन्ध में तो ईमानदारी बरतने पर कोई व्यापार चला ही नहीं सकता। इसी प्रकार देश-सेवा के लिये चुनाव लड़कर विधानसभा तथा लोकसभा में जाने के लिये उत्सुक राजनेता यह कहते हैं कि चुनाव-आयोग द्वारा निर्धारित खर्च करके तो कोई चुनाव जीत ही नहीं सकता। यह सब तर्क तो भ्रष्टाचार को मिटाने नहीं देंगे। अध्यात्म इस सम्बन्ध में हमें परीषह-जय तथा तपस्या का आदर्श देता है।- **विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।** निर्जरा तो तप से ही होती है- तपसा निर्जरा च। तप को हम सब कितना ही पिछड़ेपन का चिह्न मानें, किन्तु तप के बिना कोई बड़ा काम नहीं हो सकता। भ्रष्टाचार को मिटाने के लिये कुछ तो तप करना ही होगा।

- 1 J 7, जीवन सुरक्षा फ्लेट्स, एल.आई.सी.कॉलोनी, सेक्टर-2, विद्याधर नगर, जयपुर (राज.)

संगोष्ठी-आलेख

भ्रष्टाचार उन्मूलन में अध्यात्म की भूमिका*

डॉ. सागरमल जैन

भ्रष्टाचार उन्मूलन में अध्यात्म की भूमिका की चर्चा करने से पूर्व इन दो शब्दों का अर्थ बोध आवश्यक है- 1. भ्रष्टाचार और 2. अध्यात्म। भ्रष्टाचार शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है- भ्रष्ट+आचार। इसका सीधा अर्थ है- दूषित, पतित या अनैतिक/ अनुचित आचरण। जैन परम्परा में भ्रष्ट शब्द का प्रयोग दो शब्दों के साथ मिलता है- दर्शनभ्रष्ट और चारित्रभ्रष्ट।* भ्रष्टाचार का सीधा सम्बन्ध चारित्र- भ्रष्ट से है। किन्तु यह चारित्र की भ्रष्टता या आचारगत भ्रष्टता क्यों है? यदि इस प्रश्न का सीधा उत्तर खोजें तो इसका कारण दृष्टिगत या मान्यतागत भ्रष्टता ही है। विचारगत या दृष्टिगत दूषित या मिथ्या मान्यता ही आचारगत भ्रष्टता को जन्म देती है। भौतिकवादी या भोगवादी जीवनदृष्टि ही सभी प्रकार के दुराचार या भ्रष्टाचार का मूल कारण है। जब व्यक्ति भोगवादी जीवनदृष्टि अर्थात् ऐन्द्रियक विषयों का वैयक्तिक भोग ही जीवन का मूलभूत लक्ष्य है- यह मान लेता है, तभी भ्रष्टाचार का जन्म होता है। यदि भ्रष्टाचार का उन्मूलन करना है तो उसकी प्राथमिक आवश्यकता है जीवनदृष्टि का परिवर्तन। यही कारण है कि जैनाचार्यो ने कहा था कि यह सम्भव है कि चारित्रभ्रष्ट अपनी जीवनशैली में परिमार्जन कर मुक्त हो सकता है, किन्तु दर्शनभ्रष्ट अर्थात् अनुचित जीवनदृष्टि वाला व्यक्ति कभी भी मुक्त नहीं हो सकता है, जब तक कि उसकी जीवनदृष्टि निर्मल नहीं हो। आज भारत में जो भ्रष्टाचार प्रसरित है उसका मूल कारण तो पाश्चात्त्य भोगवादी जीवनदृष्टि से ग्रस्त होना ही है। इसी से भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए अध्यात्म की भूमिका स्पष्ट होती है।

---

*5-6 नवम्बर, 2011 को आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में आयोजित संगोष्ठी हेतु प्रेषित निबन्ध।

* 'भ्रष्ट' शब्द का प्रयोग ज्ञान के साथ भी आचारांगसूत्र में दृग्गोचर होता है, यथा- णाणभट्ठा दंसणलूसिणो।

आज हम सभी अपनी, अपने देश और दुनियाँ की दशा बदलने की बात जोर-शोर से करते हैं, किन्तु जब तक दिशा और दृष्टि नहीं बदलेगी- 'दशा' कैसे बदलेगी! यदि देश और दुनियाँ की दशा बदलना है तो सर्वप्रथम दृष्टि बदलनी होगी। जब तक जीवन में अध्यात्मवादी जीवन दृष्टि का विकास नहीं होगा- भ्रष्टाचार की जडें तो जमी रहेंगी। एक उर्दू शायर ने कहा है-

तालीम का शोर इतना, तहजीब का गुल इतना।
फिर भी तरक्की नहीं होती, 'नीयत' की खराबी है।।

जब तक 'नीयत' पाक और साफ नहीं होती है, तब तक भ्रष्टाचार से मुक्ति सम्भव नहीं है। हमारा प्रयत्न जड को सींचकर फल और पत्तों को नोंचने जैसा होगा जब तक भ्रष्टाचार की जडों का उन्मूलन नहीं होगा। भ्रष्टाचार उन्मूलन के बाह्य प्रयत्न सार्थक नहीं होगे। भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए 'नीयत' या जीवनदृष्टि में बदलाव जरूरी है। यही भ्रष्टाचार के उन्मूलन में अध्यात्मवाद की आवश्यकता अनुभूत होती है।

इस प्रकार यह एक सुनिश्चित सत्य है कि बिना आध्यात्मिक जीवन-दृष्टि के उद्भव एवं विकास के भ्रष्टाचार का उन्मूलन सम्भव नहीं है। भ्रष्टाचार छोटा हो या बडा उसके मूल में जीवन-दृष्टि की विद्रूपता अपरिहार्य रूप से बनी रहती है। जब तक जीवन में चाह है, अपेक्षा है, 'पर' पर स्वत्व के आरोपण की भावना है। 'मै और मेरा' जीवित है तब तक भ्रष्टाचार का पूर्णत: उन्मूलन सम्भव नहीं है। भोगवादी जीवनदृष्टि के अस्तित्व की चाह के और ममत्व की वृत्ति के उन्मूलन के बिना भ्रष्टाचार का उन्मूलन सम्भव नहीं है। जीवनदृष्टि का विकृत होना अपने आप में भ्रष्टाचार है। क्योंकि जैन सिद्धान्त में दृष्टि या दर्शन को भी 'आचार' कहा गया है। जिसकी दृष्टि- दूषित है, उसका आचार भी दूषित होता ही है। इसलिए कहा गया है- 'दंसणभट्ठा भट्ठा'। जो सिद्धान्त या जीवनदृष्टि जीयी नहीं जाती है, उसका कोई अर्थ नहीं होता है। जीवन में जानना और मानना आवश्यक है, किन्तु वे साधन रूप हैं और जिस साधन से साध्य की उपलब्धि न हो, वह साधन निरर्थक होता है। साधन की मूल्यवत्ता साध्य की उपलब्धि पर ही निर्भर रहती है। इसीलिए कहा जाता है- 'End Justifies the means'। जो सिद्धान्त जीया नहीं जाता

है, उसकी कोई मूल्यवत्ता नही रह जाती है। भारत में चार जीवनमूल्य/पुरुषार्थ माने गये हैं, उनमें अर्थ मात्र साधन पुरुषार्थ है और मोक्ष मात्र साध्य है। अर्थ काम का साधन है और 'काम' अर्थ का साध्य है। इसी प्रकार धर्म मोक्ष का साधन है और मोक्ष धर्म का साध्य हैं, वे साधन जो व्यक्ति को आध्यात्मिक शांति या आध्यात्मिक आनन्द प्रदान नहीं करते हैं, वे साधन निरर्थक या मूल्य विहीन ही होते हैं। अतः आध्यात्मिक जीवनदृष्टि भी जब तक जीयी नहीं जाती है, वह मूल्य विहीन होती है। अतः आध्यात्मिकता को जीवन के साथ जोडना होगा और अध्यात्म को जब जीया जाएगा तो आचरण में भ्रष्टता रहना सम्भव नहीं होगी। आज हमने अध्यात्म को उपदेश या प्रवचन की वस्तु बना लिया है। आज कथनी और करनी में, जो द्वैत है, वह जबतक पूर्णतः समाप्त नहीं होगा, भ्रष्टाचार समाप्त नहीं होगा। आज अध्यात्म और धर्म केवल उपदेश या प्रवचन में रह गया है, लोगों के हृदय में नहीं है, इसीलिये विश्व में भ्रष्टाचार जीवित है। आज भ्रष्टाचार किसी देश विशेष या परम्परा विशेष तक सीमित नहीं है, क्योंकि आज हम सबकी जीवनदृष्टि ही दूषित बनी हुई है। हम 'पर' को सुख का साधन समझते हैं अतः हमारी स्वतंत्रता छिन गयी है। हम इन्द्रियों और मन के 'परतन्त्र' हैं, और जहाँ परतन्त्रता है, वहाँ सुख नहीं है।

मूल प्रश्न यह है कि भ्रष्टाचार क्यों है और किस रूप में है? आज सामान्यतया भ्रष्टाचार से तात्पर्य आर्थिक भ्रष्टाचार से ही समझा जाता है, किन्तु भ्रष्टाचार केवल आर्थिक नहीं है, वह शोषण और गलत साधनों या अनैतिक उपायों से सम्पत्ति के अर्जन या परिग्रहण तक सीमित नहीं है। उसका सम्बन्ध व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन से है। यौन-उत्पीड़न या यौन शोषण भी भ्रष्टाचार है। न केवल इतना ही, घरेलू हिंसा और सामाजिक उत्पीडन भी भ्रष्टाचार है। साहित्यिक चोरी भी भ्रष्टाचार है। वस्तुतः समस्त प्रकार का अनैतिक आचार या नैतिक एवं मानवीय मूल्यों एवं मर्यादाओं का उल्लघंन भी भ्रष्टाचार के अन्तर्गत है। संक्षेप में कहें तो समस्त प्रकार की चारित्रिक स्खलनाएँ भ्रष्टाचार का ही एक रूप है। भ्रष्टाचार की जडें इतनी गहरी हैं कि आध्यात्मिक जीवनदृष्टि अथवा आध्यात्मिक-मूल्यों को अपनाये बिना उसका समग्रतया उन्मूलन सम्भव नहीं है। इसलिए भ्रष्टाचार के उन्मूलन हेतु

व्यक्ति को अध्यात्मवाद की शरण में जाना ही होगा। मानव जाति को दु:खों से मुक्त करना ही आध्यात्मिक जीवनदृष्टि का प्रमुख लक्ष्य रहा है। उसने इस तथ्य को गहराई से समझने का प्रयत्न किया है, कि दु:ख का मूल किसमें है। इसे स्पष्ट करते हुए उत्तराध्ययनसूत्र में कहा गया है कि समस्त भौतिक और मानसिक दु:खों का मूल व्यक्ति की भोगासक्ति में है। यद्यपि भौतिकवाद मनुष्य की कामनाओं की पूर्ति के द्वारा दु:खों के निवारण का प्रयत्न करता है किन्तु वह उस कारण का उच्छेद नहीं कर सकता, जिससे दु:ख का यह स्रोत प्रस्फुटित होता है। भौतिकवाद के पास मनुष्य की तृष्णा को समाप्त करने का कोई उपाय नहीं है। वह इच्छाओं की पूर्ति के द्वारा मानवीय आकांक्षाओं को परितृप्त करना चाहता है, किन्तु यह अग्नि में डाले गये घृत के समान उसे परिशान्त करने की अपेक्षा बढाता ही है। उत्तराध्ययनसूत्र में बहुत ही स्पष्टरूप से कहा गया है कि चाहे स्वर्ण और रजत के कैलास के समान असंख्य पर्वत भी खडे हो जायें, किन्तु वे मनुष्य की तृष्णा को पूरा करने में असमर्थ हैं। न केवल जैनधर्म, अपितु सभी आध्यात्मिक धर्मों ने एकमत से इस तथ्य को स्वीकार किया है कि समस्त दु:खों का मूल कारण आसक्ति, तृष्णा या ममत्व-बुद्धि है, किन्तु तृष्णा की समाप्ति का उपाय इच्छाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति नहीं है।

भौतिकवाद हमें सुख और सुविधा के साधन तो दे सकता है, किन्तु वह मनुष्य की आसक्ति या तृष्णा का निराकरण नहीं कर सकता। इस दिशा में उसका प्रयत्न तो टहनियों को काटकर जड को सींचने के समान है। जैन आगमों में स्पष्टरूप से कहा गया है कि तृष्णा आकाश के समान अनन्त है, उसकी पूर्ति सम्भव नहीं है क्योंकि उसकी पूर्ति के साधन चाहे कितने भी हों, वे सीमित है, अनन्त नहीं हैं। ससीम (सीमित) असीम की पूर्ति नहीं कर सकते हैं। यदि हम मानव जाति को स्वार्थ, हिंसा, शोषण, भ्रष्टाचार एवं तज्जनित दु:खों से मुक्त करना चाहते हैं, तो हमें भौतिकवादी दृष्टि का त्याग करके आध्यात्मिक जीवनदृष्टि का विकास करना होगा।

किन्तु यहाँ हमें यह समझ लेना होगा कि अध्यात्मवाद से हमारा तात्पर्य क्या है? अध्यात्म शब्द की व्युत्पति अधि+आत्म से है अर्थात् वह आत्मा की श्रेष्ठता या उच्चता का सूचक है। आचारांग में इसके लिये

'अज्झप्प' या 'अज्झत्थ' शब्द का प्रयोग हुआ है जो आन्तरिक पवित्रता या आन्तरिक विशुद्धि का सूचक है। जैन धर्म के अनुसार अध्यात्मवाद वह दृष्टि है, जो यह मानती है कि भौतिक सुख-सुविधाओं की उपलब्धि ही अन्तिम लक्ष्य नहीं है। दैहिक एवं आर्थिक मूल्यों के परे आत्मिक शान्ति, तनाव-मुक्त जीवन आदि उच्च मूल्य भी हैं और इन उच्च मूल्यों की उपलब्धि ही जीवन का अन्तिम लक्ष्य है। आध्यात्मिक विचारकों की दृष्टि में अध्यात्मवाद का अर्थ है पदार्थ को परममूल्य न मानकर आत्मा को परममूल्य मानना। भौतिकवादी जीवनदृष्टि मानवीय दु:ख और सुख का आधार वस्तु को मानकर चलती है, उसके अनुसार सुख और दु:ख वस्तुगत तथ्य हैं। भौतिकवादी व्यक्ति सुखों की लालसा में बाह्य वस्तुओं के पीछे दौड़ता है और उनकी उपलब्धि हेतु चोरी, शोषण एवं संग्रह जैसी सामाजिक बुराइयों को जन्म देता है। इसके विपरीत अध्यात्मवाद हमें यह सिखाता है कि सुख और दु:ख का केन्द्र वस्तु में न होकर आत्मा में है। भारतीय दर्शन के अनुसार सुख-दु:ख आत्मकृत हैं। अत: वास्तविक आनन्द की उपलब्धि पदार्थों से न होकर आत्मा से होती है। जैन ग्रन्थ उत्तराध्ययनसूत्र में स्पष्टरूप से कहा गया है कि आत्मा ही अपने सुख-दु:खों का कर्ता और भोक्ता है। वही अपना मित्र है और वही अपना शत्रु है। सुप्रतिष्ठित अर्थात् सद्गुणों में स्थित आत्मा मित्र है और दुष्प्रतिष्ठित अर्थात् दुर्गुणों में स्थित आत्मा शत्रु है।

आतुरप्रत्याख्यानकीर्णक नामक जैन ग्रन्थ में अध्यात्म का हार्द स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि ज्ञान और दर्शन से युक्त शाश्वत आत्मतत्त्व ही मेरा है, शेष सभी बाह्य पदार्थ संयोग से उपलब्ध हुए हैं। इसलिए वे मेरे अपने नहीं हैं। इन संयोगजन्य उपलब्धियों को अपना मान लेने या उन पर ममत्व रखने के कारण ही जीव दु:ख परम्परा को प्राप्त होता है, अत: उन सांयोगिक पदार्थों के प्रति ममत्व भाव का सर्वथा विसर्जन कर देना चाहिए। संक्षेप में अध्यात्मवाद के अनुसार देह आदि सभी आत्मेतर पदार्थों के प्रति ममत्व बुद्धि का त्याग ही भ्रष्टाचार के उन्मूलन का मूल उत्स है। वस्तुत: जहाँ अध्यात्मवाद पदार्थ के स्थान पर आत्मा को अपना साध्य मानता है, वहाँ भौतिकवाद में पदार्थ ही परम मूल्य बन जाता है। अध्यात्मवाद में आत्मा का ही परम मूल्य होता है। अध्यात्मवाद आत्मोपलब्धि के लिए पदार्थों के प्रति

ममत्व बुद्धि का त्याग आवश्यक मानता है। उसके अनुसार ममता के विर्सजन से ही समता (Equanimity) का सर्जन होता है। जैनधर्म में ममत्व के विर्सजन को ही आत्मोपलब्धि का एकमात्र उपाय इसलिए माना जाता है कि जब तक व्यक्ति में ममत्व बुद्धि या आसक्ति भाव रहता है तब तक व्यक्ति की दृष्टि 'स्व' में नहीं, अपितु 'पर' अर्थात् पदार्थ में केन्द्रित रहती है। वह पर में स्थित होता है। यह पदार्थ केन्द्रित दृष्टि ही या पर में स्थित होना ही भौतिकवाद का मूल आधार है। जैन दार्शनिकों के अनुसार 'पर' अर्थात् आत्मेतर वस्तुओं में अपनत्व का भाव और पदार्थ को परम मूल्य मानना, यही भौतिकवाद या मिथ्या दृष्टि का लक्षण है। आत्मवादी या अध्यात्मवादी व्यक्ति की दृष्टि पदार्थ-केन्द्रित न होकर आत्म-केन्द्रित होती है। वह आत्मा को ही परम मूल्य मानता है और अपने स्वस्वरूप या स्वभावदशा की उपलब्धि को ही अपनी साधना का लक्ष्य बनाता है। इसे ही जैन पारिभाषिक शब्दावली में सम्यक् दृष्टि कहा गया है। भौतिकवाद मिथ्यादृष्टि है और अध्यात्मवाद सम्यक् दृष्टि है। इसी अध्यात्मवादी जीवन दृष्टि से भ्रष्टाचार का उन्मूलन सम्भव है।

-निदेशक, प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर (म.प्र.)

आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ायें

श्री शशि कुमार बोहरा

आओ मिलकर आध्यात्मिक-ज्ञान बढ़ायें
धर्माचरण में हाथ बटायें।
किसी जीव को न सतायें
धर्म में रुचि जगाकर
युवाओं को धर्म का मार्ग बतायें।
जीवन का आधार, धर्म बनाकर
संसार में पुण्य कमायें।
धर्म की जय-जयकार लगाकर
एक सुखी संसार बनायें।
आओ मिलकर आध्यात्मिक-ज्ञान बढ़ायें
धर्माचरण में हाथ बटायें।

-608, महावीर नगर, टोंक रोड़, जयपुर-302018 (राज.)

संगोष्ठी-आलेख

भ्रष्टाचार का दर्शन*

डॉ. चन्द्रशेखर

दंसणभट्ठा भट्ठा, दंसणभट्ठस्स णत्थि णिव्वाणं।[1]

जो सम्यग्दर्शन से भ्रष्ट है वही भ्रष्ट है। दर्शन भ्रष्ट को निर्वाण प्राप्त नहीं होता। (कुन्दकुन्द)

अतः जो दृष्टि से भ्रष्ट है वह भ्रष्ट है। दृष्टि से कुटिल है, वह आचार से कुशील है। जिसकी दृष्टि भ्रष्ट है वह विवेकहीन है। वह आत्म-अनात्म का न तो भेद करता है, न ही करने की इच्छा करता है। फिर जैसी इच्छा करता है, वैसा ही योग भी करता है। वैसा ही बन्धन और उस बन्धन के स्वामित्व को भी ग्रहण करता है। फिर समस्त रागादि व्यापार को करता है। यही रीत है, ऐसा ही कर्म का स्वरूप है। किन्तु आगम कहता है जो इस भेद को नहीं जानता, जिसमें परमाणु मात्र भी राग है, वह सम्यग्दृष्टि नहीं हो सकता। प्रश्न उठता है, फिर क्या उपाय है? क्योंकि जब तक दृष्टि सम्यक् नहीं होगी तब तक वह भ्रष्ट रहेगी और उस व्यक्ति के योग आदि कर्म को भी भ्रष्ट मार्ग में लगाए रखेगी। यदि कोई दूसरा सम्यग्दृष्टि मिल भी जाए तो जिसकी दृष्टि कुटिल है वह उसे नहीं देखता। वह तो उसे ही ग्रहण करता है जिससे रागादि का ग्रहण हो, कर्म और परिणाम से होने वाले बन्धनों का स्वामित्व हो। वह दृष्टि से, मार्ग से और अन्य साध्य-साधन से कुटिल एवं कुशील होने का ही उपाय करता है। वह तो कहेगा जब तक परमाणु मात्र राग है, तब तक मैं कैसे सम्यग्दृष्टि और आचार पर आरूढ़ हो सकता हूँ। वह अपनी दृष्टि से अपने मन, कर्म, काय, क्रिया आदि से योग की वैसी व्याख्या करेगा। वह कहेगा कि कोई अतिचार हुआ है, किंवा आचार-विचार, भाव-क्रिया आदि, कुछ भी भ्रष्ट हुआ है तो उसका कोई कारण है। संभव है, ज्ञानावरणीय कर्म का उदय हो गया हो। संभव है किसी मोहनीय कर्म का उदय हो गया हो। वह अपनी दृष्टि को कुटिल बना लेता है, लेकिन वही व्यक्ति जब अन्यों की परीक्षा करता है तो दृष्टि को मोड़ता या मरोड़ता नहीं है। तब वह

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 5-6 नवम्बर 2011 को जोधपुर में आयोजित 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

व्याख्या नहीं करता, बल्कि अपने सुख को, अपने कषायों को पालने में लग जाता है। इसलिए वह स्वयं के साथ उसे भी भ्रष्ट करना चाहता है जो उससे कम भ्रष्ट है, तथा उसे रोकना चाहता है जो उससे अधिक भ्रष्ट है। पूरा जीवन इस द्वन्द्व में बीत जाता है। वह दूसरों से अधिक भ्रष्ट होने की कला को साधने के क्रम में लग जाता है। उसकी दृष्टि उन प्रतिमानों का निरूपण करती है जिससे व्यक्ति विवेक का नहीं मन का अनुसरण करे। कषायों को बढ़ाए और उनका सेवन करे। कषायों के निमित्तों की रक्षा करे। उनके स्वामित्व और भोग को ग्रहण करे।

फिर भी इस संसार में जो कुछ भी है वह अपने स्वरूप को अवश्य प्रकट करता है। वह यह प्रकट करता है कि वह बहुत थोड़ा है। वह पर्याप्त नहीं है और उसका भोग तो इतना सूक्ष्म है कि संभवतया मापन योग्य भी न हो। परन्तु जो सम्यग्दृष्टि नहीं है वह इसे पूर्ण करने में लग जाता है। इसे बढ़ाने में लग जाता है।

यह असम्यग्दृष्टि ही अनेक नामों से पुकारी जाती है, जैसे अविद्या, अज्ञान, अहंकार, अविवेक आदि। यही माया है, राग है। अतः श्रुति स्वयं कहती है- आचारः परमो धर्मः। सदाचार ही परम धर्म है। यही आगम कहता है-

''थोवम्मि सिक्खिदे जिणइ, बहुसुदं जो चरित्तसंपुण्णो।

जो पुण चरित्तहीणो, किं तस्स सुदेण बहुएण।।[2]

चारित्र सम्पन्न व्यक्ति थोड़ा सीखने पर भी बहुश्रुत व्यक्ति से बढ़कर है तथा जो चारित्रविहीन है उसका बहुत श्रुतज्ञान (कण्ठस्थ ज्ञान) भी निष्फल है।

स्पष्ट है कि जिसकी दृष्टि सम्यक् है वह अगर थोड़ा सा चारित्र ग्रहण करले तो भी पर्याप्त है, किन्तु जिसकी दृष्टि कुटिल है वह पहले सबकुछ पूरा जान लूँ, फिर चारित्र को ग्रहण करूँगा ऐसा विचार करता है। उसका तर्क होता है कि जब तक मैं श्रुति, आगम आदि को सम्पूर्ण नहीं जानता, तब तक चारित्र में उसे लाना उचित न होगा। जैसे वह संसार के विषयों को, वासनाओं को बढ़ाना, उनका भोग करना चाहता है, उसी प्रकार वह अपनी असम्यग्दृष्टि, अपनी अविद्या, अपने अविवेक, अपने राग-आदि की रक्षा करने के लिए यह तर्क करता है कि जब तक वह पूर्णतः बाह्य ज्ञान नहीं कर लेता और शास्त्र आदि को नहीं जान लेता तब तक उसका चारित्र में लाना संभव नहीं। वह तो यहाँ तक चाहता है कि जब तक कोई वीतराग भगवान को स्वयं ठीक परीक्षा करके नहीं जान लेता, तब तक आचार को उसे धारण नहीं करना चाहिये। इस प्रकार वह कषायों में रमण करता है और यही कहता है कि सब यही करते हैं, यही संसार

का नियम है, यही पालन योग्य है।

भारतीय दृष्टि से भ्रष्टाचार को पाषण्ड या पाखण्ड कहा गया है। विचित्र अनुभव तब होता है जब एक भ्रष्ट व्यक्ति यह कहता है कि, "जो भ्रष्ट है वह यह मानता है कि वह 'सत्यनिष्ठ' है, ईमानदार है, और जो थोड़े चारित्र को पालता है, वह पाखण्डी है। इसलिए भ्रष्ट आचरण करना और उसे स्वीकार करना पाखण्ड नहीं है। अतः यदि कोई अपने आचरण में 90 प्रतिशत अभ्रष्ट है और 10 प्रतिशत भ्रष्ट है तो वह पाखण्डी है और जो 10 प्रतिशत अभ्रष्ट है और 90 प्रतिशत भ्रष्ट है वह पाखण्डी नहीं है, केवल भ्रष्ट है। उसे भ्रष्ट होने का अधिकार है क्योंकि सभी भ्रष्ट हैं।"

यह स्पष्ट लक्षण है एक पाखण्डी की दृष्टि का। जब दूसरा थोड़ा भी चरित्र पालता है तो उसे वह पाखण्डी बतलाता है, और जो भ्रष्ट होकर उसके साथ रहता है उसके लिए कहता है कि वह केवल भ्रष्ट है, पर यह दोष नहीं है, क्योंकि सभी न्यूनाधिक भ्रष्ट ही होते हैं। अतः जो विवेकाधीन नहीं रहता या नहीं रहना चाहता है वह भ्रष्ट आचरण और समुदाय को स्वीकार कर लेता है।

जैन दृष्टि से कहें तो जो सम्यग्दृष्टि नहीं होना चाहता वह भ्रष्ट है, वह पाखण्डी है। इसलिए आगम कहता है कि चारित्र सम्पन्न का अल्पज्ञान भी बहुत है। अतः चारित्र सम्पन्न बनो और चारित्र सम्पन्न बनने की इच्छा करो, अनुमोदना करो, प्रयत्न करो। दृष्टि को सरल, निर्मल और कुटिलता रहित बनाओ। सम्पूर्ण आचार का सार तत्त्व नियत है। तात्त्विक दृष्टि कहें तो जो दृष्टि और जो आचार स्वाधीन बनाए वह अभ्रष्ट है और जो दृष्टि एवं आचार पराधीन बनाए वह भ्रष्ट है।

अभ्रष्ट होना स्वाधीन होना है। भ्रष्ट होना पराधनी होना है। जैन दृष्टि से कहें तो स्वभाव में लौटना अभ्रष्ट होना है और विभाव की ओर बढ़ना भ्रष्ट होना है।

अतः भ्रष्टाचार का प्रथम अंग दृष्टि से भ्रष्ट होना है। असम्यग्दृष्टि होना है, विवेकहीन होना है, अविद्या, माया, अज्ञान और अनात्म के अधीन होना है अर्थात् मिथ्यादृष्टि होना है।

अतः उपर्युक्त दृष्टि से एक मुनि या साधु के लिए निवृत्ति मार्ग है एवं श्रावक के लिए प्रवृत्तिपूर्वक निवृत्ति मार्ग है। साधु अथवा मुनि के लिए श्रमणाचार है और श्रावकों के लिए उपचार (श्रावकाचार) है। वही उपचार धर्म के द्वारा कहा जाता है। अविवेक, अश्रद्धा, मिथ्यात्व आदि का उपचार ही धर्म

है। जैसे हम रोग का निदान कर औषधि आदि को ग्रहण करते हैं उसी प्रकार एक बार जीवन के प्रति 'सम्यग्दृष्टि' और जीवन का परिभाष्य ज्ञात होने पर उपचार आरम्भ करना ही उपाय है। इसी हेतु से यहाँ श्रावकों के लिए धर्म को उत्कृष्ट मंगल कहा गया है। उत्कृष्ट मंगल अर्थात् अहिंसा, संयम और तप।

जैन दर्शन के अनुसार दृष्टि के सम्यग्दृष्टि होने का सरल उपचार या उपाय धर्म ही है। उसका सेवन करने से आचार का ग्रहण होता है और आचार का ग्रहण होने से धीरे-धीरे दृष्टि स्वयं शुद्ध होने लगती है। अतः कारण-कार्य और साध्य-साधन के साथ क्रिया के लिए धर्म का होना आवश्यक है। अतः मिथ्यादृष्टि के बाद भ्रष्टाचार का दूसरा मुख्य स्वरूप "कर्म में भ्रष्टाचार और क्रिया में भ्रष्टाचार" के रूप में प्रकट होता है तथा उसका उपचार है कर्म और क्रिया में धर्म को ग्रहण करना और अधर्म का त्याग करना। ठीक वैसे ही जैसे रोग के उपचार में औषधि एवं पथ्य-अपथ्य का विचार किया जाता है। जब हम धर्म के स्वरूप को देखते हैं तो उसे सर्वत्र एक समान पाते हैं। चाहे कोई भी विषय लिया जाय, धर्म सभी जगह एक सा है। अतः चाहे कर्म हो चाहे क्रिया, धर्म एक सा है। चाहे श्रमण हो चाहे श्रावक, धर्म दोनों के लिए एक ही है। अतः जो उत्कृष्ट मंगल है अहिंसा, संयम और तप, उसके उत्तम लक्षणों को धर्म कहा गया है। इनका पालन करने से कर्ममूलक एवं क्रियामूलक मिथ्यादृष्टि और मिथ्याचार अथवा भ्रष्टाचार अथवा पाखण्ड का निदान एवं उपचार होता है। इसलिए धर्म केवल मुनि या श्रमण के लिए नहीं है, अपितु वह श्रावक के लिए भी है। मुनि के लिए वह उत्तम सेवन है तो श्रावक के लिए उत्तम औषधि है।

जैन धर्म में आचार और ज्ञान दोनों ही दृष्टियों से समता, सम्यक्त्व अथवा वीतरागता का विचार है। जहाँ समता है वहाँ मिथ्यात्व नहीं रह सकता, भ्रष्टाचार नहीं रह सकता। इसलिए 'समता' की दृष्टि से भी यह धर्म विशेष रूप से सेवनीय है। जैसे औषधि को ग्रहण करते समय वैद्य आदि के द्वारा जो निदान आदि ग्रहण किया जाता है वैसा ही निदान मानव जीवन के लिए धर्म को माना गया है। अतः जब तक सम्यक् दर्शन ठीक से न हो तब तक धर्म का सेवन करना ही उचित है चाहे कोई उसे ठीक से जानता हो या नहीं।

यहाँ हम केवल श्रावकों की दृष्टि से धर्म के विषय में विचार करें तो पाते हैं कि एक श्रावक के लिए यही उचित है कि वह श्रद्धा और क्षमतापूर्वक नित्य इन लक्षणों से युक्त कर्म और क्रिया में धर्म का सेवन करे।

जैन धर्म के अनुसार धर्म के दश प्रकार हैं- 1. खंती, 2. मुत्ती, 3. अज्जवे, 4. मद्दवे, 5. लाघवे, 6. संजमे, 7. सच्चे, 8. तवे, 9. चियाए, 10. बंभचेरवासे।[3] ये दस उत्तम धर्म हैं-

1. **क्षमा**- आभ्यन्तर अहिंसा और चित्त की निर्मलता।
2. **मार्दव**- अहंकार, गर्व, दर्प, मान आदि से हीन होना।
3. **आर्जव**- कुटिलता का त्याग।
4. **सत्य**- ज्ञान एवं कर्म में एकरूपता।
5. **शौच**- शुचिता एवं समस्त मलों का त्याग।
6. **संयम**- इन्द्रिय जय, प्रवृत्ति रूप दण्ड का त्याग।
7. **तप**- ध्यान, स्वाध्याय, इच्छाजय आदि।
8. **त्याग**- भोग एवं कषायों से स्वाधीनता, निर्वेद-वैराग्य।
9. **आकिंचन्य**- समता-निर्द्वन्द्वता-निर्लोभता, अपरिग्रह।
10. **ब्रह्मचर्य**- देहासक्ति विषयों का चिन्तन, भोग आदि का त्याग।

भ्रष्टाचार की दृष्टि से विचार करें तो जो कुटिलता-मिथ्यात्व-असमत्व-पाखण्ड से पूर्ण दृष्टि है वह धर्म के विरुद्ध लक्षणों को ग्रहण करती है और बाहर से धर्म के अनुकूल अलंकारों को धारण करती है। वह मन के पीछे चलती है और जो अभ्रष्ट है वह मन के आगे चलता है। अतः जो मन के पीछे ले जाने वाली मति है वह भ्रष्ट है। उससे दर्शन-ज्ञान-चारित्र तीनों से भटकाव होना, भोग और पुद्गल देहासक्ति के पीछे चलना, इसी को जीवन का सार जानना भ्रष्टाचार में जीना और भ्रष्टाचार में रमना है। क्योंकि पुद्गल के प्रति आकर्षण से देहासक्ति, देहासक्ति से भोग और भोग से भोगसंग्रह होता है। अतः व्यक्ति स्वाध्याय का त्याग कर देता है, निग्रह को त्याग देता है, परिणामतः संयम छूटता है, फिर शुचिता और फिर ज्ञान और कर्म दोनों में सत्य छूटता है और फिर पूर्णतया चित्त की निर्मलता नष्ट हो जाती है।

जब सत्य का त्याग होता है तो बुद्धि की कुटिलता से आर्जव का त्याग हो जाता है। फिर अंहकार, दर्प, गर्व, अभिमान आदि का ग्रहण होने से मार्दव का त्याग और फिर हिंसा, चित्त का प्रसादन, पुद्गल के संग्रह -भोग-रक्षा आदि के लिए क्षमा, अहिंसा, अपरिग्रह का त्याग हो जाता है।

सम्यग्दृष्टि एवं मिथ्यादृष्टि के आधार पर भ्रष्टाचार के स्वरूप को

निम्नलिखित बिन्दुओं या पदों में भी अंकित किया जा सकता है, एक दृष्टि से ये इस प्रकार हैं-

सम्यक् दृष्टि (अभ्रष्ट)	मिथ्यादृष्टि (भ्रष्ट)
कर्म-क्रिया में अभ्रष्ट	कर्म-क्रिया में भ्रष्ट
विवेक-वैराग्य-अभ्यासयुक्त	अविवेक-राग-प्रमादयुक्त
जीवन में शौच- सार्वजनीनता	जीवन में अशौच-गोपनीयता
प्रमाणाधीनता	व्यक्तिनिष्ठा-स्वार्थनिष्ठा
समता-समत्व-सरलता	असमता-असमत्व-कुटिलता
स्थान दृष्टि	पुद्गल सुख का भोग
संस्थान दृष्टि	देहासक्ति
न्याय-तर्क-विवेक	अन्याय-दुराग्रह-अविवेक
भाव-द्रव्य-दृष्टि	भाव द्रव्य-कुदृष्टि
कर्म-क्रिया में धर्म	कर्म-क्रिया में अधर्म

सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार पर विचार करें तो सारिणी इस प्रकार बनेगी-

कर्म एवं क्रिया में सम्यक् दृष्टि	कर्म एवं क्रिया में मिथ्यादृष्टि
स्वाधीनता	पराधीनता
सार्वजनीनता	गोपनीयता
प्रमाणाधीनता	स्वार्थ-अधीनता
न्याय-तर्क-विवेक	अन्याय-अविवेक-कुटिलता

पुनः विचार करने पर कर्म एवं क्रिया मूलक भ्रष्टाचार के चार-चार पाये पाए जाते हैं, क्योंकि वे कषाय स्वरूप ही हैं अतः चार प्रकार से कर्म में कषाय का सेवन सावधानी पूर्वक या असावधानीपूर्वक तथा उसी प्रकार क्रियाओं में चार कषायों का स्पर्श इस प्रकार मूल रूप से भ्रष्टाचार का सेवन किया जाता है। सार्वजनिक जीवन में जहाँ क्रिया का प्रमाण होता है वहाँ भ्रष्टाचार के निदान का एक ही उपाय है और वह है- सार्वजनीनता और प्रमाणाधीनता। अतः आवश्यक है कि व्यक्ति अपने दोषों को सार्वजनिक करे और दोष न करने के लिये समर्पित रहे।

इसलिए जैनधर्म में जो अनुपम निदान है वह आवश्यक सूत्र है, उसके

छह अंग है-

''सामायिक-जिनस्तव-वन्दना-
प्रतिक्रमण-कायोत्सर्ग-प्रत्याख्यान''

जो प्रतिक्रमण नहीं करता वह अतिक्रमण करता है और सार्वजनीनता एवं प्रमाणाधीनता को स्वीकार नहीं करता। वह भाव और द्रव्य में कर्म और क्रिया में अनुचित विकल्पों को चुनता है। आचार के असम्यक् विकल्पों को चुनता है। वह मन और विषय वासना का अनुगामी होता है और परिणामतः मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र का पोषण करता है, पाखण्ड को ओढ़ता है और स्वार्थ को परिभाष्य और परिभाषित करता है और इसके निवारण का उपाय है- विवेक-वैराग्य-अभ्यासपूर्वक जिनशासन को ग्रहण करना और धीरे-धीरे अपने चित्त को और जीवन को निर्मल एवं अहिंसक बना लेना।

जिस प्रकार सभी ऐसा करते हैं इसलिए मैं भी ऐसा ही करता हूँ, या मुझे भी ऐसा ही करना पड़ता है यह कुटिल या पाखण्ड दृष्टि है। जब वही व्यक्ति अपने आचरण और संकल्प में इस दृष्टि के विपरीत जीता है तब वह कहता है कि सभी गरीब हैं, लेकिन मैं अमीर बनूँ, सभी रुग्ण हैं मैं निरोग बनूँ, सभी दुःखी हैं मैं सुखी बनूँ आदि प्रकार से विचार करता है। तब वह यह नहीं कहता कि सब दरिद्र है, इसलिए मुझे भी दरिद्र बनना चाहिए। सभी दुःखी हैं इसलिए मुझे भी दुःखी होना चाहिये। तब वह यह तर्क नहीं देता। किन्तु जब और जहाँ वह भ्रष्ट होता है वहाँ पर वह यही कहता है कि वह सभी के साथ है। सभी भ्रष्ट हैं अतः भ्रष्टाचार नहीं छोड़ता है। यह दृष्टि ही भ्रष्टाचार न छोड़ने के मूल में है। सत्य तो यह है कि जैसे वह दरिद्रता, दुःख आदि के त्याग में स्वतन्त्र रहना चाहता है वैसे ही वह सब जगह स्वाधीन हो और दूसरों को भी स्वाधीन बनने में सहयोग करे। न पराधीन (कषायों के और अन्यों के) बने और न ही पराधीन बनने और बनाने में सहयोग करे।

संक्षेप में कहे तो सार्वजनीनता और प्रमाणाधीनता, स्वाधीनता और न्यायनिष्ठा यही सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार के निरोध के उपाय हैं।

संदर्भः-

1. समणसुत्तं, गाथा-223

2. समणसुत्तं, गाथा-267

3. समवायांग सूत्र, समवाय-10 / स्थानांगसूत्र, स्थान 10

-दर्शन शास्त्र विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

English-Section

Religious Harmony and Fellowship of Faiths: A Jaina Perspective (2)

Prof. Sagarmal Jain

(Continued from the last issue.....)

Co-operation as Essential Nature of Living Beings

For Jainas co-operation and co-existence are the essential nature of living beings. Darwin's dictum-'struggle for existence' and the Indian saying-Jīvojīvasya bhojanaṁ, that is 'life thrives on life' are not acceptable to them.

They maintain that it is not the struggle but the mutual co-operation is the law of life. Umāsvāti (4th century A.D.) in his work Tattvārthasūtra clearly maintains that mutual co-operation is nature of living beings (parasparopagraho Jīvānāṁ)[8]. Living beings originate, develop and exist with the co-operation of other living beings. So is the case with the human society also, its existence also depends on mutual co-operation, sacrifice of one's own interest in the interest of other fellow beings and regard for other's life, ideology, faith and necessities. If we think that other's services are essential for our existence and living, then we should also co-operate to others living.

If we consider taking the help of others in our living as our right, then on the same ground it is our honest duty to help others in their living. The principle of equality of all beings means that every one has a right to live just as myself and therefore one should not have any right to take other's life.

Thus for Jainas the directive principle of living is not 'living on other's' or 'living by killing', but 'living with others' or 'living for others'. They proclaim that co-operation and co-existence are the essential nature of living beings. If it is so, then we must accept that religious tolerance and fellowship of faiths are such principles to be followed at the bottom of our hearts.

One world-Religion : A Myth

Though in order to eradicate the conflicts and stop violence in the name of religion from the world some may give a

slogan of one world religion but it is neither feasible nor practicable. So far as the diversities in thoughts and habits, in cultural background and intellectual levels of the human beings are in existence, the varieties in religious ideologies and practices are essential. Jaina pontiff Haribhadra rightly maintains that the diversity in the teachings of the sages is due to diversity in the levels of their disciples or the diversity in the standpoints adopted by the sages themselves or the diversities in place and time i.e. ethinic circumstances, in which they preached or it is only apparent diversity. Just as a physician prescribes different medicines according to the condition of patients, his illness and the climatic conditions, so is the case with the diversity in religious preachings also[9]. Therefore, unity, as well as diversity both are equally essential for the fellowship of faiths and we should not undermine any one of them. Just as the beauty of a garden consists in the variety of flowers, fruits and plants, in the same way the beauty of the garden of religions depends on the variety of thoughts, ideals and modes of worship.

Equal Regard to all Religions

According to Jainas equal regard to different faiths and religions should be the base of religious harmony and fellowship of faiths. Jaina Ācārya Siddhasensa Divākara remarks 'just as emerald and other jewels of rare quality and of excellent kind do not acquire the designation of necklace of jewels and find their position on the chest of human beings so is the case with different religions and faiths. Whatever excellent qualities and virtues they are possess unless they catenated in the common thread of fellowship and have equal regard for others, they cannot find their due place in human hearts and can be changed for spreading hostility and hatred in mankind[10]

Therefore, one thing we must bear in our mind that if we consider other religions or faiths as inferior to ours or false, real harmony will not be possible. We have to give equal regard to all the faiths and religions. Every religion or mode of worship has its origination in a particular social and cultural background and has its utility and truth value accordingly. As the different parts of body have their own position and utility in their organic whole and

work for its common good, so is the case with different religions. Their common goal is to resolve the tensions and conflicts and make life on earth peaceful. For this common goal each and every one has to proceed in his own way according to his own position. Every faith, if working for that particular common goal has equal right to exist and work, and should be given equal regard.

According to Jainācārya Siddhasena Divākara (5th century A.D.) the divergent view points/faiths may be charged as false only when they negate the truth value of others and claim themselves exclusively true. But if they accept the truth value of others also, they attain reghteousness. He further says, 'Every view-point or faith in its own sphere is right, but if all of them arrogate to themselves the whole truth and disregard the views of their rivals, they do not attain right-view, for all the viewpoints are right in their own respective spheres. Similarly if they encroach upon the province of other view points and try to refute them, they are wrong[11]. For Jainas rightness of particular faith or viewpoint depends on the acceptance of rightness of other. Siddhasena further maintains that one who advocates the view of synoptic character of truth never discriminates the different faith as right or wrong and thus pays all of them equal regard[12]. Today, when fundamentalism is posing a serious threat to communal harmony and equilibrium, unity of world religions is not only essential but the only way out to protect the human race.

Jainas do believe in the unity of world religions but unity according to them does not imply omnivorous unity in which all lose their entity and identity. They believe in that type of unity where in all the alien faiths will conjoin each other to form an organic whole without losing their own independent existence and given equal regard. In other words they believe in a harmonious existence and work for a common goal i.e. the welfare of mankind. The only way to remove the religious conflicts and violence from the earth is to develop a tolerant out look and to establish harmony among various religions.

Now we shall discuss the causes of intolerance and devices suggested for the development of a tolerant out look and religious harmony by the Jainas. I have discussed these points in

one of the my papers,'The Philosophical Foundation of Religious Tolerance in Jainism. 'Here, I am dealing those points accordingly.

True Meaning of Religion

So for as the leading causes responsible for the growth of fundamentalism and intolerant outlook are concerned, in my humble opinion, the lack of the true knowledge and understanding of the real nature and purpose of religion is prime. By religion generally we mean to have some uncritical beliefs in supernatural powers and performance of certain rituals as prescribed in our religious texts, but it is not the true and whole purpose of religion. Haribhadra in his work 'Sambodha Prakaraṇa' (1/1) clearly remarks that the people talk about the path i.e. religion but they do not know that what is the path or religion in its true sense. In the famous Jaina text, Kārtikeyānuprekśā (478), dharma (religion) is defined as the real nature of the things. If it is so, then question arises what is the real nature of human being? In a Jaina text known as Bhagavatī Sūtra (1/9), it is clearly mentioned that the nature and ultimate end of the soul is equanimity. Lord Mahāvīra has given two definitions of religion. In Ācārāṅga Sūtra (1/8/4) he says 'worthy people preach that the religion is mental equanimity' Equanimity is considered as the core or essence of religion, because it is the real nature or essence of all the living beings, including human beings also. Equanimity is the state in which consciousness is completely free from constant flickering, excitements and emotional disorders and mind becomes pacific. It is the core of religion. Haribhadra says whether a person is a Śvetāmbara or a Digambara or a Bauddha or belongs to any other religion, whosoever attains equanimity of mind, will attain the liberation (Sambodha Prakaraṇa, 1/2).

Thus, the attainment as equanimity or relaxation from tensions is the essence of religions. Secondly, when we talk of social or behavioural aspect of religion, it is nothing but the observance of non-violence. In Ācāraṇga, (1/4/1) Lord Mahāvīra propounds, 'The worthy man of the past, present and the future will say thus, speak thus, declare thus, explain thus, all breathing, existing, living and sentient creatures should not be slain, nor treated with violence, nor abused, nor tormented' This is the pure,

eternal and unchangeable law or the tenet or religion.

Ācārya Haribhadra maintains that performance of rituals is only the external form of religion. In its real sense religion means the eradication of passions and lust for material enjoyments as well as the realization of one's own real nature. Thus, for Jainas the true nature and purpose of religion is to attain equanimity and peace in individual as well as in social life. Whatsoever disturbs equanimity and social peace and spreads hostility and violence is not a true form of religion, instead it is Śaitana in the cloak of religion. But now-a-days, the essence of religion has been shoved into the background and dogmatism, uncritical faith and performance of certain rituals have got precedence. Thus, we have forgotten the end or essence of religion and stuck to the means only. For us it has become more crucial point that while performing prayer, our face should be in the east or in the north, but we have forgotten the purpose of prayer itself. The religion aims at having control over our passions, but unfortunately we are nourishing our passions in the name of religion. Actually, we are fighting for the decoration of the corpse of religion and not caring for its soul. If we want to maintain religious harmony and ensure peace on the earth, we must always remain aware of the end and essence of the religion, instead of external practices and rituals.

The English word religion is derived from the root 'religio' which means 'to unite'. On the basis of its etymological meaning we can say that whatsoever, divides the mankind, instead of uniting it, cannot be a true form of religion. We must be aware of the fact that a religion in its true sense never supports violence, intolerance and fanatical outlook. A true form of religion is one which establishes harmony instead of hostility, affection and kindness instead of hatred.

(Continue in next issue)

References:-

8. Tattvārthasūtra, 5.21.
9. Yogadṛṣtisamuccaya, Haribhadra, L.D. Institute of Indology, Ahmadabad, 1970, 133.
10. Sanmtitarka, Siddhasena Divakara, edited by Pt. Sukhlalji Sanghavi, Jaina Shvetambara Education Board, Bombay, 1939, 38.
11. Ibid. 1.28
12. Ibid. 1.28

संगोष्ठी-आलेख

भ्रष्टाचार पर सामाजिक नियन्त्रण*

श्री के.एस. गलुण्डिया (सेवानिवृत्त आई.ए.एस.)

किसी आर्थिक अथवा अन्य प्रलोभन के बदले कार्य करना और नियम विरुद्ध लाभ या हानि पहुँचाना भ्रष्टाचार कहा जा सकता है। इसके पहले कि भ्रष्टाचार के विभिन्न पहलुओं एवं उसके उन्मूलन अथवा नियन्त्रण पर विचार करें, यह जानना और समझना उचित होगा कि भ्रष्टाचार के मानदण्ड पर हमारा देश किस स्तर पर है और इसकी जड़ें कहाँ तक फैली हुई हैं।

ट्रान्सपेरेन्सी इंटरनेशनल (Transparency International) द्वारा 2011 में किये गये सर्वेक्षण के अनुसार भ्रष्टाचार के मानदण्ड पर 178 देशों में भारत 87 वें स्थान पर है। भ्रष्टाचार से अर्जित कालाधन जो विदेशी बैंकों में जमा है, उसकी राशि रुपये 28 लाख करोड़ बताई जाती है जैसा कि संसद में बताया गया है। इसके अलावा देश में भी काले धन की समानान्तर अर्थव्यवस्था चल रही है जो किसी से छुपी हुई नहीं है। चुनावों में, शादी ब्याह में, समारोहों में बड़े-बड़े निर्माण-कार्यों एवं उद्योग में इस काले धन का खुलकर उपयोग हो रहा है। आयकर विभाग एवं सी.बी.आई जहाँ भी हाथ डालती है काफी मात्रा में काला धन उजागर होता है। यह मात्र सागर में एक बूंद (Tip of the Iceberg) के बराबर है। पार्क में घूमते-घूमते एक सज्जन ने दूसरे से पूछा- आजकल प्रतिदिन करप्शन के बारे में बहुत कुछ सुनने को मिलता है, जहाँ जाओ वहीं इसकी चर्चा होती रहती है-आखिर यह है क्या? उनके साथी ने कहा-''अरे भाई यह करप्शन तो अपनी हिन्दी शब्दावली का ही शब्द है इसका मतलब बिलकुल सीधा है यानी कर-प्रसन्न को ही करप्शन कहते हैं। आपको कोई भी कार्य करवाना हो, आप अगले को प्रसन्न करो, कार्य हो जाएगा। यह मजाक के रूप में कहा गया हो, लेकिन इसकी सत्यता का निषेध नहीं किया जा सकता।

*आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 5-6 नवम्बर 2011 को जोधपुर में आयोजित 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

भ्रष्टाचार के विभिन्न स्वरूप

भ्रष्टाचार के विभिन्न स्वरूप हैं जैसे राजकीय कार्यालयों एवं राजनेताओं द्वारा भ्रष्ट आचरण, व्यावसायिक भ्रष्टाचार, अनैतिक आचरण तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में व्यवसायीकरण एवं शास्त्रविरुद्ध आचरण। लेकिन आम जनता राजकीय कार्यालयों एवं राजनेताओं के भ्रष्टाचार से सबसे अधिक व्यथित एवं पीड़ित है।

बाढ़ ही खेत को खा रही है

राजकीय भ्रष्टाचार को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है- प्रथम राजनेताओं द्वारा बड़े-बड़े व्यावसायिक घरानों के साथ सांठगांठ करके लाइसेंस,परमिट व अन्य राजकीय ठेके अथवा बड़ी खरीद का आवंटन करना। इस श्रेणी में 2जी स्पेक्ट्रम, कामनवेल्थ गेम्स, कर्नाटक या अन्य स्थानों पर माइनिंग लीजेज का आवंटन एवं रक्षा सामग्री की खरीद आदि को लिया जा सकता है,जहाँ हजारों करोड़ की हेराफेरी होती है। दूसरी श्रेणी में वे कार्यकलाप आते हैं जिनसे आम जनता रोजमर्रा के सम्पर्क में आती है जैसे- राशन कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, पासपोर्ट, जाति-प्रमाणपत्र आदि। पुलिस विभाग, बिजली, पानी विभाग, सेल्स टैक्स अथवा उद्योग विभाग, किसी का नाम लीजिये जनता का कोई कार्य बिना लिये-दिये नहीं होता है। इन सब कार्यों को सुगम बनाने के लिए दलाल लोग हर कार्यालय के बाहर मिल जायेंगे।

देशभर में केन्द्र सरकार के 40 लाख कर्मचारी हैं एवं लगभग तीन करोड़ कर्मचारी राज्य सरकार के लिए काम कर रहे हैं। अन्ना हजारे और सिविल सोसाइटी द्वारा जो आन्दोलन शुरु किया गया और जिससे देश के समस्त बुद्धिजीवी एवं करोड़ों लोग जुड़ते चले गये वह इन कर्मचारियों के कार्य कलापों व नेताओं पर नियन्त्रण एवं निगाह रखने के लिए जन लोकपाल व लोकायुक्त की नियुक्ति के लिए था। स्वतंत्र एवं स्वायत्त लोकपाल तथा लोकायुक्त के द्वारा कर्मचारियों व नेताओं की विशाल फौज के आचरण पर नियन्त्रण रखा जाएगा, ऐसी उम्मीद व आशा आम आदमी कर रहा है। इस संबंध में प्रभावी कानून शीघ्र बन पायेगा या नहीं, यह तो भविष्य ही बतायेगा। पहले चार बार लोकपाल बिल संसद में प्रस्तुत हो चुका है। लेकिन राजनैतिक इच्छाशक्ति नहीं होने के कारण पारित नहीं हो पाया। स्थिति यह है कि बाढ़ ही खेत को खा रही है, खेत सूख रहा है और बाढ़ हरीभरी हो रही है।

व्यक्ति एवं समाज– मनुष्य सामाजिक प्राणी है। मानव के विकास की यात्रा पर नज़र डालें तो पता चलता है कि आज जो भी विकास हुआ है और जो व्यवस्थाएँ हैं उसके पीछे समाज की संगठित शक्ति रही है।

समाज एवं मानव विभिन्न चरणों तथा विकास के विभिन्न स्तरों को पार करके आज आधुनिक स्तर पर पहुँचा है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब-जब समाज में रुग्ण मानसिकता महामारी के रूप में फैली, तब-तब तीर्थंकरों, आध्यात्मिक गुरुओं एवं उस समय के समाज ने आवाज उठाई एवं रुग्णता को समाप्त कर सदाचारपूर्वक नैतिकता का आचरण स्थापित करने में अहम् भूमिका निभाई है। भगवान महावीर, गौतम बुद्ध, क्राइस्ट, मोहम्मद साहब, महात्मा गांधी, बाल गंगाधर तिलक, राजाराम मोहनराय और अन्ना हजारे इसके प्रमाण हैं। भ्रष्टाचार का उपचार हमारी शिक्षा प्रणाली, नैतिक मूल्यों और अध्यात्म में ही ढूँढना पड़ेगा।

भ्रष्टाचार की जड़– भ्रष्टाचार की जड़ मन की लालसा एवं लोभ में निहित है जो मानसिक रुग्णता का रूप ले चुकी है। यह लोभ की प्रवृत्ति इस हद तक बढ़ गई है कि इसने महामारी का रूप धारण कर लिया है। इस भौतिकवाद के युग में न केवल नैतिक मूल्यों का ही अवमूल्यन हुआ है, बल्कि आज शासन तंत्र में भी भ्रष्टाचार दीमक की तरह फैल गया है और इसने पूरी व्यवस्था को खोखला कर दिया है। सतही उपायों अथवा मात्र कानून बना देने से अथवा जन लोकपाल व लोकायुक्त की नियुक्ति से इसका उन्मूलन सम्भव नहीं है। कानूनी नियन्त्रण के साथ-साथ सामाजिक-नियन्त्रण एवं परिवर्तन भी आवश्यक है।

आज की शिक्षा प्रणाली– आज बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के लिए माता-पिता उन्हें अंग्रेजी स्कूलों में अथवा पब्लिक स्कूलों में भिजवाते हैं। स्कूली शिक्षा के बाद उच्च शिक्षा हेतु मेडीकल, इंजीनियरिंग अथवा सी.ए., एम.बी.ए. आदि की शिक्षा के लिए लाखों रुपया खर्च करके देश-विदेश की अच्छी-अच्छी संस्थाओं में पढ़ाया जाता है। इन संस्थाओं में उन्हें अच्छी तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा तो मिलती है, लेकिन अच्छे नागरिक बनने एवं नैतिक मूल्यों की शिक्षा नहीं मिल पाती है। मनुष्य की उत्कृष्टता तथा समाज में उसका सम्मान, वह कितना कमाता है, उसके पास सुख-सुविधा के

कितने साधन हैं एवं कितना बैंक बैलेन्स है, इससे आँका जाता है। यह प्रवृत्ति लोभ और लालसा को जन्म देती है और वह येन-केन प्रकारेण पैसे को ही अपना सर्वस्व मान लेता है। हमें शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। प्रारम्भ से ही नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षा पर बल देना होगा, ताकि आगे चल कर युवा अच्छे नागरिक बन सकें।

शासन प्रणाली में परिवर्तन– आज शासन की बागडोर ऐसे लोगों के हाथ में आ गई है जिनके पास बाहुबल एवं धनबल है। चुनाव प्रणाली इस प्रकार की है कि एक बार चुने जाने पर उसे पाँच साल तक नहीं हटाया जा सकता। हमें इसमें परिवर्तन करना होगा। चुनाव प्रणाली में भ्रष्ट नेताओं को पुनः जनता में बुलाने (recall) का प्रावधान डालना होगा। इसके साथ ही यदि कोई भी उम्मीदवार जनता को मंजूर नहीं हो तो निरस्त (reject) का प्रावधान भी डालना होगा। महत्त्वपूर्ण विषयों पर यदि आवश्यक हो तो जनमत का प्रावधान भी आवश्यक है। चुनावों में आवश्यक परिवर्तन व चुनावी खर्च पर प्रभावी नियन्त्रण एवं चुनाव लड़ने के लिए राजकीय आर्थिक सहयोग आवश्यक है, ताकि सही लोग संसद व विधानसभा में हमारे भाग्य विधाता बन सकें।

अन्ना हजारे एवं सिविल सोसाइटी का आन्दोलन– आधुनिक समय से पूर्व के समाज की व्यवस्था ऐसी थी जिसमें भ्रष्टाचार को हीन दृष्टि से देखा जाता था और भ्रष्ट व्यक्तियों को कठोर से कठोर सजा दी जाती थी। चाहे ग्राम पंचायतें हों अथवा जातिगत पंचायत हो, या राजा महाराजाओं का शासन हो, भ्रष्ट आचरण पर पूर्ण अंकुश एवं नियंत्रण रहता था। भारत की आजादी के पूर्व व आजादी के बाद 1950 तथा 1960 के दशक तक हमारे नेता व अधिकारी प्रायः ईमानदार एवं साफ छवि वाले थे। जैसे-जैसे सत्ता का विकेन्द्रीकरण हुआ एवं समृद्धि आई, भ्रष्टाचार बेलगाम बढ़ता गया। इसके मुख्य कारण आधुनिक संस्कृति, शिक्षा का व्यवसायीकरण तथा मानवीय मूल्यों का अवमूल्यन है। आज भ्रष्टाचार इस हद तक बढ़ चुका है कि इतिहास में इस युग को यदि घोटालों का युग (Scam Age) के नाम से जाना जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

सामाजिक नियन्त्रण के विभिन्न पहलू–

1. कानून और नियमों की पालना– समाज का यह दायित्व है कि जो भी नियम अथवा कानून भ्रष्टाचार को रोकने के लिए बनाये जाते हैं उनकी सही

ढंग से क्रियान्विति हो रही है अथवा नहीं। अन्ना हजारे एवं सिविल सोसाइटी द्वारा जो आन्दोलन चलाया जा रहा है वह देश में एक नई क्रांति का संकेत है। जागरूक समाज ही अपने अधिकारों की सुरक्षा कर सकता है। संसार में बड़ी-बड़ी क्रांतियाँ चाहे वह फ्रेंच रिवोलुशन हो या अमेरिकन रिवोलुशन हो या फिर भारत की आजादी का आन्दोलन हो, समाज के प्रबुद्ध व बुद्धि जीवियों द्वारा ही प्रारम्भ किये गये थे। यह सच ही कहा है कि भ्रष्टाचार के विरुद्ध जन-आन्दोलन आजादी की दूसरी लड़ाई है। समाज को सजग प्रहरी बनकर यह सुनिश्चित करना पड़ेगा कि घूस लेने और घूस देने वाले पर समुचित कार्यवाही होती है। हमें विसल ब्लोअरस (Whistle Blowers) अर्थात् सूचनादाता को भी समुचित सुरक्षा प्रदान करनी होगी।

2. भ्रष्टाचारियों का सामाजिक बहिष्कार- आज की सामाजिक व्यवस्था ऐसी है जिसमें धन कुबेरों और सत्ताधरियों का ही सम्मान होता है। जो लोग करोड़ों रुपया शादी-ब्याह पर खर्च करते हैं, उन पर समाज का नियन्त्रण नहीं है। जो लोग ज्यादा दिखावा करते हैं, भारी भरकम दहेज देते हैं, करोड़ों रुपया बड़े-बड़े होटलों में भोज व अन्य व्यवस्थाओं पर खर्च करते हैं उन्हें समाज में प्रतिष्ठित तथा सम्मानीय माना जाता है। इससे प्रतिस्पर्धा बढ़ती है और साथ ही लोभ को भी बढ़ावा मिलता है। जहाँ कालेधन का खुले आम नंगा प्रदर्शन होता है, ऐसे लोगों का एवं समारोहों का बहिष्कार होना चाहिये। समाज को एक आचरण संहिता बनाना चाहिये।

3. भ्रष्टाचारियों का सार्वजनिक अभिनन्दन, सम्मान एवं समर्थन बंद हो- जो व्यक्ति भ्रष्ट गतिविधियों में लिप्त पाये जाएं उनका सार्वजनिक अभिनन्दन, सम्मान व समर्थन बंद होना चाहिये। इसमें जो रिश्वत लेते हैं या देते हैं, दोनों ही वर्ग के व्यक्ति सम्मलित होने चाहिये। हर समाज को, अपने सदस्यों को यह शपथ/ संकल्प दिलवाना चाहिये कि वे न तो रिश्वत लेंगे न रिश्वत देंगे और न ही किसी प्रकार व्यवसाय या अन्य क्षेत्र में भ्रष्ट साधनों का उपयोग करेंगे। थोड़ा कठिन है, लेकिन समाज में संकल्प शक्ति की आवश्यकता है।

कठिन है रास्ता, लेकिन सिर पर तेरा हाथ है,
मंजिल है दूर पर इरादा साफ है,
चलता जा, खुद-ब-खुद दूरियाँ कम होती जाएंगी,

और एक दिन मंजिल सिमट के तेरे पैरों तले आ जाएगी।

पहला कदम उठाने की देर है, फिर अपने आप रास्ता साफ होता जाएगा।

राष्ट्रिय चरित्र-निर्माण एवं आध्यात्मिक मार्गदर्शन- हम अपने आपको धर्म निरपेक्ष राष्ट्र मानते हैं, इसका यह मतलब कतई नहीं है कि हम नैतिक मूल्यों और मानवीय मूल्यों को भूल जाएं। संसार के सारे धर्म भ्रष्ट-आचरण एवं कषायों से दूर रहने तथा जीवन में सरलता, निर्मलता, शुचिता एवं भाई-चारे का संदेश देते हैं। हमारे धर्म गुरु भी इस संबंध में उचित मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं। आवश्यकता है कि युवा पीढ़ी को जो आधुनिकता की आँधी में भौतिकता की और भटक गई है एवं नैतिक मूल्यों को भूलती जा रही हैं उन्हें इससे जोड़ा जाए और नये समाज के निर्माण का नेतृत्व उनको दिया जाए।

संस्कार निर्माण- प्रारम्भ से ही बच्चों में संस्कार निर्माण की आवश्यकता है। अच्छे संस्कार बच्चे केवल परिवार में ही नहीं, शिक्षण संस्थाओं में भी प्राप्त करते हैं। यह सर्व विदित है कि स्कूल में बच्चे की शिक्षिका या शिक्षक यदि बच्चे को 15 अगस्त या 26 जनवरी को या अन्य अवसर पर कुछ लाने को या करने को कहते हैं तो बच्चे उसका अक्षरक्षः पालन करते हैं। बच्चे एक बार अपने माँ बाप की बात नहीं मानेंगे, लेकिन टीचर ने कुछ कहा है तो अवश्य पालन करेंगे।

इस व्यावसायिक युग में विज्ञापन, टी. वी. सीरियल एवं चलचित्रों में जो दिखाया जा रहा है उसका बच्चों के खान-पान, रहन-सहन एवं सोच पर बहुत गहरा असर पड़ रहा है। अतः कुछ कठोर नियम बना कर अश्लीलता, अपराध व गलत संदेश देने वाले कार्यक्रमों एवं विज्ञापनों पर प्रतिबंध लगना चाहिये। विशेषतः ऐसे कार्यक्रम जो मानसिक रुग्णता को जन्म देते हैं, प्रतिबंधित होने आवश्यक हैं।

भ्रष्टाचार रूपी महामारी का एक ही निदान है। पूरा समाज इसके विरुद्ध आवाज उठाये तथा हर व्यक्ति इसे समाप्त करने में अपना प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से सहयोग प्रदान करे। अंधकार कितना ही घना और डरावना हो, प्रकाश की एक किरण उसे मिटा देती है। भ्रष्टाचार का अंधेरा भी नैतिकता व अध्यात्म के प्रकाश की किरण पाते ही मिट जाएगा। आवश्यकता है जागरूक समाज द्वारा कदम उठाने की। अच्छाई के सामने बुराई एवं उजाले के सामने भ्रष्टाचार का अंधकार टिक नहीं सकता, यह शाश्वत सत्य है।

-53, लेन नं. 2, गोपालबाड़ी, जयपुर-302001 (राज.)

संगोष्ठी आलेख

नैतिकतापूर्ण जीविकोपार्जन*

श्री पी. शिखरमल सुराणा

1. कानून दो प्रकार के हैं - एक भगवान का बनाया हुआ कानून, जो हमारे आगमों में मिलता है। जैसे श्रावक के बारह व्रत, उनके अतिचार, पन्द्रह कर्मादान आदि। दूसरा कानून है जो हमारे ही द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि मिलकर समाज को व्यवस्थित ढंग से चलाने के लिए बनाते हैं। यदि किसी नागरिक को ऐसे किसी कानून से शिकायत है तो वह उच्च या उच्चतम न्यायालय में उस कानून को भारतीय संविधान के तहत थोड़ा-बहुत या पूर्णतया रद्द भी करवा सकता है। लेकिन तब तक वह कानून माननीय है। यह हुआ इंसान का कानून। दोनों प्रकार के कानूनों में से किसी का भी उल्लंघन भ्रष्टाचार है।
2. दोनों प्रकार के कानूनों में से किसी का भी उल्लंघन नहीं करते हुए जो भी अर्जित किया जाता है, वह नैतिकतापूर्ण कमाई है। पर प्रश्न यह है कि वह कैसे हो ? नीतिपूर्ण जीविकोपार्जन करने वाले कुछ जाने-पहचाने लोगों से कुछ सीखने-समझने की कोशिश करते हैं।
3. आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. 25 वर्ष की उम्र में दीक्षा लेने से पूर्व सरकारी नौकरी करते थे। उनका जीविकोपार्जन नैतिकतापूर्ण था। सुफल हमारे सामने है। श्री प्रमोदमुनिजी के सांसारिक पिता श्री सूरजमल मेहता अलवर में चार्टर्ड एकाउंटेंट थे। उनका जीवन सादा, नैतिक और प्रामाणिक था। घर में धार्मिक-आध्यात्मिक संस्कार थे। सुफल हमारे सामने है।
4. जे.एल.एन.यू. के कुलपति रहे पद्मविभूषण वैज्ञानिक डॉ. दौलतसिंह कोठारी ने सारी जिन्दगी नैतिकतापूर्ण जीविकोपार्जन किया। उनकी आवश्यकताएँ सीमित थीं। जब उन्हें जरूरत नहीं थी तो जे.एल.एन.यू.

*** आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 5-6 नवम्बर 2011 को जोधपुर में आयोजित 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।**

से सिर्फ एक रुपया तनख्वाह लेते थे। कल श्री प्रमोदमुनिजी ने उनका दो बार जिक्र किया था।

5. पद्मभूषण श्री देवेन्द्रराज मेहता, जब सेबी के अध्यक्ष थे, तब करोड़ों रुपये आसानी से बना सकते थे। लेकिन उन्होंने वैसा सोचा भी नहीं। पूर्ण नीतिसम्मत अर्जन किया। उनके द्वारा संस्थापित भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति आज भारत में ही नहीं, पूरे विश्व में हमारा सिर ऊँचा उठाती है। उनके भतीजे श्री शैलेन्द्र मेहता को सुना, आनन्द आया। वे भी नीति-मार्ग पर चल रहे हैं।

6. सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के पूर्व अध्यक्ष उच्च न्यायालय के न्यायाधीश स्व. इन्द्रनाथ मोदी और हमारे बीच मौजूद न्यायाधिपति श्री जसराज चौपड़ा नैतिकतापूर्ण जीविकोपार्जन के उदाहरण हैं। उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश रहे श्री राजेश बालिया कल पधारे थे। वे चाहते तो करोड़ों रुपये आराम से बना सकते थे। लेकिन वैसा नहीं किया और नैतिकतापूर्ण जीविकोपार्जन किया।

7. 18 सितम्बर 2011 को जोधपुर में आयोजित गुणी-अभिनन्दन समारोह में सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधिपति श्री आर. एम. लोढ़ा मुख्य अतिथि थे। उनके तन-मन की स्वस्थता और सरलता देखने लायक थी। उनके पिता, आचार्य श्री हस्ती के अनन्य भक्त श्री श्री कृष्णमल लोढ़ा भी उच्च न्यायालय के न्यायाधीश थे। कोई भी उच्च न्यायालय का न्यायाधीश यदि तिलमात्र भी भ्रष्टाचार में लिप्त हो तो उनका बेटा उच्चतम न्यायालय का न्यायाधीश नहीं बन सकता। यह नैतिकतापूर्ण जीविका का फल है।

8. सर्वोच्च न्यायालय में अभी चार जैन न्यायाधीश हैं। 2जी घोटाले का मामला देखने वालों में भी एक जैन न्यायाधीश है। चारों न्यायाधीश सत्यनिष्ठ, न्याय-नीति-निष्ठ हैं। चारों की धाक है, प्रतिष्ठा है। यह नैतिकता का प्रभाव है।

9. कम से कम पाप करके नैतिकतापूर्ण जीविकोपार्जन में अध्यापकों का नम्बर पहले आता है।

10. जोधपुर के एक प्रतिष्ठित परिवार को मैं निकटता से जानता हूँ। श्री

जबरमल कोठारी छोटी-सी सरकारी नौकरी करते थे। पाँच पुत्र और दो पुत्रियों सहित कुल नौ सदस्य। तनख्वाह बहुत कम पड़ती थी। लेकिन शुद्ध नैतिकतापूर्ण जीविकोपार्जन। मैंने अपनी आंखों से देखा है कि उनकी धर्मपत्नी घर का सारा काम करने के साथ घर में ही सिलाई मशीन से लोगों के कपड़े सिल-सिल करके कमाई करती थी। लम्बे समय तक इस प्रकार घोर परिश्रम करके सब बच्चों को पढ़ाया-लिखाया। सबसे बड़े पुत्र उदयमल अध्यापक बने। दूसरे पुत्र बसन्तमल वकील व सीए बने। सीए बनते ही उन्हें मद्रास भेजा गया। दो वर्षो में उनकी प्रेक्टिस अच्छी जम गई। कुछ पैसे कमा लिये। लेकिन मद्रास में नहीं रहे, बोले, मैं अपने माता-पिता के साथ ही रहूंगा। तीसरे पुत्र गौतम इंजीनियर बने, जिनकी राज्य सरकार में सर्विस है। चौथे पुत्र अशोक सीए बने और पाँचवें पुत्र डॉ. विनीत कोठारी यहां उच्च न्यायालय में न्यायाधीश हैं। आज माँ-बाप दोनों नहीं हैं, लेकिन उनके सब बच्चों ने नीति-मार्ग पर चलकर कीर्ति और वैभव दोनों अर्जित किये। सबने माँ-बाप की कड़ी मेहनत की खरी कमाई को देखा व सीखा। सारे परिवार में प्रेम है। एक पीढ़ी अगर कष्ट पाकर भी नैतिकतापूर्ण जीविकोपार्जन करती है तो उसका भव तो सुधरता ही है, उसकी पीढ़ियां भी सुधर जाती हैं।

11. इस सम्बन्ध में आचार्य श्री हस्ती के कुछ वचनों को, जिन्हें श्री गौतममुनिजी के मार्गदर्शन में श्री सम्पतराज चौधरी ने काव्य में ढाला है, प्रस्तुत कर रहा हूँ -

रोजी-रोटी के लिये, करो कोई व्यवसाय।
महारम्भ छल-कपट से, 'हस्ती' करो न आय।

रगड़े-झगड़े से मिले, धन-दौलत सामान।
'हस्ती' ऐसे माल से हो न कभी कल्याण।

नैतिकता की रक्षा जो करता है परिवार।
सदाचार की प्रीति से कुल रहता उजियार।

सत्य नीति आचार में, जब तक नहीं निखार।
'हस्ती' बाहर की सभी चमक-दमक बेकार।

धन की गुलामी से यदि पाना है कोई त्राण।
'हस्ती' कहते हैं करो, इच्छा का परिमाण।

चाहत और जरूरत को जितना करते कम।
'हस्ती' उतना ही मिले, शान्ति रस अनुपम।

अति संचय से दुःख बढे, नियम यही अटल।
प्रतिरक्षा का भय रहे, मनवा रहे विकल।

'हस्ती' दिखावे के लिए, व्यर्थ लुटावे धन।
समझ नहीं इसमें कोई, है केवल भटकन।

शादी महंगी हो गई, करके खर्च अपार।
तड़क-भड़क से ना करो, महंगे व्रत त्यौहार।

काजल ज्यूं नैनन बसे, साहू बसे समाज।
कंकर ज्यूं खटके नहीं, आवे सबके काज।

12. कुछ सहकारी चिन्तन -

(1) कोई भी व्यवसाय आदि शुरू करने से पहले सोचना-समझना कि क्या उससे नैतिकतापूर्ण जीविकोपार्जन हो सकेगा।

(2) मन में यह दृढ़ता रहे कि हम और हमारा परिवार नैतिकतापूर्ण जीविकोपार्जन ही करेंगे, भले ही कष्ट सहने पड़ें।

(3) बैंगलुरु के रसायन व्यवसायी जसवन्त छाजेड़ पहले लगभग 80 प्रतिशत व्यापार ब्लैक में करते थे। समझ आने के बाद अब पूरा व्यापार व्हाइट में करते हैं। इससे कमाई बढ़ी है, घटी नहीं। काले धन का कार्य नहीं करना सुख का रहस्य है।

(4) कोई भी व्यापार हो, हमें अपने मुख्य ग्राहकों का चयन करना चाहिये, ताकि हमारी नैतिकता बनी रहे।

(5) जो जैसा होता है, उसको वैसा ही मिलता है, लाइक अट्रैक्ट्स लाइक। हम संकल्पपूर्वक नैतिकतापूर्ण जीविकोपार्जन करेंगे तो हमें अपने आप वैसे ही संयोग मिलेंगे।

(6) अपने बच्चे-बच्चियों को जितनी ऊँची पढ़ाई पढ़ा सकें, पढ़ाएं। साथ में नैतिकतापूर्ण जीविकोपार्जन के संस्कार डालें। वे सुखी, समृद्ध व धार्मिक जीवन जीयेंगे।

(7) जरूरत से ज्यादा जितनी भी सम्पत्ति हो जाए, संघ और समाज के न्यासी (ट्रस्टी) के रूप में उसका सदुपयोग करना चाहिये।

(8) हमारे आचार्यप्रवर सप्त कुव्यसनों के त्याग की प्रेरणा देते हैं। खाने-पीने में ज्यादा खर्च नहीं होता। दिखावे और व्यसनों में धन पानी की तरह बह जाता है। किसी भी प्रकार का सट्टा - शेयर मार्केट में, कमोडिटी मार्केट में; जुआ है, कुव्यसन है, इसलिए वर्जित है।

(9) सब जीवों को अपने ही समान समझने लगेंगे तो नैतिकतापूर्ण जीविकोपार्जन हो जाएगा।

(10) आवश्यकताएँ सीमित कैसे हो ? अन्तर के रस का, सुख का स्पर्श करना। इसके लिए स्वाध्याय, ध्यान, सत्संग आदि जरूरी है। लोभवृत्ति, संग्रहवृत्ति, कामना ही अनीति व अनैतिकता का कारण है।

(11) पूणिया श्रावक का सामायिक में मन नहीं लगा। पत्नी से बात की, पता लगाया। खाना पकाने में पड़ोसी का छाणा आ गया था। यदि हम अनीतिपूर्ण जीविकोपार्जन करते हैं तो सुख-शान्ति पूर्वक रह ही नहीं सकते।

(12) न्याय-नीतिपूर्ण व्यापार करने वाला सहज ही समाज की सेवा करता है।

(13) जो न्यायपूर्ण ढंग से प्राप्त होती है, वही सम्पत्ति है, अन्यथा वह सम्पत्ति नहीं, विपत्ति है।

(14) अन्याय के पकवानों से न्याय की सूखी रोटी मीठी होती है।

(15) स्थानांग सूत्र में बताया गया है कि मनुष्य गलत माप-तौल करके तिर्यंच गति का बंध करता है। भगवती सूत्र में तुंगियानगरी के श्रावकों का वर्णन आता है। उनके द्वार अतिथि, दीन-दुःखियों और गरीबों के लिए सदा खुले रहते थे।

14. अन्त में यही निवेदन करूंगा कि नैतिकतापूर्ण जीविकोपार्जन किया जा सकता है। ऐसा ही करना चाहिये। ऐसा करने से इस भव में और पर भव में सुख-शान्ति पाएँगे तथा मोक्ष नजदीक लाएंगे।

अध्यक्ष : सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर

संगोष्ठी-आलेख

भ्रष्टाचार-विषयक गांधी-चिन्तन

डॉ. ओ.पी. टाक

महात्मा गांधी विश्व के उन महापुरुषों में शामिल हैं जिन्होंने मानव-जीवन एवं मानव-प्रकृति की आधारभूत वास्तविकताओं को गहराई से समझा और सर्वांग तथा समग्र दर्शन हमारे सामने रखा। यद्यपि गांधीजी ने कभी भी किसी नये विचार अथवा दर्शन के प्रतिपादन का दावा नहीं किया, लेकिन उन्होंने प्रत्येक छोटे-मोटे कार्य में सत्य को ढूंढने और उसके अनुसार आचरण करने की सीख एवं प्रेरणा हमें प्रदान की। 'सत्य, अहिंसा और अपरिग्रह' जैसे शाश्वत मूल्यों का हमारे निजी एवं सार्वजनिक जीवन में पुनःसंस्कार करके गांधीजी ने एक अभिनव क्रांति की शुरूआत की। आज इक्कीसवीं शताब्दी में भी इस क्रांति की आभा कम नहीं हुई है। वर्तमान में विश्व भर में पर्यावरण, मानवाधिकार एवं भ्रष्टाचार को लेकर जितने जन आंदोलन चल रहे हैं, उनकी मूल प्रेरणा में गांधी का जीवन एवं दर्शन भी है।

गांधीजी के लिये निजी और सार्वजनिक में कोई भेद नहीं था। जो निजी तौर पर स्वीकार करने योग्य है, वह सार्वजनिक जीवन में भी अनुकरणीय है और जो सार्वजनिक स्तर पर स्वीकार्य है वह निजी जीवन में भी दिखलाई पड़ना चाहिये। भ्रष्टाचार विषयक गांधीजी का चिन्तन इसी 'अभेद दृष्टि' पर आधारित है। इस संबंध में मुझे दो घटनाओं का स्मरण हो रहा है। पहली घटना गांधीजी के दक्षिण अफ्रीका प्रवास की है जहाँ वे अपने परिवार के साथ आश्रम में रहते थे। उनके छोटे पुत्र देवदास को मीठा अच्छा लगता था और आश्रम में मीठा खाने पर पाबंदी थी। अतः देवदास ने भोजन ही बंद कर दिया था, या फिर दो कौर खाकर उठ जाता था। बच्चे को भूखा रहता देखकर बा का दिल बहुत पसीजता। उन्होंने देवदास की थाली में थोड़ी सी चीनी परोस दी, उस दिन देवदास ने संतोष से खाना खाया। अब बा प्रतिदिन थोड़ी सी चीनी उसकी थाली में रख देती थी। किसी ने बापू से शिकायत की कि बा के इस काम की वजह से आश्रम में चीनी

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 5-6 नवम्बर 2011 को जोधपुर में आयोजित 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

का खर्च बढ़ गया है। उसी दिन बापू ने प्रार्थना सभा में कहा कि आश्रम का पैसा तो कौम का पैसा है। एक-एक पाई सार्वजनिक हित में खर्च होनी चाहिये। अपने लाभ के लिये अथवा मोह या स्वार्थ के लिये इस धन का खर्च करने का किसी को अधिकार नहीं है। आज बा ने अपने पुत्र के लिये चीनी उपयोग में ली है तो कल इस प्रकार और भी खर्च बढ़ सकता है। कल्पना की जा सकती है कि बापू की इस प्रतिक्रिया के बाद बा की हालत क्या हुई होगी।

दूसरी घटना भी इसी आश्रम की है। गांधीजी के परम प्रिय मित्र प्राणजीवन मेहता इंग्लैण्ड में रहते थे। उन्होंने एक पत्र लिखा, जिसमें बापू के एक पुत्र के इंग्लैण्ड में बैरिस्टर बनने की पढ़ाई के खर्च की व्यवस्था अपने जिम्मे लेने का प्रस्ताव था। गांधीजी ने कहा कि प्रस्ताव के प्रत्युत्तर में अपने बेटे को भेजता हूँ तो यह एक गलत परम्परा की स्थापना होगी। सार्वजनिक कार्य करने वाले लोगों को अपने परिवार के लोग ऐसा कोई लाभ न ले, इस बारे में चौकस रहना चाहिये। अगर चौकस नहीं रहेंगे तो समाजसेवा का क्षेत्र भ्रष्टाचारियों से भर जायेगा।

ये दोनों घटनाएँ इस बात को स्पष्ट करती हैं कि गांधीजी विचार के स्तर पर ही नहीं, बल्कि आचरण के स्तर पर भी और सार्वजनिक ही नहीं बल्कि निजी जीवन में भी शुचिता और सदाचरण के पक्षधर थे। भ्रष्टाचार में आकंठ डूबे राजनेताओं और नौकरशाहों के लिये ये दोनों घटनाएँ आश्चर्यजनक हो सकती हैं, लेकिन ये घटनाएँ प्रेरणा भी जगाती हैं और भ्रष्टाचार के विरोध में संघर्ष करने के लिये प्रस्थान बिन्दु की रचना भी करती हैं।

महात्मा गांधी के जीवन के दो प्रमुख लक्ष्य थे। पहला देश की स्वतंत्रता और दूसरा स्वतंत्र भारत का नवनिर्माण। पहले लक्ष्य की प्राप्ति के लिये उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ जनआन्दोलन छेड़ा और दूसरे लक्ष्य की प्राप्ति का मार्ग बताने के लिये उन्होंने 'हिन्द स्वराज' की रचना की। गांधीजी दूरदर्शी व्यक्ति थे। वे जानते थे कि कांग्रेस आजादी के जन-आन्दोलन का माध्यम है, लेकिन आजादी मिलने पर कांग्रेस के कार्यकर्ताओं में सत्ता सुख भोगने की लालसा उत्पन्न होगी, इसलिये उन्होंने कांग्रेस को भंग करने का सुझाव दिया। भले ही इस सुझाव की अनदेखी कर दी गई, लेकिन इसके माध्यम से गांधीजी ने भ्रष्टाचार से मुकाबला करने की नसीहत देश को प्रदान की थी। 'हरिजन' (28.01.1939) के अंक में उन्होंने लिखा कि जिस कांग्रेस की परवरिश पचास

सालों से अधिक्र वर्ष तक देश के सर्वोच्च मस्तिष्क वाले लोग करते रहे हैं, वह अपने अन्दर ह्रास शुरू होते ही नष्ट नहीं हो जायेगी और अगर भ्रष्टाचार का वक्त पर ही मुकाबला कर लिया जाये तब तो उसके नष्ट होने की कोई जरूरत ही नहीं है। जब गांधीजी ने देखा कि इस मुकाबले का समय निकल गया है, तब उन्होंने कांग्रेस को भंग करने का सुझाव दिया था।

इतिहास साक्षी है कि आजादी के बाद जितने भी राजनैतिक दल भारत में बने और विकसित हुए वे सभी भ्रष्टाचार की गिरफ्त में आते गये, साधन और साध्य की शुचिता का निरन्तर क्षरण होता गया और सार्वजनिक जीवन का आदर्श और निःस्वार्थ सेवा भावना उन राजनैतिक दलों और राजनेताओं के जीवन से लुप्त होने लगी और आज स्थिति यह है कि भ्रष्टाचार की विषबेल पूरी व्यवस्था और तंत्र पर हावी हो गयी है। संस्थागत भ्रष्टाचार पर चिंतन करते समय गांधीजी के इस सुझाव पर मनन करने की आवश्यकता है जिसमें उन्होंने एक समय के बाद संस्थाओं के विसर्जन की बात कही है। यदि जनहित में निर्मित संस्थाओं का यथासमय विसर्जन कर दिया जाये तो उनके माध्यम से फैलने फूलने वाले भ्रष्टाचार पर भी अंकुश लगाने का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। गांधीजी कहते थे कि सत्य को गोपनीयता से घृणा है। संस्थाओं के विचार और प्रवृत्तियाँ जिस तरह सार्वजनिक होती हैं वैसे ही उनके आर्थिक व्यवहार भी पूर्णतः पारदर्शी होने चाहिये। सभी संस्थाओं का लेखा-जोखा आम आदमी के अवलोकन एवं विश्लेषण के लिये सदैव उपलब्ध रहना चाहिये। इससे भी भ्रष्टाचार के विरोध में संघर्ष करने में मदद मिलती है। गांधीजी का मानना था कि सार्वजनिक संस्थाओं का संचालन स्थायी कोषों के आधार पर नहीं होना चाहिये, क्योंकि लम्बी जमा रकमों के सूद पर चलने वाली संस्थाएँ प्रायः स्वेच्छाचारिणी बन जाती हैं। संस्थाओं में आर्थिक शुचिता एवं अनुशासन के लिये गांधीजी का यह दृष्टिकोण आज बहुत प्रासंगिक प्रतीत होता है।

संस्थाओं के अलावा बड़े-बड़े पदों पर आसीन राजनेताओं और अफसरों के भ्रष्टाचार में लिप्त होने के मामले हम प्रतिदिन पढ़ते सुनते हैं। अंग्रेजी शासनकाल में भ्रष्टाचार कम था, क्योंकि नौकरशाही प्रखर थी, लेकिन आज राजनीति और नौकरशाही के गठबंधन ने भ्रष्टाचार को चरम पर पहुँचा दिया है। इसका प्रमुख कारण हमारी शिक्षा-व्यवस्था भी है, जिसमें नैतिक संस्कारों के लिये अवकाश निरन्तर कम होता गया है। गांधीजी के अनुसार शिक्षा ऊँचा गुण

है, लेकिन चरित्र से ऊँचा नहीं है। यदि शिक्षा संस्कार के रूप में हमारे चरित्र को ऊँचा नहीं उठाती है तो उसकी कोई उपयोगिता नहीं है। आज की शिक्षा मनुष्य के मस्तिष्क का विकास करती है, वह क्षमताओं को बढ़ाने का कार्य करती है, लेकिन सदाचार के लिए हृदय को संस्कारित एवं प्रशिक्षित करने का कार्य नहीं करती है। इस शिक्षा का व्यवसायीकरण के साथ अपराधीकरण भी तेजी से हो रहा है। इस शिक्षा-व्यवस्था से निकलने वाले विद्यार्थियों से सदाचरण की आशा कैसे की जा सकती है?

गाँधी दर्शन के अधिकारी विद्वान् बाबा विनोबा कहते हैं कि बच्चों को नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा मिलनी चाहिये तभी वे नेकी पर चलेंगे। आजकल रिश्वत खोरी बहुत चलती है, लेकिन रिश्वत देने वाला और लेने वाला दोनों गुनहगार हैं। देने वाले का काम बन जाता है, इसलिये वह रिश्वत देता है और लेने वाले की दौलत बढ़ती है इसलिये वह लेता है। दोनों बुरा काम करते हैं, लेकिन उसे जाहिर नहीं करते। 'तेरी भी चुप और मेरी भी चुप' चलती है। इस तरह दोनों एक दूसरे की रजामंदी से काम करते हैं। यह नैतिक गिरावट है जो सब गिरावटों से ज्यादा भयंकर है। इस गिरावट को रोकने के लिये जरूरी है कि हम लोगों के सामने नैतिक बातें लायें। लोगों को समझाया जाये कि रिश्वतखोरी उसूली तौर पर गलत है। उससे न दीन (धर्म) सधता है न दुनिया। प्रायः लोग समझते हैं कि उससे चाहे दीन न सधे, दुनिया तो अवश्य सधती है, लेकिन सूक्ष्म नज़र से देखने पर समझ में आयेगा कि उसमें दीन भी जाता है और दुनिया भी जाती है। सभी सबको ठगना चाहेंगे तो ठगों का ही राज्य होगा। इस हालत में दुनिया का काम भी नहीं बनेगा। बुराई से दुनियाँ भी नहीं सधती, इस बात का पक्का विश्वास हो जाये तो इंसान कभी भी उसमें नहीं फँसेगा। वह हमेशा सचेत रहेगा कि उसके हाथ से कोई गलत काम नहीं हो जाये।

भ्रष्टाचार पर विचार करते समय हमें गाँधीजी के सभ्यता दर्शन को भी समझना चाहिये। ऐसा क्यों है कि आज की सभ्यता भोग, भय और भ्रष्टाचार में फँसती जा रही है। गाँधीजी की दृष्टि में यह अधिकाधिक उपभोग करने और मौज मजे करने की सभ्यता है, जो अनीति और अधर्म पर टिकी है। इसका इष्ट और अभीष्ट ही दुष्ट है। यह मानव आत्मा की महाशत्रु है। यह अहंकार की सभ्यता है और अनीति को मजबूत करने वाली सभ्यता है। गाँधीजी इस शरीरधारी सभ्यता के विरोध में आत्माधारी सभ्यता का विकल्प प्रस्तुत करते हैं।

उनकी दृष्टि में सभ्यता ऐसी हो जिसमें उत्पादन जरूरतें पूरी करने के लिये हो, अधिकाधिक उपभोग करने और लोभ लालच पूरा करने के लिये उत्पादन न हो, जिसमें साधन और साध्य की शुचिता हो और जिसमें मनुष्य और प्रकृति के मध्य मैत्री भाव हो। ऐसी सभ्यता, प्रकृति और ईश्वर के बीच रचनात्मक सामंजस्य को सर्वोपरि मानती है। गाँधीजी के अनुसार ऐसी आत्माधारी सभ्यता मनुष्य की आत्मा की जरूरत को पूरा करती है और उसे बेहतर जीवन जीने के लिये प्रेरित भी करती है।

गाँधी दर्शन का मूल मंत्र यही है कि मनुष्य की उत्कृष्टता आध्यात्मिक शक्ति की सिद्धि में है, ऐन्द्रियक शक्ति की सिद्धि में नहीं है। धर्म जब अध्यात्म में बदलता है तब वह कर्मकांड तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह मनुष्य को कर्त्तव्य पालन के साथ संयम एवं सादगी से रहने तथा इच्छाएँ कम करने के लिये भी प्रेरित एवं संस्कारित करता है। मनुष्य ऐसे पुण्य अध्यात्म की छांव में पलता बढ़ता रहे तो भ्रष्टाचार के लिये गुजांइश कहाँ बच पाती है? गाँधी जी का सारा दर्शन मनुष्य की आध्यात्मिक शक्ति जागृत करने के लिये निवेदित है, ताकि मनुष्य 'भय, भोग और भ्रष्टाचार' जैसे राक्षसों को पराजित करके 'महावीर' बन सके।

-रामद्वारा गली, बागर चौक, जोधपुर (राज.)

लेकिन रूकेगा न सफर

रेणु सिरोया

मंजिल की कशमकश में उलझ रहे हैं इस कदर,
हर तरफ है चौराहा, जायें तो जायें किधर।
तलाशने निकले सुकूं, भटक रहे हैं दर बदर,
जहाँ मिलेगी आरज़ू, जाने कहाँ है वो डगर।
दुनिया की इस भीड़ में, खोये हुए हैं बेखबर,
गुमराह हो रहे रास्ते, कब तक चलेगा यह सफर।
मंजिल की जुस्तजू में हम, चलते रहेंगे उम्र भर,
ख्वाहिशों का काफ़िला ये, रुकने ना पायेगा मगर।
मुमकिन है ज़िन्दगी को, मिल जाये मंजिल अगर,
अंजाम हसरतों का ये, थमेगा उसी मोड़ पर।।

-213/12, अशोकनगर, उदयपुर-313001 (राज.)

संगोष्ठी आलेख

बौद्धदर्शन में भ्रष्टाचार-उन्मूलन के तत्त्व

डॉ. श्वेता जैन

समाचार पत्रों से नेताओं की असली तस्वीरों से मुखातिब होता जन-जन,
टी.वी. चैनलों पर बाबा रामदेव, सांई बाबा जैसे साधुओं का परिग्रह-प्रकटन।
वर्तमान संदर्भ के आलेखों में उजागर होता भ्रष्टाचारियों का चरित्र चित्रण,
इन सबको देखकर उचट गया एक जिज्ञासु का मन।।
वह करने लगा विचार आखिर इन दुराचारों का कैसे हो शमन?
इनमें उलझे, थके मन से किया शयन तो दिखा एक स्वप्न।
जिज्ञासु के स्वप्न में अवतरित हुआ एक बौद्ध दार्शनिक।
उसने 21 वीं शती की इन समस्याओं को रखा उसके समक्ष।

जिज्ञासु और बौद्ध दार्शनिक के मध्य हुए कल्पित वार्तालाप को यहाँ प्रस्तुत कर रही हूँ-

जिज्ञासु- राजकीय 'भ्रष्टाचार' के विषय में आप क्या सोचते हैं?

बौद्ध दार्शनिक- राजकीय भ्रष्टाचार दो स्तर पर होता है। प्रथम अधीनस्थ एवं कर्मचारी द्वारा तथा दूसरा उच्चपदस्थ, नियन्त्रक, सत्ताधारक आदि द्वारा। अधीनस्थ एवं कर्मचारी वर्ग में भ्रष्टाचार फैलने के दो कारण हैं- 1. व्यवस्था-तन्त्र का स्वरूप ठीक नहीं होने से, 2. नियन्त्रण का अभाव होने से। उच्चपदस्थ, सत्ताधारक और नियन्त्रक के आचरण के भ्रष्ट होने में मूल्यपरक जीवन जीने की निष्ठा का अभाव, ईमानदारी से काम करने की चेष्टा में कमी, जनता से ज्यादा धन को महत्त्वपूर्ण समझना, लोभ की प्रवृत्ति आदि कारण होते हैं।

जिज्ञासु- किस प्रकार की व्यवस्था भ्रष्टाचार को रोक सकती है?

बौद्ध दार्शनिक- प्रथम स्तर के भ्रष्टाचार को व्यवस्था-तन्त्र की कमियों

---

*आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 5-6 नवम्बर 2011 को जोधपुर में आयोजित 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

को दूरकर और उचित नियन्त्रण के द्वारा रोका जा सकता है। द्वितीय स्तर जो सत्ताधारी नेताओं का है, उस पर अधिक चिन्तन करने की आवश्यकता है, क्योंकि भ्रष्टाचार की परिधि का केन्द्र वही है। बौद्ध दर्शन में सत्ताधारी नेता सम्बन्धी भ्रष्टाचार उन्मूलन हेतु तत्त्व खोजे जाएँ तो निम्नांकित दस प्रकार के राज धर्म इस कसौटी पर खरे उतरते हैं।[1]

1. **दानशीलता–** राजा का कर्त्तव्य होता है कि वह जो लोग अभावग्रस्त हैं, जो जरूरत मन्द हैं, असहाय हैं उनको दान स्वरूप सहायता के रूप में स्वरोजगार के लिए आर्थिक दान दे। वर्तमान संदर्भ में राजनेता का कर्त्तव्य है कि जनता के लिए रोटी, कपड़ा एवं उचित आवास तथा अन्य आवश्यकताओं की व्यवस्था करे।
2. **शील–** शील अर्थात् नैतिकता। राजनेता को व्यक्तिगत तथा सार्वजनीन जीवन में पूर्णतः नैतिक एवं सदाचार का व्यवहार करना चाहिए और उसका चरित्र इतना उज्ज्वल हो कि जनता के लिए अनुकरणीय हो।
3. **परित्याग–** स्वधन को त्याग करके भी राजनेता अफसरों की कौशलपूर्ण सेवाओं का सम्मान करे तथा उनकी सेवाओं के कार्यों में और अधिक कुशलता प्राप्त करने के लिए उचित प्रशिक्षण दिलाने का भी प्रबन्ध करे।
4. **अग्रवान–** राजनेता को अपने वचन का सच्चा और इरादों का पक्का होना चाहिए। अर्थात् अपने वचनों के पालन में आगे होना चाहिए। उसकी ढुलमुल बात या नीति नहीं होनी चाहिए। आज के नेता अपनी बात पर दृढ़ नहीं रहते, यह भी भ्रष्टाचार पनपाता है।
5. **मध्यवान–** राजनेता सुशासक एवं भद्र पुरुष होना चाहिए। उसमें अनुशासन की कठोरता के साथ करुणा भाव भी होना चाहिए। वह अपने कार्यों को मध्यस्थ होकर करे।
6. **तप–** तप का अर्थ है इन्द्रियों पर संयम। ऐन्द्रियक भोगों में लिप्त न होना राजनेता का सबसे बड़ा गुण है। भोगासक्त न होने से उसका आचरण भ्रष्ट नहीं होता।
7. **अक्रोध–** एक अच्छे नेता को उन लोगों के प्रति ईर्ष्या–द्वेष घृणा नहीं

पालनी चाहिए जिन्होंने उसको किसी प्रकार की हानि या चोट पहुँचाई हो। उनके प्रति स्नेह करुणा रखते हुए नियमानुसार कार्यवाई करनी चाहिए।

8. **अविहिंसा**– जहाँ तक हो राजनेता को कर्त्तव्यों से पराङ्मुख न होते हुए हिंसा से विरत रहना चाहिए। हर समस्या को वार्तालाप और तर्क बुद्धि से हल करना चाहिए।

9. **शान्ति**– जय हो या पराजय– सभी अवसरों पर नेता को धैर्य धारण करना चाहिए। चुनाव में हारने पर भी नेता को धैर्य धारण कर जनहित में कार्य करते रहना चाहिए।

10. **अविरोधता**– अविरोधता अर्थात् अशत्रुता। अशत्रुता से तात्पर्य सहृदयता एवं मित्रता से है। नेता को जनता के प्रति मैत्रीपूर्ण व्यवहार रखना चाहिए।

वर्तमान में भ्रष्टाचारी नेताओं के लिए दस प्रकार के राजधर्म अनुकरणीय हैं। जनता को भी चाहिए कि इन मानदण्डों पर खरे उतरने वाले व्यक्ति को अपना नेता चुने।

गौतम बुद्ध ने कहा कि राष्ट्र का न्यायपूर्ण एवं कल्याणकारी होना उसके शासक के आचरण पर निर्भर करता है। वे कहते हैं कि जब किसी देश का राजा न्यायप्रिय एवं सदाचारी होता है तो उनके अधीन कार्य करने वाले उच्चाधिकारी गण भी ईमानदार एवं भलाई करने वाले हो जाते हैं। जब उच्चाधिकारी ईमानदार व भले होते हैं तो उनके अधीन कार्यरत अन्य पदों पर छोटे–बड़े कर्मचारी भी ईमानदार व भला आचरण करते हैं। जब छोटे–बड़े कर्मचारी ईमानदार एवं अच्छे होते हैं और नियमानुसार आज्ञाओं का पालन स्वयं करते हैं तथा प्रजाजनों से करवाने का प्रयत्न करते हैं तो जनता भी न्यायप्रिय एवं भली बन जाती है।

जिज्ञासु– यह तो राजनैतिक एवं प्रशासनिक भ्रष्टाचार की बात हुई। धर्म के क्षेत्र में भी भ्रष्टाचार फैल रहा है। इसके सम्बन्ध में बुद्ध क्या कहते हैं?

बौद्ध दार्शनिक– धर्म शान्ति, प्रेम, करुणा, दया, समता से युक्त जीवन जीने को कहता है किन्तु इसके विपरीत व्यक्ति अपने धर्म के प्रति आसक्त होकर द्वेष, वैर और अहं का पोषण करता है। परिणामस्वरूप धर्म के नाम पर

जहाँ शान्ति होनी चाहिए वहाँ दंगे, फसाद हो रहे हैं, यह धार्मिक भ्रष्टाचार है। इस विषय में तथागत ने बहुत सुन्दर कहा है-"**ममं वा, भिक्खवे, परे अवण्णं भासेय्युं, धम्मस्स वा अवण्णं भासेय्युं, संघस्स वा अवण्णं भासेय्युं, तत्र तुम्हेहि न आघातो न अप्पच्चयो न चेतसो अनभिरद्धि करणीया। ममं वा, भिक्खवे, परे अवण्णं भासेय्युं, धम्मस्स वा अवण्णं भासेय्युं, संघस्स वा अवण्णं भासेय्युं, तत्र चे तुम्हे अस्सथ कुपिता वा अनत्तमना वा, तुम्हं येवस्स तेन अन्तरायो**"[2] अर्थात् कोई मेरी या मेरे धर्म या संघ की निन्दा करे, इस कारण तुम्हें उसके प्रति न वैर करना चाहिए, न असन्तोष और न ही क्रोध। क्योंकि भिक्षुओं! यदि कोई मेरी, धर्म तथा संघ की निन्दा करे, उस पर तुम वैर, असन्तोष या क्रोध प्रकट करोगे तो इससे तुम्हारी धर्म साधना में विघ्न पड़ेगा। अत: तुम्हें निन्दा करने वाले की बात पर विचार करना चाहिए कि उसमें कितना सत्य है और कितना असत्य। सत्य को स्वीकार कर, असत्य को मिथ्या समझकर त्याग देना चाहिए।

जिज्ञासु- भ्रष्टाचार का बीज कौनसा है? यह बीज कैसे विकसित होता है और उसको समाप्त करने का क्या मार्ग है?

बौद्ध दार्शनिक- "**मनोपुब्बंगमा धम्मा, मनोसेट्ठा मनोमया**" मन ही सभी प्रवृत्तियों का अगुवा है अर्थात् बीज है। चाहे सरकारी जमीनें अपने नाम करनी हों, बैंक लूटना हो, रिश्वत देनी हो, रिश्वत लेनी हो, किसी की हत्या करनी हो, नकली जेवर बेचने हों, दंगे करवाने हों, किसी के साथ दुष्कर्म करना हो, धोखा देना हो, जनता का धन हड़पना हो, अपने चहेते को सरकारी नौकरी देनी हो, झूठी कम्पनी बताकर दूसरों को लूटना हो, बड़ा घोटाला करना हो, बोर्डर बेचना हो, नकली दवाइयाँ बेचनी हो, घी-तेल में मिलावट करनी हो, चाहे टेक्स चोरी करना हो- ऐसे सभी अपराधों में मन ही अगुवा होता है, कर्ता होता है। मन में ही सर्वप्रथम ये विचार जन्म लेते हैं और क्रियान्वित होते हैं। मन ही इन सभी क्रियाओं का संचालक है। मन के नेतृत्व में ये घटनाएँ घटित होती हैं। इस विज्ञान को अनुभूत कर महामानव बुद्ध ने अपने सभी उपदेशों में मन को संयमित और नियन्त्रित करने को महत्त्व प्रदान किया है। अत: बुद्ध का प्रत्येक उपदेश भ्रष्टाचार-उन्मूलन का हेतु है, तत्त्व है।

चित्त में उत्पन्न राग, द्वेष, मोह, ईर्ष्या, घृणा, क्रोध, मान, माया, लोभ की अमंगल एवं पाप की भावनाएँ मनुष्य को मनोरोगी बना देती हैं। ये मन के रोग ही व्यक्ति के आचरण को भ्रष्ट कर देते हैं, विकृत बना देते हैं। जैसे- काम-भाव ने नन्द को, गुरुमोह ने अंगुलिमाल को, रूप के अहं ने महारानी खेमा को, इन्द्रियों के अतिभोग ने यश गृहपति को भ्रष्टाचारी बना दिया। वर्तमान में भी नेताओं, अफसरों, व्यापारियों, उद्योगपतियों आदि के भ्रष्टाचारी होने में लोभ, मोह, द्वेष ही कारण हैं। तथागत बुद्ध चित्त में उत्पन्न होने वाले इन लोभ, द्वेष, मोह रूपी आवेशों के सम्बन्ध में कहते हैं-

मनोपकोपो रक्खेय्य, मनसा संवुतो सिया।

मनोदुच्चरितं हित्वा, मनसा सुचरितं चरे।।[3]

मानसिक आवेश से अपने को बचायें, मन से संयत रहें। मानसिक दुराचार को त्याग कर मानसिक सदाचरण करें।

राग-द्वेष, काम-क्रोध, लोभ-मोह की ग्रन्थियाँ चित्त को विकृत कर भ्रष्टाचार का रूप लें, इससे पूर्व ही समाधान हो, इस हेतु बुद्ध विपश्यना साधना के अभ्यास पर बल देते हैं। वे कहते हैं- **''चित्त पञ्ञं च भावयं..... सो इमं विजटये जटं''**[4] जो विपश्यना का अभ्यास करता है वह अन्तर्मन की इन (राग-द्वेष, काम-क्रोध रूपी) जटाओं को काट लेता है।

मन ही भ्रष्टाचार का मूल है। मन को साधने से सदाचार का पालन आसान हो जाता है और भ्रष्टाचार से मुक्ति मिल जाती है। गौतम बुद्ध ने भ्रष्टाचार-उन्मूलन के लिए आष्टांगिक मार्ग का प्रतिपादन किया है। जिस पर चलकर गृहस्थ और भिक्षु दोनों आचार की उत्कृष्टता को प्राप्त कर लेते हैं। वे आठ अंग हैं-

1. **सम्यग्दृष्टि-** कुशल और अकुशल कर्मों को यथावत् जानना सम्यक् दृष्टि है। इसमें साधक दुराचरण को पहचान लेता है, दुराचरण के मूल कारण को समझ जाता है तथा सदाचार को पहचान लेता है एवं सदाचरण के मूल कारण को समझ लेता है, तब उसकी दृष्टि सम्यक् होती है।
2. **सम्यक् संकल्प-** मन, वचन और कर्म से द्रोह, घृणा, द्वेष, दुराव आदि से विरत होकर संकल्प करना सम्यक् संकल्प है।

3. **सम्यक् वाक्**– वाणी का सत्य होना, निष्पाप होना, शांत, विनम्र एवं मधुर होना, हित-मित-प्रिय होना सम्यक् वाक् है।
4. **सम्यक् कर्मान्त**– भगवान बुद्ध की दृष्टि में प्राणियों की हिंसा से विरत रहना, चोरी से विरत रहना एवं व्यभिचार से विरत रहना सम्यक् कर्मान्त है।
5. **सम्यक् आजीविका**– विष, शस्त्र, मदिरा, मांस आदि बेचना, झूठा नापतोल करना, नौकर, जानवर आदि का व्यापार करना मिथ्या आजीविका कहे गए हैं। अतः कुशल कर्मो द्वारा शील पूर्वक आजीविका करना सम्यक् आजीविका है।
6. **सम्यक् व्यायाम**– संकल्प पूर्वक चित्त में अनुत्पन्न पांपपूर्ण अकुशल धर्मो को उत्साह एवं प्रयत्न पूर्वक रोकना और उसके लिए निरन्तर यत्नशील रहना सम्यक् व्यायाम है।
7. **सम्यक् स्मृति**– अपने कर्मो के प्रति सजग एवं अप्रमत्त होना सम्यक् स्मृति है।
8. **सम्यक् समाधि**– तृष्णा, काम-वासना, अकुशल धर्मो व कर्मो का पृथक् होकर काया व चित्त का विशुद्ध हो जाना सम्यक् समाधि है।

जिज्ञासु– भिक्षु संघ में कुछ भिक्षु आचरण से भ्रष्ट हो गये थे। जैसे- छन्न स्थविर वरिष्ठ भिक्षुओं की निन्दा करता था, भिक्षुनन्द के मन में काम जगा हुआ था, सप्पदासक भिक्खु द्वारा आत्महत्या करने का प्रयास किया गया था, बहु भाण्डिक स्थविर अनेक वस्तुओं का संग्रह करता था। कुछ वृद्ध स्थविर भिक्षु विकथा, गपशप कार्यो में लगे रहते थे, स्त्री के प्रलोभन में एक तरुण भिक्खु उसके जाल में फंस गया, एक भिक्षु ने हंस को पत्थर मारा था, कुछ भिक्षु अभिमानी और उद्धत हो गए थे। भिक्षुओं द्वारा कृत इन भ्रष्टाचार को रोकने के लिए बुद्ध ने क्या प्रयास किया?

बौद्ध दार्शनिक– भगवान् बुद्ध ने जिस 'धम्म' का उपदेश दिया था उसका साक्षात्कार जीवन की अत्यन्त पवित्रता के बिना असम्भव था। इस पवित्रता के सम्पादन के लिए जिस साधना-मार्ग की आवश्यकता थी उसका विस्तृत उपदेश अभिधम्म में था, किन्तु भिक्षु-भिक्षुणियों के संघों की स्थापना के बाद उनमें कुछ असंयमी, कदाचारी एवं मलग्रस्त व्यक्तियों के आ जाने से संघ की

व्यवस्था को कठोर व्यावहारिक नियमों में बांधने के लिए उन्होंने नाना प्रकार के नियम बनाए, जो विनयपिटक में संगृहीत हैं। भिक्षुओं में फैल रहे कदाचार व भ्रष्टाचार को रोकने हेतु हर 15 वें दिन 'उपोसथ' करने का नियम बनाया गया। प्रत्येक मास की अमावस्या और पूर्णिमा को जितने भिक्षु गाँव या कस्बा के पास विचरते थे, सब एक जगह एकत्र हो जाते थे और उन सबकी उपस्थिति में 'पातिमोक्ख' का पाठ होता था। 'पातिमोक्ख' का पाठ करते समय जैसे-जैसे अपराधों के प्रत्येक वर्ग का पाठ किया जाता था, उस सभा में सम्मिलित प्रत्येक भिक्षु से यह आशा की जाती थी कि वह उठकर, यदि उसने वह अपराध किया है तो उसको स्वीकार कर ले, ताकि भविष्य में संयमित हो सके। बुद्ध यह मानते थे कि पाप को प्रकट कर देने से वह छूट जाता है। चित्त-शुद्धि के लिए अपने पापों को खोल देना चाहिए। गुप्त रखने से वे और दृढ़ होते हैं। पातिमोक्ख में 227 अपराधों का उल्लेख हैं, जिसका दण्ड संघ से निष्कासन या किसी प्रकार का प्रायश्चित्त होता था। पाप स्वीकरण, क्षमायाचना और भविष्य के लिए कृतसंकल्पता- यही प्रातिमोक्ष विधान के प्रधान लक्ष्य थे।[5]

भारत में प्राचीन काल से यह परम्परा देखी जाती है कि एक सफल राजा या सुशासक पर उसके धर्मगुरु का वरदहस्त सदैव बना रहता था। राजा की सफलता धर्मगुरु के अनुशासन में निहित थी। राजा कितना ही शक्तिसम्पन्न क्यों न हो, किन्तु वह विकट स्थिति में अपने गुरु से विचार विमर्श करता था। वस्तुतः चिन्तन करने पर यह बात बहुत विपरीत लगती है। गुरु जो सर्वस्व त्यागी है, संसार से विरक्त है, जिसे संसार से कोई प्रयोजन नहीं है, वह कैसे संसार में रहने वालों की कठिनाइयों को दूर करने का उपाय बताता है। कहने का अभिप्राय है कि जो जिस क्षेत्र का नहीं है, उस क्षेत्र में आने वाली समस्याओं का निराकरण वह कैसे कर देता है। जैसे नदी के प्रवाह में बह रहे व्यक्ति को आगे आने वाली बाधाएँ नहीं दिखाई देती, किन्तु तट पर खड़े व्यक्ति को बहता हुआ व्यक्ति और आने वाली बाधाएँ सभी दिखाई देती हैं उसी प्रकार संसार में जो फंसे हुए नहीं है और तट पर खड़े हैं उन्हें संसार रूपी नदी में बह रहे संसारियों की कठिनाइयाँ स्पष्ट दिखाई देती हैं। अतः वे अपने भीतर के ज्ञान प्रकाश से उनकी समस्याओं रूपी अन्धेरों को दूर कर देते

हैं। आज के नेताओं को भी ऐसे धर्मगुरु की आवश्यकता है जो उनके राग-द्वेष मोह के अन्धकार को दूर कर सकें। उनमें जीवन-मूल्यों के प्रति निष्ठा, ईमानदारी से जीने की चाह और परोपकार पथ पर चलने की राह बता सकें। संयमित व्यक्ति ही एक अच्छा नेता हो सकता है और उसका शासनकाल ही भ्रष्टाचार रहित बन सकता है।

संदर्भ:-

1. बुद्ध और लोकतन्त्र, शीलप्रिय बौद्ध, भारतीय बौद्ध महासभा दिल्ली प्रदेश, 2002, पृष्ठ-22
2. दीघनिकाय पालि, सीलक्खन्धवग्ग, ब्रह्मजाल सुत्त, पेरा 5, सम्पादक एवं अनुवादक-स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, बौद्ध भारती, वाराणसी, 2005, भाग-1, पृष्ठ-5
3. धम्मवाणी-संग्रह, विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरी-इगतपुरी, 2007, पृष्ठ-3
4. धम्मवाणी-संग्रह, पृष्ठ-19
5. पातिमोक्ख सुत्त, सम्पादक- स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, बौद्ध भारती, वाराणसी

-अतिथि अध्यापक, संस्कृत विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

अभिमत

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका के द्वारा पाठकों में धर्म के प्रति रुचि जाग्रत हो रही है। मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. का प्रवचन 'कहाँ जा रहे हो राही'' पढ़ा, हृदय उल्लासित हुआ। प्रेरणा मिली कि जो धर्म-प्रभावना में संलग्न रहते हैं, वे निश्चित रूप से वन्दनीय होते हैं। नारी स्तम्भ में लेखक डॉ. दिलीप जी धींग लिखित आलेख 'गृहलक्ष्मी बने समाज सरस्वती' पढ़कर लगा कि आज नारी के प्रति समाज का सकारात्मक दृष्टिकोण होना ही चाहिए, क्योंकि समाज और रिश्तों की प्रगति में नारी की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। ऐसे ही आलेख की प्रतीक्षा आगामी समय में भी रहेगी। हार्दिक आभार।

-श्री सुनीलकुमार जैन अलीगढ़, टोंक-304023 (राज.)

पत्र-स्तम्भ

दीवार जब टूट जाती है (10)

आचार्य विजयरत्नसुंदरसूरि जी

दो भाइयों में परस्पर किसी भी बात को लेकर अनबन हो सकती है एवं वे एक-दूसरे के प्रति घृणा तथा द्वेष से आविष्ट होकर कलह कर सकते हैं। ऐसे भाइयों में सुलह होना कितना कठिन है, यह तथ्य जानें यहाँ भाई यश एवं महाराज के पारस्परिक पत्रों के संवाद से।**-सम्पादक**

महाराज साहब,

आपने गज़ब का समाधान दे दिया।

अच्छा या बुरा, आज मुझे जो भी मिला है

वह किसी पूर्व जन्म में मेरे ही द्वारा शुरु किये हुए वृत्त की पूर्णाहुति है

और इस जन्म में अच्छा या बुरा, मैं जो भी कर रहा हूँ

वह एक ऐसे वृत्त की शुरूआत है जो कि आगामी किसी जन्म में

मुझ पर ही आकर पूर्ण होने वाला है।

कमाल! कमाल!

इसका अर्थ यही है कि यदि मैं गलत का शिकार बनना

नहीं चाहता तो मुझे किसी के भी प्रति गलत व्यवहार नहीं करना है

और यदि मुझे सब कुछ अच्छा और सुंदर ही मिलता रहे

ऐसी मेरी इच्छा है तो मुझे सभी के साथ सम्यक् और सुंदर

व्यवहार ही करना है।

इस क्षण मैं आपको वचन देता हूँ कि

गलत से दूर रहने के लिए और सम्यक् को आत्मसात् करने के लिए

मैं अपनी सम्पूर्ण ताकत से, पूरी गंभीरता के साथ प्रयत्न करूँगा।

आपको एक बात की याद दिलाऊँ?

पूर्व के किसी पत्र में आपने मुझे जीवन में स्वस्थ, मस्त और

प्रसन्न रहने के चार सोपानों को समझाने की बात लिखी थी।

मैं चाहता हूँ कि आपको योग्य लगे तो आप उन चार सोपानों को
कुछ स्पष्ट करने की कृपा करें।

यश,

तुम्हारी सुंदर याददाश्त के लिए तुम्हें धन्यवाद।
उन चार सोपानों की बात करने से पहले एक अति महत्त्वपूर्ण
वास्तविकता की ओर मैं तुम्हारा ध्यान केन्द्रित करना चाहता हूँ।
हमें जो जीवन मिला है,
उस जीवन में 'कमाई' के खाते में हम बहुत कुछ जमा कर सकते हैं।
कमाये हुए रुपये,
बढ़ायी हुई प्रतिष्ठा,
विशाल मित्रवर्ग,
बढ़ता हुआ स्वजन-परिवार
प्राप्त होने वाले पुरस्कार, इनमें मिलती हुई सफलता,
ये सभी इस जीवन में हम 'कमाई' के खाते में जमा कर सकते हैं, परंतु
इस जीवन के बीतने वाले प्रत्येक पल को तो हमें
'खर्च' के खाते में ही लिखना पड़ेगा।
स्वयं परमात्मा की भी इतनी शक्ति नहीं है कि
वे अपने जीवन के बीतने वाले पल को 'कमाई'
के खाते में जमा कर सके।
मैं तुम्हारा ध्यान इस बात की ओर इसलिए केन्द्रित करना चाहता हूँ कि
पत्र-व्यवहार के जरिये
आज के बाद मैं तुम्हें जो भी मार्गदर्शन अथवा समझ देने वाला हूँ
उसको जीवन में अमल में लाने में तुम एक पल का भी विलम्ब न करो।
क्या कहूँ तुम्हें?
मन की अनेक चालबाजियों में से एक चालबाजी यह है कि
शुभ को वह हमेशा आने वाले कल पर ही छोड़ता है।
''दान हमें अवश्य करना है
पाप हमें अवश्य छोड़ना है,

सद्गुणों के प्रादुर्भाव के लिए हमें अवश्य प्रयास करना है,
दोषत्याग के लिए हमें अवश्य पुरुषार्थ करना है,
जीवन में हमें अवश्य परिवर्तन करना है,
सद्आचरण को हमें जीवन में प्रतिष्ठित अवश्य करना है,
पर आज नहीं, कल!
अभी नहीं, बाद में!
कारण? अभी हमारे पास बहुत लम्बी ज़िन्दगी पड़ी है।''
मन की इस चालबाजी में जो भी फँसा,
वह जीवन में शुभ के पालन से अवश्य वंचित रह गया।
क्योंकि, 'कल' उसके जीवन में कभी आया ही नहीं।
उसके जीवन में जो भी आया, 'आज' ही आया।
और 'आज' का उपयोग तो अशुभ, गलत एवं असम्यक् के लिए
ही करना है ऐसा उसने तय कर लिया है! सावधान हो जाओ!

महाराज साहब,

आपने तो बड़ी चोटदार बात कर दी।
आपकी बात बिल्कुल सच है कि शुभ आनेवाले कल पर छोड़ने का
मन को मानो व्यसन ही हो गया है।
मैं यह बात अपने अनुभव के आधार पर ही लिख रहा हूँ।
दान करने के लिए मेरा मन कभी मना नहीं करता,
परंतु वह हमेशा यही समझता है कि
''अभी बाजार में बहुत मंदी है।
उधार-वसूली बाकी है।
माल बहुत इकट्ठा हो गया है।
सरकार की स्थिरता में भी संदेह है।
व्यावहारिक प्रसंग भी निपटाने हैं।
भविष्य को सुरक्षित करना भी जरूरी है।
ये सब अच्छी तरह निपट जाए फिर दान करना
शुरु कर ही देना है।''
आज तक तो वे सब निपटा नहीं है (भविष्य में निपट जाए ऐसी संभावना भी

नहीं है।)

इसलिए मेरे जीवन में दान शुरु नहीं हुआ (मन यदि ऐसा ही सोचता रहा तो भविष्य में भी दान शुरु होगा या नहीं, इसमें संदेह है)

केवल दान के लिए ही ऐसा नहीं हुआ है।

अन्य जो भी शुभयोग हैं उन

सभी को अमल में लाने के मामले में भी यही हुआ है।

"कल अथवा

अनुकूलता मिलने पर शुभ का पालन कर लूँगा।"

यह विचार केवल विचार ही रहा है,

आचरण में उसका रूपांतरण हुआ ही नहीं है।

मैं आपको एक वचन देता हूँ कि

आपकी ओर से मुझे जो भी मार्गदर्शन मिलेगा,

उसको अमल में लाने के लिए मैं पूरी गंभीरता से प्रयत्न करूँगा।

मैं मानता हूँ कि आपके जीवन का प्रत्येक पल कीमती है।

यह तो आपके हृदय की उदारता है कि मुझ जैसे अपात्र को

आप पत्रव्यवहार के माध्यम से सम्यक् मार्गदर्शित कर रहे हैं। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आपके हृदय की उदारता को सार्थक करने के लिए मैं कोई कमी नहीं रखूँगा।

यश,

जीवन परिवर्तन के लिए तुम्हारी तत्परता जानकर मुझे बहुत आनंद हुआ।

वरन् मेरा वर्षों का अनुभव यह है कि

बुद्धि का अभिमान उतारने वाले परमात्मा के वचनों के श्रवण के बाद,

उसके वाचन के बाद,

प्रभु के उन वचनों की प्रशंसा करने में लोगों को जितनी रुचि है

उसके लाखवें अंश की रुचि भी उन वचनों को अमल में

लाने में नहीं है।

मैं तुमसे ही पूछता हूँ।

"डॉक्टर अच्छा है, डॉक्टर का निदान अच्छा है,

डॉक्टर का लिखा हुआ प्रिस्क्रिप्शन अच्छा है,

उस प्रिस्क्रिप्शन का कागज अच्छा है,''
यह बोलने वाला रोगी यदि दवाई लेने के लिए ही तैयार नहीं है
तो क्या तुम्हें लगता है कि उसे रोगमुक्त होने में सफलता मिलेगी?
यदि नहीं, तो
प्रभु के वचनों की जो केवल प्रशंसा ही करते रहते हैं,
अनुकूल संयोग होने पर भी,
शक्ति एवं सत्य होने पर भी
जो उन वचनों को जीवन में अमल में लाने के लिए
कोई प्रयत्न करने के लिए तैयार नहीं हैं
क्या तुम्हें लगता है कि स्वजीवन को दोषमुक्त बनाने में
उन्हें सफलता मिलेगी?
हर्गिज नहीं।
तुम्हें यही कहूँगा कि इस विडम्बना का शिकार तुम मत बनना।
जीवन को सुंदर बनाने के लिए जो भी मार्गदर्शन मिले,
उसे अमल में लाने का यथासंभव प्रयत्न अवश्य करना।
तुम्हारा काम बन जायेगा। **(क्रमशः)**

दान

श्री रणछोड़मल चौपड़ा

आपके पास दान देने योग्य संपत्ति है, आप दान की अभिरुचि रखते हैं और आपका दान ग्रहण करने वाला सुपात्र है, तो समझना चाहिये कि आपका महान पुण्योदय है। ये तीनों बातें महान पुण्योदय से मिलती हैं। दान दिया हुआ धन नष्ट नहीं होता, भाग्य के भंडार में जमा रहता है। दान के समान कोई निधि नहीं है। दुनिया में लाखों करोड़ों मनुष्यों के पास धन है, परन्तु उन सभी श्रीमन्तों की प्रशंसा नहीं होती। प्रशंसा उन श्रीमन्तों की होती है जो धन का त्याग करते हैं। धन का कमाना दुर्लभ नहीं, धन का त्याग करना दुर्लभ है। स्वार्थ की संकीर्ण भावना कम करके, परमार्थ के भाव विकसित करने के लिये गृहस्थ को दान का गुण अवश्य अपनाना चाहिये।

-चोपड़ा स्वाध्याय भवन (देव गुरु धर्म सेवार्थ),
भिलाई-3, जिला-दुर्ग (छत्तीसगढ़)

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 72)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(निर्ग्रन्थ का स्वरूप)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा– निर्ग्रन्थ में लिंग व शरीर कौन-कौनसे होते हैं?

समाधान– निर्ग्रन्थ द्रव्यलिंग की अपेक्षा स्वलिंग में भी होते हैं तथा अन्यलिंग में भी हो सकते हैं। किन्तु भाव की अपेक्षा तो सम्यग्ज्ञान-दर्शन-चारित्र रूप भावलिंग वाले ही होते हैं।

यहाँ द्रव्यलिंग के स्वलिंग व अन्यलिंग जो दो भेद किए हैं, उनमें स्वलिंग से तात्पर्य रजोहरण-मुखवस्त्रिका युक्त जैन साधु के वेश से है जबकि अन्यलिंग का तात्पर्य गृहस्थलिंग तथा अन्यतीर्थिक साधुओं के वेश से है। दूसरे शब्दों में बाहर में पहचानने के लिंगों में अन्तर हो सकता है, किन्तु आन्तरिक लिंग रत्नत्रयी आराधना सबमें अनिवार्यतः रहती है।

निर्ग्रन्थों में ग्यारहवाँ व बारहवाँ गुणस्थान होता है। इन दोनों ही गुणस्थानों में किसी प्रकार की लब्धि का प्रयोग नहीं हो पाता। अतः औदारिक, तैजस और कार्मण ये तीन शरीर ही निर्ग्रन्थों में पाये जाते हैं।

जिज्ञासा– निर्ग्रन्थ कौन-कौन से क्षेत्रों में मिलते हैं?

समाधान– निर्ग्रन्थ जन्म और सद्भाव की अपेक्षा 15 कर्मभूमिज क्षेत्रों में मिलते हैं, किन्तु संहरण की अपेक्षा अकर्मभूमिज क्षेत्रों में भी मिल सकते हैं।

यद्यपि निर्ग्रन्थों का संहरण नहीं होता। किन्तु कोई देवता किसी प्रमादी साधु का संहरण करके अकर्मभूमिज क्षेत्रों में ले जाय। वहीं पर वह साधु श्रेणी करले, ग्यारहवाँ-बारहवाँ गुणस्थान प्राप्त कर ले तो वह निर्ग्रन्थ बन सकता है। इस अपेक्षा से निर्ग्रन्थ को अकर्मभूमिज क्षेत्रों में भी मिलने की बात कही जाती है।

जिज्ञासा– निर्ग्रन्थ कौन-कौनसे काल में मिलते हैं?

समाधान– काल तीन प्रकार का कहा है- 1. अवसर्पिणी काल, 2. उत्सर्पिणी काल और 3. नो अवसर्पिणी नो उत्सर्पिणी काल। निर्ग्रन्थ इन तीनों ही कालों में मिल सकते हैं। अवसर्पिणी काल में जन्म की अपेक्षा तीसरे और चौथे आरे में तथा सद्भाव की अपेक्षा तीसरे, चौथे, पाँचवें आरे में मिलते हैं। उत्सर्पिणी काल में जन्म की अपेक्षा दूसरे, तीसरे, चौथे आरे में तथा सद्भाव की अपेक्षा तीसरे, चौथे आरे में मिलते हैं। नो अवसर्पिणी नो उत्सर्पिणी काल पाँच महाविदेह एवं युगलिक क्षेत्रों में होता है। महाविदेह क्षेत्र में हमेशा चौथा आरा जैसे भाव विद्यमान होते हैं, अतः वहाँ निर्ग्रन्थ मिलते ही रहते हैं। युगलिक क्षेत्रों में तो मात्र वही निर्ग्रन्थ मिल सकते हैं, जिनका प्रमादी साधु के रूप में पहले संहरण हुआ हो, उन्होंने युगलिक क्षेत्रों में रहते-रहते ही निर्ग्रन्थपना प्राप्त किया हो।

जिज्ञासा– निर्ग्रन्थ मरकर किस गति में जाते हैं?

समाधान– जैसा कि पूर्व अंक में स्पष्ट किया जा चुका है कि निर्ग्रन्थ ग्यारहवें तथा बारहवें गुणस्थानवर्ती साधु-साध्वी होते हैं। ग्यारहवें गुणस्थानवर्ती उपशान्तकषाय छद्मस्थ वीतरागी तथा बारहवें गुणस्थान वाले क्षीण कषाय छद्मस्थ वीतरागी कहलाते हैं।

क्षीणकषाय छद्मस्थ वीतरागी तो क्षपक श्रेणि वाले ही होते हैं। वे उसी भव में नियमा मोक्ष को प्राप्त करते हैं। किन्तु उपशान्त कषाय छद्मस्थ वीतरागी उपशम श्रेणी वाले होते हैं। वे यदि ग्यारहवें गुणस्थान में रहते काल कर जायें तो पाँच अनुत्तर विमान में 33 सागरोपम की स्थिति वाले देवों में उत्पन्न होते हैं। जो आराधक होते हैं अर्थात् जिन्होंने सर्वविरति अवस्था में आगामी भव का अनुत्तर विमान का आयुष्य बन्ध कर लिया है, वे निर्ग्रन्थ ही ग्यारहवें गुणस्थान में काल कर सकते हैं।

यदि वे निर्ग्रन्थ आराधक नहीं होकर विराधक है तो वे भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी आदि देवों में तथा नरक-तिर्यञ्चादि दुर्गतियों में भी उत्पन्न हो सकते हैं। निगोद में भी

जा सकते हैं।

आराधक निर्ग्रन्थ यदि देवलोक में उत्पन्न हो तो एकमात्र अहमिन्द्र पदवी को ही प्राप्त करते हैं। अर्थात् इन्द्र, सामानिक, त्रायस्त्रिंश, और लोकपाल इन चार पदवियों को प्राप्त नहीं करते हैं। क्योंकि पाँच अनुत्तर विमान के सभी देवता अहमिन्द्र पदवी वाले ही होते हैं।

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

नववर्ष का संदेश

श्री नितेश नागोता जैन

नव वर्ष संदेश लाया,
जीवन अपना प्रेरक बनायें।
आलस्य, प्रमाद का त्याग करके,
सम्यक् पुरुषार्थ को नित्य बढ़ायें।।
छोड़ें ईर्ष्या, निंदा, विकथा,
गुणग्राही स्वभाव बनायें।
छोटी सी इस जिंदगी में,
स्नेह प्रेम के झरने बहायें।।
त्यागें अहम्, अकड़पन हम सभी,
विनय, सरलता जीवन में अपनायें।
नव वर्ष का है पावन संदेश यही,
जीवन अपना प्रेरक बनायें।।
बातों से नहीं काम चलेगा,
आदर्श कार्यकर्ता बनकर बतायें।
कथनी-करनी एक बनाकर,
निज जीवन को प्रेरक बनायें।।

-कर सलाहकार, जैन बोर्डिंग एरिया,
भवानीमंडी-326502 (राज.)

नारी-स्तम्भ

नारी में संस्कार सर्जन का बोध*

डॉ. मंजुला बम्ब

नारी प्रेम और प्रेरणा की प्रतिमूर्ति है। जो नारी को केवल भोग का साधन मानते हैं, वे सचमुच नारी के साथ अन्याय करते हैं। महर्षि रमण का कहना है कि "पति के लिए चरित्र, संतान के लिए ममता, समाज के लिए शील, विश्व के लिए दया तथा जीवमात्र के लिए करुणा और जीवन संजोने वाली महाप्रकृति का नाम ही नारी है।"

संसार रूपी वाटिका का सबसे सुंदर फूल है- 'बालक'। बालक सबसे बड़ी संपत्ति है और उन्हें संस्कारी बनाना सबसे बड़ी संपन्नता है। बालमानस कोरा कागज, कच्ची हांडी, सफेद कपड़ा और उगता हुआ पौधा है। उस पर इच्छानुसार लिखा जा सकता है, उसे गढ़ा जा सकता है, उसे रंगा जा सकता है और मोड़ा जा सकता है। आज का बालक ही कल का भविष्य है। अत: बच्चों को सच्चरित्रता, उदारता, वीरता, त्याग, सत्य और शील के ऐसे संस्कार दिए जाने चाहिए, जो जीवनभर कदम-कदम पर काम आएं। वे संस्कार हमेशा उसके लिए एक अच्छे मित्र और हितैषी का काम कर सकें। संस्कार निर्माण में माता-पिता की अहं भूमिका रहती है, जैसे वक्ता के बिना सभा भवन सूना है, चंद्रमा के बिना तारों से भरा नीला आकाश सूना है वैसे ही संस्कारित कुल दीपक के बिना गृह-आंगन सूना है। घर में सुसंस्कारित संतान हो, इसके लिए माता-पिता बचपन से ही बालक-बालिकाओं में ऐसे सुंदर संस्कार प्रदान करें, ताकि उनका जीवन सुखी, संपन्न और आदर्श बन सके। किसी कवि ने कहा है-

कुंभकार वह माटी के जो, नाना आकार बनाता।
लखारा वह लाक्षा के जो, सुंदर शृंगार बनाता।
तन से गढ़कर जननी शिशु में, ममता से भरती नरता।
जनक वही जो अपने सुत में, सद्गुण संस्कार सजाता।

---

* जोधपुर में 5-6 नवम्बर, 2011 को आयोजित 'अध्यात्म, समाज एवं भ्रष्टाचार' विषयक संगोष्ठी हेतु प्रेषित निबन्ध।

संस्कार शब्द का अर्थ है- अच्छी आदत, सुंदर और सरल स्वभाव। कुल मर्यादा, शिक्षा, सभ्यता आदि को मन पर पड़ने वाला प्रभाव संस्कार कहलाता है। आचार-विचार आदि का परिष्कृत तथा उन्नत करने का कार्य संस्कार है। संस्कारों में संपूर्ण जीवन के व्यवहारों का समावेश हो जाता है। बोलना, चलना, उठना, बैठना, खाना-पीना आदि इन सभी व्यवहारों को सुधारना ही सुसंस्कार निर्माण का अर्थ है। सार यही है कि बालक का जीवन व्यवहार ऐसा हो कि जिससे किसी को कष्ट न हो।

मनोवैज्ञानिक का कथन है कि मनुष्य के व्यक्तित्व का अधिकांश भाग बचपन के कुछ महीनों में ही एक निश्चित आकार ले लेता है। इस काल में बालक पर सबसे अधिक प्रभाव माँ का पड़ता है। अतः माता ही वह शक्ति है जो अपने कोमल ममता भरे हाथों से पालने में भावी पीढ़ी का निर्माण करती है। बच्चों में प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा तथा संस्कार देने वाली माँ ही है। विश्व में जितने महान् व्यक्ति हुए हैं वे बचपन में माँ के सुसंस्कारों के प्रसाद के फलस्वरूप ही महान् बन पाए। शिवाजी को वीर और चरित्रवान उनकी माँ जीजाबाई के संस्कारों ने ही बनाया। बालक मोहनदास से महात्मा बनने के बीज बचपन में उनकी माता पुतलीबाई ने डाले। सत्यवादी हरिशचन्द्र और श्रवण कुमार के चरित्र को माता ने ही संस्कारित किया। इतिहास इन उदाहरणों से भरा पड़ा है कि कोमल मस्तिष्क पटल पर माँ द्वारा दिए गए संस्कारों से ही बालक महात्मा, संत, वीर और साहसी बन पाए हैं।

छोटा बच्चा जब पालने में झूलता था, सती मदालसा ने इस प्रकार की लोरी गाकर उसमें त्याग वैराग्य के सुसंस्कार दिए-

शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरंजनोऽसि
संसारमायापरिवर्जितोऽसि
संसारस्वप्नं त्यज मोहनिद्राम्।
मदालसा वाचमुवाच पुत्रम्।।

"ऐ पुत्र! तू शुद्ध है, कर्ममल से रहित है, बुद्ध है अर्थात् तत्त्वज्ञानी है। तू केवलज्ञान का अधिकारी है। निरंजन निराकार है। तू संसार के मायाजाल से रहित है। यह जो कुछ दिखाई दे रहा है, वह सब मायाजाल है।" "संसार सपना कोई नहीं अपना" जैसे स्वप्न में देखी हुई संपत्ति अपनी नहीं उसी प्रकार ये दिखाई देने वाले ठाट-बाट भी अपने नहीं हैं। ये सबके सब यहीं रह

जाने वाले हैं, इन्हें देखकर तू इनमें आसक्त मत बन जाना।''

माता मदालसा के इन त्याग वैराग्यमयी वचनों का बालक पर गहरा असर पड़ता था। इसलिए छोटी उम्र में ही हर बालक संसार त्यागकर मुनि बन जाता था। मदालसा के इस प्रकार सात पुत्र मुनि बन गए। तब एक दिन राजा ने मदालसा से कहा कि इस प्रकार तू अपने सभी पुत्रों को मुनि महात्मा बना देगी तो इस राज्य का संचालन कौन करेगा? राजा की भावनानुसार मदालसा ने अपने आठवें पुत्र को राजनीति की शिक्षा दी तो वह पुत्र बड़ा होकर राजा बना। यह है माता के संस्कारों का असर।

बचपन में नानी, दादी द्वारा सुनाई जाने वाली नैतिक, धार्मिक कहानियों से लेकर सामायिक व्रत, नियम, ध्यान दैनिक जीवन के आधार बनते हैं। बचपन में सुनी कहानी-कथा से मिलने वाली व्यवहार संबंधी नैतिक शिक्षा सुसंस्कार का सबसे बड़ा आधार है। इसलिए माँ बचपन में बच्चों में संस्कार की नींव डालती है। उसी की गोद में बच्चा दुनिया में अपनी आँख खोलता है। अतः माँ का व्यवहार और संस्कार ही अगली पीढ़ी के लिए प्रथम शिक्षा बनती है।

कोमल उम्र में माँ द्वारा दिए हुए संस्कार दृढ़ हो जाते हैं। कहा है- ''यन्नवे भाजने लग्नः संस्कारो नान्यथा भवेत्'' नए मिट्टी के बर्तन पर जैसा रंग लगा दिया जाए अथवा जैसा चित्र बना दिया जाए वैसा रंग या चित्र स्थिर हो जाता है। महानता के संस्कार जिसमें होते हैं, वही महान् बनता है और ऐसे संस्कार जीवन के उदयकाल से ही विकसित होने प्रारंभ हो जाते हैं, गोपालकृष्ण गोखले के बचपन की घटना इस प्रकार है:-

एक बार अध्यापक ने विद्यार्थियों से पूछा- यदि तुम्हें कहीं एक हीरा पड़ा मिल जाए तो तुम क्या करोगे?

एक ने कहा- मैं उसे बेचकर कार खरीदूँगा।

दूसरे ने कहा कि- मैं बहुत बड़ा बंगला बना डालूँगा और आराम करूँगा।

तीसरे ने अपने पिता को वह हीरा देने की बात कही। अध्यापक के मन को विद्यार्थियों की मनोवृत्ति से संतोष नहीं हुआ। वह एक-एक विद्यार्थी से यह प्रश्न पूछता गया। अंत में एक विद्यार्थी से पूछा गया तो उसने उत्तर दिया

कि मैं सबसे पहले उसके मालिक का पता लगाऊँगा।

"समझ लो, उसके मालिक का पता नहीं लगा तो?" "तो मैं उसे बेच डालूँगा और जो रुपया मिलेगा उसका आधा गरीबों में बांट दूंगा और आधा किसी सेवा फंड में जमा करा दूँगा।" अध्यापक ने विद्यार्थी की पीठ थपथपाई। बचपन के ये संस्कार ही आगे जाकर उसे महान् सत्यवादी और देशभक्त 'गोपालकृष्ण गोखले' के रूप में चमका सके।

माता अपनी संतान के भविष्य का निर्माण कब से करती है? एक समाजशास्त्री ने कहा, जिस दिन वह उसके गर्भ में आता है, उसी दिन से गर्भ से ही माता के अच्छे व बुरे विचारों की स्याही से संतान के संस्कारों का लेख लिखना आरंभ हो जाता है। माता का विचार आचार एवं व्यवहार ही संतान की जीवन रेखाओं का निर्माण करता है।

गर्भस्थ बालक भी संस्कारों को ग्रहण करता है। भगवतीसूत्र शतक-1, उद्देशक-1 तथा शतक 24 में गौतम स्वामी भगवान से पूछते हैं- "हे! भगवन्! गर्भस्थ बालक मर कर कहाँ जाता है।" भगवान फरमाते हैं- "हे! गौतम! गर्भस्थ बालक मर जाए तो 15 घर में (10 भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी पहली नरक और पहला-दूसरा देवलोक में) जा सकता है।"

गौतम स्वामी ने प्रति प्रश्न किया- "हे! भगवन्! गर्भस्थ बालक दूसरे देवलोक में कैसे जा सकता है? वह कुछ धर्म कार्य तो कर नहीं सकता है।" गर्भस्थ जीव की माता व्याख्यान सुनने जाती है तब उस जीव की भी वीर्यलब्धि प्रबल होती है। वह भी सुनते-सुनते आध्यात्मिक रुचि से युक्त हो जाता है। वह जीव अगर काल कर जाए तो मरकर दूसरे देवलोक में उत्पन्न होता है।

भारतीय मनीषा ने अनादिकाल से ही नारी की महिमा-गरिमा को समझा है और उसे यथोचित सम्मान भी दिया है। इसीलिए उनके द्वारा खुलकर यह घोषणा की गई- 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।' अर्थात् जहाँ नारी की पूजा की जाती है, वहाँ देवता रमण करते हैं। वह देवत्व की जीवन्त प्रतिमा है। आज मनुष्य का अपना कहलाने योग्य जो कुछ भी है वह सब नारी के असीम अनुदान का ही प्रतिफल है। वह समस्त मानव की सत्ता की सृजनकर्त्री जननी है। भ्रूण रूपी जीव को अपनी उदरगुहा में पोषित कर और परिपक्व बनाकर, असाध्य प्रसव वेदना सहकर वही उसके बंधन खोलती है।

संतान के लिए भी नारी जन्म के पूर्व से लेकर जीवन पर्यन्त शरीर, मन तथा श्रम को मुक्त हस्त से लुटाती रहती है। इस आधार पर नारी सच्चे अर्थों में त्याग, सर्जन और बलिदान की देवी कही जा सकती है। नारी सचमुच पिता के कुल तथा पति के कुल दोनों का समन्वय करती है। एक बहन के रूप में नारी भाई को जिन दिव्य आशीषों, दुआओं और अरमानों से सुरभित करती है, उस पवित्र स्नेह संबंध की दुनिया में कोई मिसाल नहीं है। एक पति के रूप में पुरुष को अपना सर्वस्व समर्पण करने की कला में नारी अपना सानी नहीं रखती। अपने कष्टों और प्रतिदानों की परवाह किए बिना भी पति की अनन्य सहचरी होती है। उसके सुख-दुःख की सहभागिनी होकर वह उसके कष्टों में दुःख अनुभव करती है।

जैन इतिहास लेखन हेतु विद्वान् की आवश्यकता

जैन इतिहास समिति एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा प्रकाशित 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' के चार भाग विभिन्न विश्वविद्यालयों में शोध संदर्भ ग्रन्थों के रूप में अध्ययन किए जाते हैं तथा इन पर प्रतियोगिताएँ भी आयोजित हुई हैं। पाँचवें भाग के प्रकाशन की सर्वत्र आवश्यकता अनुभव की जा रही है। पाँचवें भाग हेतु सामग्री संकलित भी है, जिसके आधार पर पूर्व की भाँति मौलिक इतिहास के पंचम भाग का आलेखन एवं सम्पादन करना है। इच्छुक विद्वान् जो जैन धर्म, संस्कृत-प्राकृत, पाण्डुलिपि पठन एवं इतिहास का ज्ञाता हो वह अपना जीवनवृत्त (Bio-data) पारिश्रमिक/वेतन सुविधा आदि के संकेत के साथ निम्नांकित पते पर शीघ्र प्रेषित करें। यदि किसी योग्य विद्वान् का नाम एवं पता आप प्रेषित कर सकें तो उसका भी स्वागत है।

सम्पर्क सूत्रः-

पी. एस. सुराणा (अध्यक्ष - सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल)
सुराणा एण्ड सुराणा
61-63, डॉ. राधाकृष्णन रोड़, मैलापुर, चेन्नई - 600004
फोन : 09884430000

प्रेरक-प्रसंग

झूठ क्यों बोलूँ

अनिलशाह अपनी एक आप बीती इन शब्दों में लिखते हैं-"एक बार मैं एस.टी. की बस में बैठा हुआ बड़ौदा से गोधरा जा रहा था। वहीं एक सरकारी अधिकारी भी अपने बाल-बच्चों के साथ बैठा था। उसका एक बच्चा पाँच वर्ष का था, किन्तु अधिकारी महोदय ने उसकी आधी टिकट भी नहीं कटवाई थी। कंडक्टर को शंका हुई और उसने उस बच्चे की उम्र पूछी तो अधिकारी महोदय ने उस बच्चे की कल्पित जन्म तारीख बता दी। उसका आशय सिर्फ यही था कि कंडक्टर उस तारीख से जान जाय कि बच्चे की उम्र तीन वर्ष से काफी अधिक है, कंडक्टर कुछ बोल न सका।

थोड़ी देर बाद ही गाँव की एक बाई बस में चढ़ी। उसके साथ एक बच्चा था जो तीन वर्ष से अधिक मालूम होता था। कंडक्टर ने उस बच्चे की उम्र के बारे में पूछा तो उसने बच्चे की उम्र चार वर्ष बताई। कंडक्टर ने उसकी आधी टिकट काट उस गरीब बाई को दे दी और अपनी सीट पर जाकर बैठ गया।

इसके बाद मेरी बगल में ही बैठी एक दूसरी महिला ने उस गरीब बाई से कहा-"बहिन अपने बच्चे की उम्र तुमने तीन वर्ष के भीतर कही होती, तो टिकट के पैसे बच जाते और खाने-पीने के काम आते।" बाई के कपड़े और सामान से ज्ञात हो रहा था कि सचमुच वह बहुत गरीब है, फिर भी पूछने वाली महिला को उत्तर दिया, उससे मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ और मैं आज तक उन शब्दों को भूल नहीं पाया। उसने उत्तर दिया था-" बहन, गये बरस से ही तीन साल पूरे होकर इसे चौथा लगा है, तब झूठ क्यों बोलूँ?" अपन ही यदि झूठ बोलेंगीं, तो अपने बाल-बच्चे सच बोलना कैसे सीखेंगे?"

यह संवाद आज भी मेरे ज़हन में गूंज रहा है। यह संवाद उन अधिकारी महाशय ने भी सुना और बस में बैठे अन्य मुसाफिरों ने भी सुना। आगे के सफर में अधिकारी महाशय बस के बाहर ही देखते रहे और शेष मुसाफिर कभी अधिकारी को देखते तो कभी उस गरीब महिला की ओर।

-संकलनकर्ता- श्री जे.सी.कटारिया 'एडवोकेट'
4/2, पोन्नापन लेन पार्क टाउन, चेन्नई-600003 (तमिलनाडू)

प्रेरक-प्रसंग

सर्वश्रेष्ठ शासक

श्री शंकरलाल चण्डालिया

प्रियदर्शी सम्राट् अशोक के जन्मदिन का महोत्सव मनाया जा रहा था। सभी प्रदेशों के शासक सम्राट् की सेवा में उपहार लेकर उपस्थित हुए थे। सम्राट् की ओर से भी 'सर्वश्रेष्ठ शासक' का पुरस्कार देने की घोषणा हो चुकी थी। कौन सर्वश्रेष्ठ शासक है, इसका निर्णय हो रहा था।

राजसभा में सम्राट् का अभिवादन करके उत्तर सीमान्त के प्रान्तपति ने कहा- मैंने प्रदेश में राज्य की आय में तिगुनी वृद्धि कर ली है।

दक्षिण प्रान्त के शासक ने निवेदन किया-"मेरे प्रान्त में इस वर्ष राजकोश को दुगुना सोना प्राप्त हुआ है।" पूर्वीय प्रदेश के अधिकारी ने गौरव के साथ कहना प्रारम्भ किया-"पूर्वी सीमान्त के समस्त उपद्रवी तत्त्वों को कुचलकर राज्य शासन को निष्कण्टक बना दिया है मैंने। राज्य के विरुद्ध अब कोई सिर उठाने का साहस नहीं करेगा। एक अन्य शासक भी बोल उठे-"प्रजा से प्राप्त होने वाली आय में वृद्धि हुई है। सेवकों के वेतन घटा देने से राज्य का व्यय कम हो गया है। आय के अन्य स्रोत भी चालू कर दिये गये हैं।"

अन्त में उठे मगध के प्रान्त पति। सम्राट् को अभिवादन करके नम्रतापूर्वक बोले- "श्रीमन्! मैं क्या निवेदन करूँ आधे से भी कम धन राशि राज्यकोष में दे पाया हूँ। प्रजा के कर हटा दिये हैं, सैनिकों तथा कर्मचारी वर्ग के वेतन में वृद्धि हो गई है। राज्य में स्थान-स्थान पर चिकित्सालय बालकों की शिक्षा के लिए पाठशालाएँ खोली गई है और कोई विशेष कार्य तो मुझसे नहीं हो पाया है।"

प्रियदर्शी सम्राट् आसन से उठे और बड़े ही गम्भीर मुद्रा में बोल पड़े। मुझे प्रजा का शोषण करके प्राप्त होने वाली स्वर्ण राशि नहीं चाहिए। मेरी इच्छा है कि प्रजा को अधिक से अधिक सुख-सुविधा दी जाय।

मगध के शासक सर्वश्रेष्ठ शासक घोषित किये जाते हैं। यह पुरस्कार उनका ही नहीं, हमारे शासन का गौरव बढ़ाएगा तथा अन्य प्रान्तीय शासकों को भी प्रेरणा देगा। "सम्राट की घोषणा पर सभा मंडप जय-जयकार के तुमुल घोष से गूँज उठा।

-अध्यक्ष-श्री महावीर स्वाध्याय केन्द्र, कुंवारिया (राज.)

युवा-स्तम्भ

दान के पर्याय भामाशाह

डॉ. दिलीप धींग

राणा उदयसिंह और प्रताप के कालखण्ड में मेवाड़ राज्य की आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय थी। बाहरी आक्रमणों से मेवाड़ के सारे खजाने खाली हो चुके थे और आन्तरिक स्थिति बिगड़ चुकी थी। मुगलों के संघर्ष काल में सुरक्षा और मुगलों को रसद न पहुँचे, इस दृष्टि से प्रताप के आदेशानुसार मेवाड़ क्षेत्र की बस्तियों को खाली करके उन्हें जंगलों और पहाड़ों में स्थानान्तरित कर दिया गया था और मैदानी क्षेत्र में खेती न करने के आदेश प्रसारित किये गये थे। इस दौरान कई व्यापारिक मार्ग भी बन्द करने पड़े थे। इन कार्यवाहियों से मेवाड़ राज्य की आय के स्रोत कम हो गये थे। इस सम्बन्ध में राजस्थान साहित्य अकादमी के पूर्व सचिव डॉ. लक्ष्मीनारायण नन्दवाना ने लिखा कि ''मुगलों के युद्धोन्माद से मेवाड़ की आर्थिक व सैन्य स्थिति बिगड़ गई, राजकोष खाली हो गया, धन-जन की हानि हो गई और ऐसी विषम स्थिति में भामाशाह ने अपने पास का सम्पूर्ण धन महाराणा प्रताप को मेवाड़ की अस्तित्व रक्षा के लिए अर्पित कर दिया। त्याग व दान की भामाशाह जीवन्त मूर्ति थे। जैन धर्मावलम्बी उदार धार्मिक सहिष्णु भामाशाह और उनके अनुज ताराचन्द ने मेवाड़ के गौरव और सम्मान को अक्षुण्ण बनाए रखने में अपनी कारगर भूमिका का निर्वाह किया है।''

संकटकाल में देश की रक्षार्थ भामाशाह द्वारा अपनी विपुल निजी सम्पत्ति महाराणा को समर्पित करने के कारण मेवाड़ में इनके वंशज का सर्वप्रथम तिलक किया जाता रहा है। यही नहीं, उनके पुत्र जीवाशाह और पौत्र अक्षयराज को भी मेवाड़ का प्रधानमंत्री बनाया गया था। इस प्रकार एक ही वंश की चार पीढ़ियों ने निरन्तर निष्ठापूर्वक देश की सेवा की।

भामाशाह के जीवन के अनेक प्रसंग उनकी दानशीलता को सिद्ध करते हैं। वे उनके जीवनकाल में ही उदार दानवीर के रूप में प्रसिद्ध हो चुके थे। वे मुक्त हस्त से कवियों, जरूरतमंदों और अन्य लोगों को धन दिया करते थे। कला और साहित्य को उन्होंने और उनके भाई ताराचन्द ने बहुत प्रोत्साहित किया। उन्होंने कई बार महाजनों को भोज दिया।

उन्होंने कई बार बावनियाँ (बावन गाँव) जिमाई और कई बार ब्राह्मणों को चौरासियाँ जिमाई। डॉ. मोहनलाल जिज्ञासु ने लिखा है-"एक बार भामाशाह ने प्रताप को प्रीतिभोज पर आमंत्रित किया, जिसमें सब ओसवालों को न्यौता दिया था। इसमें निमंत्रण पाकर कवि शंकर बारहठ भी सम्मिलित हुए थे। भामाशाह ने कवि को इस अवसर पर एक अमूल्य रत्न भेंट किया।" इस सम्बन्ध में कवि का एक दोहा प्रचलित है-

भोमे जग जिमाड़ियो, नेवतरिया नव खण्ड।
सिर तपिया वासक तण, काजलियो ब्रह्मण्ड।।

मेवाड़ के कुछ लोगों व सामन्तों को राज्य की आर्थिक विपन्नता की आशंका थी। उनकी आशंका का निवारण करने के लिए एक बार भामाशाह ने उदयपुर में फतहसागर झील के किनारे पर्वत पर मुख्य सामन्तों को मंत्रणा के लिए बुलाया और भोज दिया। भोजन पत्तल-दोने में करवाया गया। भामाशाह ने उस भोज में प्रत्येक सामन्त के एक-एक दोने में असली मोती परोसे और यह सन्देश दिया कि देश के लिए धन का अभाव नहीं होने दिया जाएगा। भामाशाह द्वारा मोती परोसे जाने के कारण वह पर्वतीय स्थल आज भी मोती मगरी के नाम से जाना जाता है, जहाँ महाराणा प्रताप स्मारक बना हुआ है।

इतिहास साक्षी है कि भामाशाह की दानवीरता उनके जीवनकाल में ही चर्चित, प्रशंसित और प्रसिद्ध हो चुकी थी। इतिहासकार अगरचन्द नाहटा के संग्रंह में सुरक्षित भामाशाह सम्बन्धित एक गीत की आखिरी दो पंक्तियों से भी यह बात सिद्ध होती है-

भारमलोत तणो भर मंडल, स सबुद्ध अचल जगै संसार।
सारंग जबड़ बे सांभ रिवा, दीठौ भामौ जग दातार।।

इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड ने लिखा कि धन के अभाव में प्रताप द्वारा स्वतंत्रता का संघर्ष जारी रखना संभव नहीं था और वे देश छोड़कर अरावली की पर्वतमालाओं को पार कर सिंध तक पहुँच गये थे। उन विकट घड़ियों में भामाशाह ने प्रताप को अपना इतना निजी धन समर्पित किया, जिससे पच्चीस हजार सैनिकों/व्यक्तियों का बारह वर्षों तक बिना ब्याज खर्च चल सके। वह धन ऊँटों, गाड़ियों और घोड़ों पर लाद कर लाया गया था। डॉ. महेन्द्र भानावत ने लिखा कि "है कोई ऐसा उदाहरण अन्यत्र, न केवल भारत अपितु पूरे विश्व इतिहास में, जब किसी

मंत्री ने देश बचाने के खातिर देश छोड़कर जाने वाले अपने स्वामी को अपने द्वारा अर्जित इतनी बड़ी राशि का एक मुश्त हस्तान्तरण कर दिया हो।'' रामवल्लभ सोमानी ने लिखा-''अगर यथासमय धन की सहायता भामाशाह परिवार नहीं देता तो संभवतः प्रताप मेवाड़ छोड़कर चले जाते।'' यहाँ का इतिहास कुछ और ही होता।''

भामाशाह के जीवन और इतिहास का अध्ययन करने पर दिन के उजाले की तरह यह स्पष्ट हो जाता है कि भामाशाह ने उनकी पैतृक व स्वअर्जित सम्पत्ति ही प्रताप को समर्पित की थी। यह एक तथ्य है कि प्रत्येक कालखण्ड में जैन धर्मानुयायी उदार और दानशील रहे हैं। भामाशाह महान देशभक्त और उच्च चरित्र के धनी महापुरुष थे। राष्ट्र की सेवा में उन्होंने तन, मन, धन जीवन और सर्वस्व समर्पित कर दिया था। उनकी दानशीलता का मूलाधार उन्हें विरासत में प्राप्त संस्कार थे, जो जैन धर्म से उन्हें मिले।

भामाशाह अपने समय के समर्थ, सम्पन्न और धनी व्यक्ति थे। उनके पिता भारमल्ल कावड़िया भी धनी, कर्तव्यनिष्ठ और देशभक्त थे। आगम-ग्रन्थों में स्वर्ण सिक्कों के लिए केवड़िक, केवड़िग जैसे शब्दों का प्रयोग मिलता है। यह बहुत संभव है कि केवड़िक सिक्कों की प्रचुरता के कारण 'कावड़िया' गोत्र का उद्‌गम हुआ हो। भारमल्ल की अकूत आर्थिक सामर्थ्य और निष्ठा के कारण ही राणा सांगा ने उन्हें रणथम्भोर का किलेदार बनाया था। जब तक भारमल्ल रणथम्भोर के किलेदार रहे, तब तक रणथम्भोर पर मुगलों का आधिपत्य नहीं हुआ। राणा उदयसिंह ने भारमल्ल को 1553 ई. में एक लाख के पट्टे की जागीरी दी, उसकी एक वजह भारमल्ल की सुदृढ़ आर्थिक सामर्थ्य भी थी।

नागपुरीय लुंकागच्छ की पट्टावली में भारमल्ल को अठारह करोड़ की धनराशि का स्वामी बताया गया है। स्वयं भामाशाह को उनके विवाह के उपलक्ष्य में अठारह करोड़ की सम्पत्ति प्राप्त हुई थी। किसी धनी-मानी व्यक्ति को ही विवाह के उपलक्ष्य में इतनी विपुल सम्पदा प्राप्त हो सकती है। भामा नाम के साथ 'शाह' शब्द का प्रयोग भी उनकी सम्पन्नता और उदारता का द्योतक है।

भामाशाह का अपना स्वतन्त्र रत्न व्यवसाय भी था। वे हीरे

जवाहरत के माने हुए पारखी थे। पास और दूर दराज के जौहरियों, सेठों और व्यापारियों से उनके अच्छे व्यापारिक रिश्ते थे। चित्तौड़ के किले पर मोती बाजार के व्यापारी भी भामाशाह से हीरे जवाहरत खरीद कर बेचते थे। किले पर भामाशाह की हवेली देखने से पता चलता है कि उसके तलघर में और अन्य जगहों पर अनेक खजाने थे। यहाँ तक कि हवेली की छत के नीचे गोलाई में भीतर की ओर बनी पुतलियों में भी रत्न, जवाहर और मोती भरे रहते थे। स्पष्ट है कि भामाशाह विपुल सम्पत्ति के स्वामी थे। लेकिन उन्होंने अपने आपको उस धन का न्यासी ही समझा और आवश्यकता पड़ने पर सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

इतिहासकार डॉ. राजेन्द्र प्रकाश भटनागर ने लिखा- "भामाशाह ने मेवाड़ के दुर्दिनों के काल में साहस और धैर्य से काम लेते हुए महाराणा प्रताप के एक आदर्श विश्वसनीय मित्र और सहयोगी के रूप में अपनी निजी अपार सम्पति भेंटकर उच्चकोटि की देशभक्ति और स्वामीभक्ति का परिचय दिया, जो अन्यत्र दुर्लभ है।" उदयपुर में मोती मगरी स्थित भामाशाह की प्रतिमा के साथ लगे परिचय में लिखा है- "भामाशाह अपने उज्ज्वल चरित्र, आदर्श विचार, देशभक्ति, सुवित्त प्रशासक, चतुर राजनीतिज्ञ, विश्वसनीय सलाहकार, सक्षम व दूरदर्शी व्यवस्थापक, साहसी एवं कुशल योद्धा, बलिदानी, दानवीर एवं देशभक्त के रूप में पहचाने जाते हैं।"

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर में संगृहीत एक प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ (ग्रन्थांक 35464) में लिखा है- "राणाजी श्री प्रतापसिंघ जी नौ विषामाहे पाति साहजी री फौजा जोर दबाया। षवण नौ क्यूँ ही पहुँचे नहीं। तद दीवाण जी कह्यो। हुँ अहमदानगर रै पातिसाहै तोरे जासा। तरै सा भामै कह्यो। बारा बरस ताँई पाँच हजार घोड़ा नौ तेल ने षावण ताई चाहीजसी, सौ हुँ दावै ही तठा सु देसुँ। दीवाण इसी मत विचारौ।" इसमें भामाशाह ने स्वयं का धन महाराणा को देने का वादा किया है। इतिहासकार डॉ. राजेन्द्र प्रकाश भटनागर ने लिखा- "भामाशाह ने अपनी स्वयं की अर्जित पारिवारिक विशाल सम्पत्ति को ले जाकर महाराणा प्रताप को सहर्ष भेंट कर दिया था और उसे मेंवाड़ के पुनः उद्धार-स्वतन्त्र करने के लिए प्रेरित किया। देशभक्त, कर्मवीर, मेवाड़ उद्धारक भामाशाह का नाम इसी कारण अमर हो गया।"

भामाशाह दानवीर तो थे ही, युद्धवीर भी थे। वे त्याग और तलवार, दोनों के धनी थे। उनके पिता भारमल्ल कावड़िया तथा अनुज ताराचन्द देश के लिए लड़ते हुए दो अलग-अलग युद्धों में शहीद हुए थे। इतिहास प्रसिद्ध हल्दीघाटी युद्ध में भामाशाह और ताराचन्द ने सेनापति का दायित्व निभाया। जिस मोर्चे पर वे थे, वहाँ से मुगल सेना पाँच-छः कोस तक भागती रही। युद्ध में घायल प्रताप को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने में भी इन दोनों भाइयों की अहम भूमिका रही। इतिहास में 'मेराथन' के नाम से प्रसिद्ध दिवेर युद्ध विजय में भी भामाशाह और उनके भ्राता ताराचन्द की प्रमुख भूमिका रही थी।

"कम्मे सूरा सो धम्मे सूरा" की उक्ति को साकार करने वाले भामाशाह का धर्मप्रेम भी अप्रतिम था। वे जिनधर्मानुरागी थे। उन्होंने लाखों लोगों को शाकाहारी व व्यसनमुक्त बनाकर अहिंसा धर्म से जोड़ा। साथ ही वे उदार धार्मिक सहिष्णु थे। देश सेवा के साथ वे धर्माराधना और धर्म प्रचार में लगे रहे। अकबर के वैभवशाली जीवन के प्रलोभन को ठुकराकर उन्होंने सादगी, संयम, त्याग और संघर्ष का जीवन जिया।

इतिहासकारों ने लिखा कि भामाशाह के चरित्र, गुणों और कार्यों की विशेषताओं का वर्णन इतिहास का एक अविस्मरणीय पृष्ठ है। डॉ. कालिकारंजन कानूनगो ने कहा- "सम्पूर्ण राजपूताने में भामाशाह का नाम उतने ही प्रेम और सम्मान के साथ स्मरण किया जाता है, जिस प्रकार महाराणा प्रताप का।" हिन्दी के महान कवि बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कविता में लिखा कि जिस धन के लिए पति-पत्नी, पिता-पुत्र, भाई-भाई और मित्र-मित्र लड़-झगड़ कर सम्बन्ध विच्छेद कर देते हैं, उस धन को भामाशाह ने वणिक् होते हुए भी बिना गिने देश की रक्षार्थ समर्पित कर दिया। सोलहवीं सदी से आज तक देश दुनिया में भामाशाह दान, दानवीरता और उदारता के पर्याय बने हुए हैं। वे हमेशा दान और दानशीलता के पर्याय बने रहेंगे। कवि पं. नरेन्द्र मिश्र के शब्दों के साथ आलेख को विराम देता हूँ-

वह दानवीर इस मेवाड़ पगड़ी का मान बन गया है।
सर्वस्व त्याग का कालजयी पावन सम्मान बन गया है।।

-बम्बोरा-313706, उदयपुर (राज.)

संगोष्ठी आलेख

चिकित्सा में भ्रष्टाचार*

डॉ. चंचलमल चोरडिया

भ्रष्टाचार क्या है?

वह सोच, प्रवृत्ति एवं आचरण भ्रष्टाचार की परिधि में आता है जो प्रकृति के सनातन सिद्धान्तों के विपरीत हो, जो अकरणीय, दण्डनीय, अशोभनीय, अचिन्तनीय हो। जिस प्रकार के आचरण की हम दूसरों से अपने प्रति अपेक्षा नहीं रखते हों, जिस आचरण से संबंधित दोनों पक्षों के व्यक्तियों में तनाव, चिंता, भय, अशांति, परेशानियाँ पैदा होने की संभावना हो; जिसको करने, कराने और अनुमोदन करने से हमारे मन, वचन और काया विकृत होती हो, हमारी क्षमताओं का अवमूल्यन अथवा दुरुपयोग होता हो, मानवीय गुण खण्डित होते हों, ऐसा आचरण भी प्रत्यक्ष परोक्ष रूप से सम्यक् आचरण की श्रेणी में नहीं आता। ये सब भ्रष्टाचार का पोषण करते हैं। आध्यात्मिक भाषा में कहें तो हिंसा, झूठ, चोरी आदि 18 पाप एवं 20 आस्रवों का सेवन भ्रष्टाचार की श्रेणी में आते हैं।

चिकित्सा क्यों?

चिकित्सा की चर्चा करने से पूर्व हमें यह जानना आवश्यक है कि रोग क्या है? रोग क्यों होता है? अज्ञान, अविवेक, असजगता ही सभी समस्याओं का मूल होता है। सभी रोगों का प्रमुख कारण है स्वास्थ्य से संबंधित नियमों का सही ज्ञान नहीं होना। रोग का कारण है विकारयुक्त अवस्था। जितने ज्यादा विकार उतने ज्यादा रोग और जितने विकार कम, उतना ही स्वास्थ्य अच्छा। विकार का मतलब अनुपयोगी, अनावश्यक, विजातीय तत्त्वों की उपस्थिति। जब ये विकार शरीर में होते हैं तो शरीर रोगी बन जाता है। परन्तु जब ये विकार, मन, भावों और आत्मा में होते हैं तो क्रमशः मन, भाव और आत्मा विकारी अथवा अस्वस्थ कहलाते हैं। मन, भाव और आत्मा के विकारों का उपचार तो सच्चे सद्गुरु के मार्गदर्शन में संयमित, नियमित, परिमित जीवन शैली द्वारा किया

* जोधपुर में 5-6 नवम्बर, 2011 को आयोजित 'अध्यात्म, समाज एवं भ्रष्टाचार' विषयक संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

जा सकता है, जहाँ भ्रष्टाचार की संभावना प्रायः नहीं रहती। अपेक्षा है निस्पृही, हितचिन्तक, अनुभवी, ज्ञानी सद्गुरु के मार्ग-दर्शन की, जो अपने सम्पर्क में आने वालों को शांत, संतोषी, निर्भय, धैर्यवान, तनाव मुक्त बनाने की क्षमता रखते हों। ये दुर्गुण ही प्रायः मन, भाव और आत्मा को विकारी अर्थात रोगी बनाते हैं।

आज अधिकांश चिकित्सा पद्धतियाँ मात्र शारीरिक रोगों को ही रोग मानकर एवं उनमें राहत दिलाकर ही अपने प्रभावशाली उपचारों का दावा करती हैं। मन, भाव और आत्मा के विकारों की तरफ प्रायः जनसाधारण का ध्यान ही नहीं जाता और न उनकी शुद्धि को अपेक्षित प्राथमिकता ही दी जाती है। आजकल प्रायः शरीर को रोग-मुक्त करने के लिए मानवीय गुणों का हनन करते भी संकोच नहीं होता। चिकित्सा में अहिंसा की उपेक्षा उसी का दुष्परिणाम है। चिकित्सा में हिंसा को प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से मान्यता भ्रष्टता की ही प्रतीक है। मानसिक, भावात्मक और आत्मिक रोगों का शरीर पर प्रभाव पड़ता है। अतः चिकित्सा में उनकी उपेक्षा बुद्धिमत्ता नहीं हो सकती।

शारीरिक चिकित्सा को प्राथमिकता क्यों?

रोग चाहे शारीरिक हो या मानसिक अथवा आत्मिक, उसका प्रभाव तो शरीर पर ही पड़ता है। अभिव्यक्ति तो शरीर के माध्यम से ही होती है, क्योंकि आत्मा तो अरूपी है तथा मन और भावों को भी हम चर्म चक्षुओं से देखने में असमर्थ होते हैं। वास्तव में विकार मुक्त अवस्था ही अच्छे स्वास्थ्य का प्रतीक होती है। स्वस्थता तन, मन और आत्मोत्साह के समन्वय का नाम है। जब शरीर, मन, इन्द्रियाँ और आत्मा ताल से ताल मिलाकर सन्तुलन से कार्य करते हैं, तब ही अच्छा स्वास्थ्य कहलाता है। अर्थात् शरीर की समस्त प्रणालियाँ एवं सभी अवयव स्वतन्त्रापूर्वक अपना-अपना कार्य करें, किसी के भी कार्य में, किसी भी प्रकार का अवरोध, आलस्य अथवा निष्क्रियता न हो तथा उनको चलाने हेतु किसी बाह्य दवा अथवा उपकरणों की आवश्यकता न पड़े। मन और पाँचों इन्द्रियाँ सशक्त हों, स्मरण शक्ति अच्छी हो, क्षमताओं का ज्ञान हो, विवेक जागृत हो, ऐसी अवस्था स्वस्थता की सूचक है। इसके विपरीत की स्थिति रोगावस्था कहलाती है। रोग से मुक्त करने की विधि चिकित्सा कहलाती है। यहाँ शारीरिक रोग की चिकित्सा में होने वाली भ्रष्टता पर ही

चिकित्सा में भ्रष्टता

जब कभी रोग की स्थिति उत्पन्न होती है तो व्यक्ति एवं उसके परिजनों का प्रयास अपने सामर्थ्य के अनुसार रोगी की चिकित्सा करवाकर रोग से तुरन्त राहत पाने का होता है। उसके लिए उसे किसी न किसी चिकित्सक और चिकित्सा पद्धति का आलम्बन लेना पड़ता है। जिससे भी उपचार करवाता है उस चिकित्सक की भावना को प्राथमिकता देनी पड़ती है। रोगी की उन मजबूरियों, परेशानियों, असहनशीलता का भ्रष्ट चिकित्सक लाभ उठा लेते हैं। न चाहते हुए भी रोगी द्वारा भ्रष्टता को प्रोत्साहन देना पड़ता है, जिसके पीछे निम्न चन्द परिस्थितियाँ प्राय: प्रमुख होती है।

1. **अज्ञान**– आधुनिक चिकित्सा को ही प्रभावशाली मानना। प्रभावशाली अन्य चिकित्सा पद्धतियों के प्रति उपेक्षा भाव ही चिकित्सा में भ्रष्टाचार का मुख्य कारण है।
2. चिकित्सा में निदान, उपचार के बारे में अनुप्रेक्षा, सजगता एवं विवेक का अभाव होना।
3. **विवशता**– दुर्घटना के समय, मारणांतिक असाध्य रोग होने की स्थिति में अथवा विशेष प्रकार की शल्य चिकित्सा के समय संबंधित चिकित्सक से उपचार उसकी विवशता ही होती है।
4. **उपलब्धता**– जहाँ अन्य दूसरा चिकित्सक अथवा अन्य चिकित्सा सुविधा सहजता से उपलब्ध न हो।
5. **अधीरता**– रोगी में रोग को सहन करने की शक्ति का अभाव होता है और जब वह चिकित्सक के सामने गिड़गिड़ाने लगता है, तो भ्रष्ट चिकित्सक उसकी मजबूरियों का लाभ उठा लेता है। आज अधिकांश सिजेरियन उसी का दुष्परिणाम है।
6. **डॉक्टरों के प्रति अंधविश्वास**– भीड़ एवं भ्रामक विज्ञापनों से प्रभावित। रोग होने की अवस्था में रोग की जांच करवाने पर कभी-कभी डॉ. द्वारा मृत्यु का भय दिखाने पर।
7. **सरकारी नीतियां**– मान्यता प्राप्त चिकित्सक के ही उपचार व्यय को सरकार द्वारा मान्य करना। आधुनिक चिकित्सा को ही मान्यता देना। अन्य चिकित्सा पद्धति को मान्य न करना।

8. रोगी का आधुनिक चिकित्सा पद्धति पर अनावश्यक अधिक विश्वास होना। साधारण से रोगों में जाँच कराना।
9. समय बचाने हेतु योजनाबद्ध-नियमानुसार कार्य न करना।
10. चिकित्सक एवं चिकित्सा सेवाओं में सुविधा पाने के लिए।
11. अन्य चिकित्सा पद्धतियों के अनुभवी चिकित्सकों का अभाव।

चिकित्सकों द्वारा भ्रष्टता के क्षेत्र

1. सरकारी अथवा अन्य अस्पतालों में कार्यरत चिकित्सकों का अस्पताल और अपने घर में रोगी के साथ व्यवहार में अन्तर।
2. अनावश्यक परीक्षण करवाना।
3. दवाओं का निर्धारण करते समय स्वार्थवश दवा कंपनियों के हितों को प्राथमिकता देना। ऐसी दवा लिखना जो अन्यत्र उपलब्ध न हो।
4. निर्धारित प्रयोगशालाओं के परीक्षणों को ही मान्य करना।
5. अनावश्यक शल्य चिकित्सा - रोगी की जांच करवाना।
6. चिकित्सा के फर्जी प्रमाण देना।
7. दवा कंपनियों द्वारा दलाली के रूप में प्रत्यक्ष-परोक्ष लाभ प्राप्त करना।
8. डॉक्टर का अहं-
    1. अन्य डॉक्टरों से परामर्श न करना।
    2. रोगी की शंकाओं का सम्यक् समाधान न करना।
    3. रोगी को अपनी प्रयोगशाला बनाना।
    4. रोगी को अनावश्यक ऑक्सीजन अथवा वेंटीलेटर पर रखकर स्वार्थ पूर्ति करना।
    5. दुष्प्रभावों की उपेक्षा कर राहत हेतु भारी दवाओं का सेवन कराना।
    6. रोगी की अंध श्रद्धा का अनावश्यक लाभ उठाना।
9. रोगी का उसकी क्षमताओं का पूर्ण उपयोग करने हेतु सही मार्गदर्शन न करना।
10. अन्य चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सकों में आत्म-विश्वास का अभाव।
11. निःशुल्क चिकित्सा शिविरों के पीछे चिकित्सकों की रोगियों से सम्पर्क बढ़ाने की भावना।

दवा कम्पनियों की भ्रष्टाचार में भूमिका

चिकित्सकों को आकर्षक प्रलोभन देकर मन चाहे दामों में अपने उत्पादनों की खपत बढ़ाना, अधिवेशनों को आयोजित करना, विक्रय न होने वाले उत्पादों को बिकवाना, डॉक्टर के मन्तव्यों का भ्रामक प्रचार करना। भ्रामक एवं लुभावने विज्ञापनों द्वारा अपने उत्पादों का विक्रय बढ़ाना।

स्वास्थ्य मंत्रालय की भूमिका

भ्रष्टाचार हेतु स्वास्थ्य मंत्रालय की नीतियों एवं कार्य प्रणाली की अहं भूमिका होती है। प्रजा के स्वास्थ्य की सुरक्षा में स्वास्थ्य मंत्रालय पूर्ण रूप से असफल रहा है। वहाँ भी भ्रष्टाचार के कारण व्यक्तिगत स्वार्थ प्रमुख है। मंत्रालयों में आपसी समन्वय एवं राष्ट्र की प्राथमिकताओं के बारे में दीर्घ दृष्टि नहीं है। परिणामस्वरूप खेती में हानिकारक रासायनिक खाद एवं कीटनाशक दवाओं का उपयोग धड़ल्ले से हो रहा है एवं प्रजा विषाक्त अन्न खाकर रोग ग्रस्त हो रही है। मनोरंजन के नाम पर काम-वासना बढ़ाने वाले दृश्यों को प्रसारित कर प्रजा को मानसिक एवं भावात्मक रूप से विकारी बनाने का षड्यंत्र चल रहा है। मिलावट एवं दवाओं से पड़ने वाले दुष्प्रभावों पर कठोर कानूनी अंकुश नहीं है। विदेशों में प्रतिबंधित अनेक दवाओं का यहाँ उपयोग हो रहा है। तम्बाकू, सिगरेट, स्मैक, कोल्ड ड्रिंक्स जैसे हानिकारक पदार्थों के भ्रामक विज्ञापनों पर प्रतिबंध नहीं है। स्वास्थ्य के लिए हानिकारक मांसाहार एवं अण्डे जैसे अभक्ष्य पदार्थों पर रोक नहीं, अपितु पौष्टिकता के नाम पर उनको बढ़ावा दिया जा रहा है। ऐसे अनेक स्वास्थ्य विरोधी कार्य स्वास्थ्य मंत्रालय की असजगता के कारण भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहे हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय से संबंधित भ्रष्टाचार के चन्द अन्य क्षेत्र और भी हैं।

1. अन्य प्रभावशाली चिकित्सा पद्धतियों के प्रशिक्षण, शोध एवं उपचार की व्यवस्था न करना एवं आधुनिक चिकित्सा पद्धति को ही प्रभावशाली, वैज्ञानिक एवं पूर्ण मानना। उनके दुष्प्रभावों से प्रजा को अंधेरे में रखना।
2. हानिकारक एवं प्रतिबंधित दवाओं का विक्रय न रोक पाना।
3. दवाओं के प्रमाण-पत्र पाने की प्रक्रिया।
4. टीकाकरण एवं रोग उन्मूलन के राष्ट्रीय कार्यक्रम।
5. आयोडीन की अनिवार्यता।

7. दान द्वारा मेड़िकल कॉलेजों में प्रवेश को मान्यता।

चिकित्सा में भ्रष्टाचार से बचने के उपाय

चिकित्सा में होने वाले भ्रष्टाचार से कैसे बचा जाये, उस हेतु निम्न सुझावों पर ध्यान देना होगा-

1. भ्रष्ट चिकित्सकों को स्वाध्याय की प्रेरणा दी जाये एवं सद्गुरुओं के सम्पर्क में लाने हेतु सत्पुरुषार्थ हो। उन्हें सत्साहित्य पढ़ने की प्रेरणा दी जाये। जब उन्हें भ्रष्टाचार के दुष्प्रभाव समझ में आ जायेंगे तो धीरे-धीरे उनका आचरण सम्यक् होना प्रारम्भ हो जायेगा।
2. चिकित्सकों से निदान-उपचार के बारे में सम्यक् संवाद हो।
3. स्वावलंबी, प्रभावशाली चिकित्सा पद्धतियों को अपनाया जाए।
4. आयुष्य-वेदनीय एवं नाम कर्म के प्रभावों पर विशेष चिन्तन हो।
5. चिकित्सा में दुष्प्रभावों की उपेक्षा न हो।
6. चिकित्सा हेतु प्रत्यक्ष-परोक्ष हिंसा को प्रोत्साहन न दिया जाये।
7. यथासंभव प्राकृतिक, संयमित, नियमित जीवन शैली को प्रोत्साहित किया जाए।
8. भ्रष्टाचार को बुरा मान यथासंभव कानूनी प्रक्रिया की जानकारी द्वारा जनसाधारण को सजग किया जाये।

-जालोरी गेट के बाहर, गोल बिल्डिंग रोड, जोधपुर-342003 (राज.)

फोन :- 0291-2621454, 94141-34606

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com,
Website: www.chordiahealthzone.com

बदलो

राष्ट्रसंत प्रवर्तक श्री गणेशमुनि शास्त्री

वसन बदलने से नहीं
मन को बदलने से ही
जीवन का दीप जलेगा।
बाहर नहीं,
अपने भीतर ढूँढोगे तो
भगवान मिलेगा।

बाल-स्तम्भ

मिलावट का दौर

श्री नितेश नागोता

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित आलेख को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 जनवरी 2012 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

छत्तीसगढ़ प्रवास के लिए भोपाल से नागपुर की ओर जा रहा था। ट्रेन में चाय बेचने वाले दो युवक आये। आसाम के बागानों की ताजगी भरी चाय, कड़क-कड़क जायकेदार चाय की आवाज लगाने लगे। देखते ही देखते उन दोनों युवकों ने पचास-साठ चाय बेच दी। उनकी चाय की केटली खाली हो गई। दोनों युवक ट्रेन के बाथरूम की साइड की खाली जगह पर बैठकर एक बाल्टीनुमा जलती हुई सिगड़ी पर एक भगोनी रखकर बाथरूम के नल में से पानी लेकर दूध की जगह पाउडर व कुछ थोड़ी सी चाय की पत्ती और रंग के लिए कपड़ों पर चढ़ाये जाने वाले पीले रंग की दो पुड़िया डालकर कड़क-कड़क रंगदार चाय बनाने लगे। उन्होंने देखते ही देखते 15-20 मिनट में 50 से 60 कप चाय तैयार कर दी।

मैंने जब उनसे इस मिलावट के बारे में पूछा, तो बोले- ''भाई साहब! मंहगाई के जमाने में सब चलता है। लोगों को स्वाद चाहिए, स्वाद।'' मेरे द्वारा उन्हें समझाने पर कि आप यह जो कर रहे हो गलत है लोगों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ है। डाइंग केमिकल कलर, जिससे कपड़े रंगे जाते हैं वह आप चाय में डाल रहे हो, यह उचित नहीं है। ऐसा कहने पर वे दोनों मुझसे झगड़ने पर आमदा हो गये। मैंने आर.पी.एफ. के जवानों को देखा। दो जवानों को अपने साथ लाकर उन चाय बेचने वालों के खिलाफ मुकद्मा दर्ज करवाया। अगले स्टेशन

पर पुलिस उन्हें लेकर उतर गई। आगे क्या हुआ होगा....कुछ नहीं, थोड़ी खाना पूर्ति, जेब गर्मी........और कुछ नहीं सब जानते ही हैं।

प्रश्न यह उठता है कि क्या हम खाने-पीने के इतने शौकीन हो गये हैं कि भक्ष्य-अभक्ष्य का विचार भी भूल गये हैं। आज लाभ और लोभ की अंधी दौड़ में वर्तमान समय में भारत देश में खाने-पीने की वस्तुओं में जिस तरह से धडल्ले से मिलावट का कार्य हो रहा है, उससे लगता है कि आज देश में ''बाप बड़ा न भइया, सबसे बड़ा रूपइया'' वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। बदलते इस परिवेश में हमें भी एक जागरूक नागरिक एवं धार्मिक व्यक्ति होने के नाते अपने खान-पान के तौर तरीकों में कुछ परिवर्तन तो करना ही होगा। गत दिनों विभिन्न टी.वी. चैनलों, समाचार पत्रों एवं विभिन्न प्रांतीय प्रवासों के सफर के दौरान मिलावट का जो घृणित रूप मुझे देखने, सुनने, पढ़ने व समझने को मिला है उसका संक्षिप्त ब्यौरा आप सभी की जानकारी व सजगता बढ़ाने की दृष्टि से सेवा में निवेदन कर रहा हूँ, ध्यान दिरावें:-

आइसक्रीम में जानवरों की चर्बी, चाकलेट एवं पेस्ट में जानवरों की हड्डियों का चूरा, धनिये के पाउडर में घोड़े-गधे की लीद, लाल मिर्च में रंगा हुआ लकड़ी का बुरादा, शक्कर में प्लास्टिक के टुकड़े, पानी पतासों के पानी में ऐसिड, बड़ी मात्रा में नींबू का सत, यूरिया का दूध, केमिकल का दूध, चाय में ड्रायक्लीन कलर, सब्जियों में इंजेक्शन, गेहूँ में मिट्टी, पुराने आलू को एसिड के पानी में डालकर नया बनाना, बाजारी मैंगो शेक में सेक्रीन व मैंगो परफ्यूम का केमिकल, मूंगफली व सोयाबीन के तेल में मिलावट, पाम आयल का घी आदि। आज से कुछ वर्षों पूर्व दूध में पानी, गेहूँ के साथ डंठल, अच्छी लाल मिर्ची के साथ हल्की क्वालिटी की लाल मिर्च की मिलावट के किस्से तो हमने कई बार सुने व पढ़े हैं। मिलावट का यह स्तर फिर भी इतना क्रूर, विनाशकारी व रोगदायक नहीं रहा था। किन्तु अधिक पैसे कमाने की होड़ और दिल खोलकर बेखौफ लोगों को स्वास्थ्य व जान से खिलवाड़ करने वाले आज के ये मिलावटी कुकृत्य जो विनाश लीला रच रहे हैं ऐसे समय में जरूरत है रेस्टोरेन्ट, होटलों व फुटपाथों पर खाने-पीने से बचने की तथा घर के शुद्ध सात्त्विक भोजन पर भरोसा करने की।

ध्यान रहे बड़ी से बड़ी कंपनियाँ और छोटे से छोटा दुकानदार, सभी लाभ और लोभ की दौड़ में दौड़ रहे हैं। सभी को अधिक से अधिक लाभ कमाने की भूख है। ऐसे में सस्ता लाकर बेचना सभी का जीवन आदर्श बन गया है। खाने

वाला चाहे बीमार हो या रोगों से ग्रसित, दुकानदारों को इससे मतलब नहीं है। उन्हें मतलब है अपने लाभ से एवं व्यापार से। मिलावट के इस दौर में बाजारू खान-पान से बचना आर्थिक, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यावहारिक सभी दृष्टिकोणों से लाभदायक है। अतः विवेक एवं सजगता बढ़ायें, अपने जीवन को स्वस्थ बनायें।

-कर सलाहकार, जैन बोर्डिंग एरिया, भवानी मण्डी-326502 (राज.)

प्रश्नः-

1. क्या स्वाद अच्छा होने से हर वस्तु खाने योग्य होती है?
2. लोग मिलावट क्यों करते हैं?
3. आज के ज़माने में कहाँ पर खाना-पीना ठीक है?
4. आप मिलावटी वस्तुओं की जाँच किस प्रकार कर सकते हैं?
5. इस आलेख की किन बातों से आप सहमत हैं? किन्हीं तीन का उल्लेख कीजिए।
6. निम्नांकित शब्दों के अर्थ लिखिए- धड़ल्ले से, जवानों, अंधी दौड़, सफर, फुटपाथ।
7. स्वास्थ्य विषयक किन्हीं दो अच्छी पत्रिकाओं के नाम बताइए।

बाल-स्तम्भ [अक्टूबर-2011] का परिणाम

जिनवाणी के अक्टूबर-2011 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'सफलता का प्रथम सूत्र' आलेख के प्रश्नों के उत्तर 18 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है। पूर्णांक 20 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	अर्पित जैन-जोधपुर	17
द्वितीय पुरस्कार-200/-	कशिश जैन-कोटा	17
तृतीय पुरस्कार- 150/-	सुनयना गेलड़ा-नागौर	15.75
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	गजेन्द्र कुमार जैन-जयपुर	15.75
	प्रणत धींग-हिरणमगरी, उदयपुर	15
	हर्षल मेगेश जी छोरिया-नाशिक	13.5
	रतनसिंह मेहता-भदेसर	13
	चिराग जैन-भदेसर	12

Parushan-Report

My Visit to Jain Center of America, New York. Paryushan Parva-2011

Dr Priyadarsna Jain

By *Guru Kripa*, I had got this great opportunity to celebrate Paryshan Parva from August 25th 2011 to September 1st 2011 at the *Jain Center of America, New York* and offer my *Svadhyaya services*. The Jain Center of America is a unique center of Jain devotion and unity in the entire world. In my 25 years of learning, teaching and preaching Jainism, I have not seen such a center and a model Jain community which is devoted, philanthropic, united, unique and very, very positive in more ways than one. With the efforts of Shri Kailash Chandji Hirawat, Jaipur and Shri P.S. Surana, Chennai in India and Shri Dharmendra Hirawat, Shri Anand Nahar, Munnaji and others in New York and New Jersey, Shri Jawahar Shetty, Chairman, Jain Center of America, New York extended an invitation on behalf of Jain Center of America, New York and invited me to give scholarly discourses for the educated, elite Hindi Speaking and Gujarati speaking, non-idol worshipping Jains i.e., *Sthanakvasi* Jains at the Jain Center. Then permission was sought from the University of Madras and after I got the permission, the VISA proceedings too fell in place. In fact the authorities at the US Embassy were surprised to know about such a rich, spiritual and religious tradition of Jainism which promoted non-violence, non-absolutism and non- possession even in today's trying times of violence, fundamentalism and corruption. They happily and readily gave the VISA and I headed to New York with the blessing of the *Guru Bhagwants* and best wishes from my family and the staff and students of the Department of Jainology.

I was warmly received at the airport by Kumarpal Bhai, Dharmandraji Munnaji, Vinayji and Rashmiji and stayed at Dr. Rajnikant Bhai's residence, where the elderly couple blessed me and enriched my experience and made my stay worthwhile. From

here began my discovery of the uniqueness of this Jain Centre of America and Jain community.

On the first day of Paryushan Parva at Jain Center of America, I was delighted to see the unique Jain Center which housed a *Swetambar temple, Digambar temple, Jain Upashraya/ Sthanak, Shrimad Rajchandra Prayer Hall, Dadawadi, Ashtapadtirth, Pathshala Hall, Bhojanshala,* etc all under one roof with nearly 500 charts displaying the multi-farious aspects, tenets and practices of Jainism. Beautiful collection of rare Jina images in precious and semi-precious stones was a treat to the eyes and the heart and soul. Hindi and Gujarati speaking Jains from all sects freely walked, prayed, talked, fasted and celebrated the *Paryushana parva.* My schedule for 8 days at the Center was as follows:

6 am - 8 am	- *Samayik, Prarthana,* Yoga, etc.
10 am - 1pm	- *Kalpa sutra, Antakrta Dasha-Vachan* with *Vykhyan.*
1 pm - 2 pm	- *Ekashan.*
2 pm - 5 pm	- Classes for youngsters and children on Fundamentals of Jainism, 12 vrata, etc
5.30 pm - 7.30 pm	- *Pratikraman* with meaning.
8 pm - 10.0 pm	- Main *Vyakhyan*/discourses.

The Hindi discourses which were held in the evening attracted an audience of 250-300 members, During 8 days, topics like significance of *Paryushan Parva, Ratna traya,* Jain spirituality, Jain beliefs and practices, Jain way of living, relevance of Jainism, etc were covered with ample illustrations and anecdotes. The audience which comprised of people from all age groups enjoyed the discourses as they got an insight of Jain Spirituality and its day to day application in life. More than the do's and dont's of Jain Religion they were interested in knowing about the profound facets of Jain Philosophy and sincerely appreciated the efforts put by us.

The *Samvatsari* Day discourses and activities went on from 9.30 am in the morning to 11 pm in the night as follows:

9.30 am - 1 pm	- *Samvatsari Pravachan.*
1.30 pm - 4 pm	- *Brahad-aloyana patha* with meaning and

explanation.

4.30 pm - 8 pm - *Samvatsari Pratikraman* with meaning.

8 pm - 8.30 pm - *Kshamapana.*

8.30 pm - 11 pm - Power Point Presentation on Jain Heritage.

Due to the cyclone Irene the week end discourses were conducted at New Jersey at Shri Kumarpal Bhai's residence and one day *Samuhik Pravachan* was conducted for both Hindi and Gujarati speaking people at the Center itself.

On the Parana day nearly 35 *Tapasvis* did Parana of *Tela, Atthai, Masakshaman,* etc , and their families and the entire Jain community of New York and New Jersey rejoiced on the eve of the Parana and *Paryushan* celebration.

The most note-worthy experience of the entire visit was that there was so much warmth and positivity in the Jains living there. Nobody criticized anybody (no *para-ninda*) and each one was all praise for all others. Secondlly the Jain Center of America celebrates *Samvatsari* alternatively on *Choth* and *Pancham* every year and they do not fight or argue with the *Tithi of Samvatsari,* thereby giving no room for *raag or dvesh.* Dr. Rajnikant Shah wanted me to give publicity to this message of unity and appeal to all Jains worldwide to be united in celebrating *Samvatsari* uniformly and unitedly and I have spoken about it in few forums in Chennai. Thirdly I was surprised to note that there was no name of any person in the entire building which goes to show that they do not believe in nurturing their false egos. I was indeed very impressed and wish that the Jain Samaj in India wakes up to unity and selfless service more steadfastly than before.

The Jain Center of America conducts religious activities and discourses throughout the year and one can visit the website of this center for further details. Anyone who visits the centre is enthralled by the experience of Unity in Diversity exhibited at the Jain Centre in America and I have been no exception.

I am thankful to Shri Ratna Hiteshi Swadhyaya Sangh and the Jain Center of America for the wonderful and enriching opportunity given to me, which I shall cherish all my life.

-Asst Prof and Head i/c, Department of Jainology, University of Madras, Chennai 600 005 (T.N.)

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (21)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग दो-सामान्य पूर्वधर खण्ड)** के आधार पर संचालित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह नवमी किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 जनवरी 2012 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैनधर्म का मौलिक इतिहास (भाग-2)

(पृष्ठ 401 से 450 तक से प्रश्न)

मुझे मेरा नाम दो-

1. मैंने प्रांगण के बीचोंबीच सरसों का एक ढ़ेर लगवाया।
2. ब्रह्मदेव! आपको किसी से डरने की आवश्यकता नहीं।
3. मैंने चार अध्ययन चूलिका के रूप में प्रदान किये।
4. श्राविके! देख संसार का वास्तविक स्वरूप यही है।
5. मैंने उस ग्रामीण वृद्धा द्वारा दिये गये ताने से शिक्षा ग्रहण की।
6. एक शर्त पर मैं वाचना देने को तैयार हूँ।
7. मुझे चन्द्रपान करने का दोहद उत्पन्न हुआ।
8. मैंने अपनी बहनों के समक्ष उसकी विद्या का चमत्कार प्रगट किया।
9. मैं अमुक रात्रि में काल कर देव बन चुका हूँ।

10. मैंने चाणक्य की शर्त को स्वीकार किया।

अंकों से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

11. आर्य सुहस्ती के आचार्य काल में लगभग......वर्ष तक बिन्दुसार का सत्ताकाल रहा।
12. पहियों के ......अरे चर्र-चर्र शब्द करते हुए तत्काल टूट गये।
13. शकुनि तोते ने कहा......रोप्यक के मूल्य का माल रहा है।
14. आर्य महागिरि ने आचार्य स्थूलभद्र से....पूर्वों का अध्ययन किया।
15. मैं उन्हें प्रतिदिन ....वाचनाएँ देता रहूँगा।
16. पुण्यमित्र का ...... वर्ष तक राज्य रहा।
17. श्रीयक ने भी लगभग ...... वर्ष तक मगध के महामात्य पद का कार्यभार संभाला।
18. शिक्षणशाला में ..... राजकुमार उच्च सैनिक प्रशिक्षण प्राप्त करते रहते थे।
19. आचार्य भद्रबाहु ने स्थूलभद्र को ..... वर्ष तक वाचनाएँ दीं।
20. आर्य सुहस्ती..... वर्ष की अवस्था में दीक्षित हुए।
21. .... श्रमणों को भद्रबाहु के पास पूर्वज्ञान के अभ्यासार्थ भेजा।
22. .... वर्ष पश्चात् लिखे गये अभिलेख पर ....की संख्या लिखी गई है।
23. कलिंग के उस युद्ध में.....सैनिक बन्दी बनाये गये।
24. आर्य स्थूलभद्र ..... वर्ष तक गृहस्थ पर्याय में रहे।
25. मौर्य सम्राट् चन्द्रगुप्त ने विशाल राजसत्ता के रूप में..... वर्ष तक शासन किया।

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (19) का परिणाम

जिनवाणी अक्टूबर, 2011 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 212 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्तकर्ता विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- किरण जैन-होशियारपुर (पंजाब)

द्वितीय पुरस्कार- निर्मला सुराणा-बीकानेर (राज.)

तृतीय पुरस्कार- शिवांगी गांधी-भीलवाड़ा (राज.)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. रेणु जैन-अजमेर (राज.)

2. रीमा जैन-लुधियाना (पंजाब)

3. मनीला पारख-जयपुर (राज.)

4. चन्द्रा मुणोत-मुम्बई (महा.)

5. स्वर्णा बोहरा-इचलकंरजी (महा.)

अन्य 25 अंक प्राप्तकर्ता-Milap Loonawat-Ahmedabad, Kamala Singhvi-Jaipur, Chandra Bothra-Chennai, Neelam Jain-Gurgoan, Seema Dhing-Udaipur, Reenu Hirawat-Jaipur, Leena Mahendra Jain-Chilun, Sushila Begani-Bikaner, Bhikamchand Kothari-Chennai, Babulal Jain-Chennai, Kamlesh Galada-Ajmer, Anu Jain-Hoshiarpur, Punjab, Esha Padam Jain-Navasari, Hemlatha Kherada-Bhilwada, Chandanmull Palrecha-Jodhpur, Tara Bafna, Rekha Surana-Nagaur, Indu Kamlesh Jain-Mumbai, Ratan Karnawat-Jaipur, Premlatha Shand-Pali, Gunmala Jain-Chitodgarh, Madanlal Sancheti, Sunita Navlakha-Kota, Upma Choudry-Ajmer, Sangeeta Baid-Chennai, Aush Jain-Beawar, Pramila Mehta-Dudu, Meenu Jain-Chennai, Divya Daga-Jaipur, Kavita Jain-Dhanop (Raj), Suneeta Oswal-Jaipur, Shantilal Jain-Dhanop (Raj), Divya Oswal-Jaipur, Vikas Bomb-Mumbai, Aruna Jain-Hoshiarpur, Punjab, Hansa Devi Surana-Bikaner, Kishore Munisa-Bikaner, Sudha Bhansali-Jodhpur, Ranulal Kochar-Nasik, Sadhna Gugale-Ichalkaranji, Sagarmullji Nahar-Begun-Chitodgarh, Manju Bhandari-Beawar, Kusum Poonamia-Ichalkaranji, Balwantsinghji Choradia-Jhalarapatan, Manju Jain-Karoli (Raj), Manjulatha Jhamad-Jaipur, Kshama Jain-Mumbai, Nirmala Bohra-Ichalkaranji, Kanyalalji Jain-Bhilwada, Pramila Mehta-Ajmer, Rajkumari Lodha-Jaipur, Susheela Roonwal-Poona, Vaibhav Jain-Hindon City, Noratmal Mehta-Ajmer, Narendra Bomb-Thane -Mumbai, Jyoti Jain-Basan (raj), Anurag Surana-Ajmer, Vijaya Devi Bagmar-Gajendraghad, Manju Devi Surana-Gangashahar, Sushila Tater-Bhilwada, Vandana Poonamia-Pali, Deepmala Singhvi-Pali, Suresh Kumar Shand-Pali, Dharmesh Poonamia-Pali, Sudershan Jain-Gangashahar, Siddhi Bafna-Jodhpur, Poonam Jain-Faridkot-Punjab, Prasan Kothari-Jodhpur, Rakhi Jain-Tonk (Raj), Kiran Munhoot-Hinganghat, Swetha Jain-Tonk (Raj), Subash Dhariwal-Thane Mumbai, Neha Jain-Sawaimadhavpur, Tripti Bohra-Ichalkaranji, Manju Mutha-Ichalkaranji, Monal Mishrilal Pipada-Ichalkaranji, Manju Jain-Hoshiarpur, Punjab, Vimal Kochar-Nasik, Kusum Singhvi-Jodhpur, Sashikala Saklecha-Bangalore, Anita Munoot-Ichalkaranji, Nilima Chopda-Ichalkaranji, Priya Chopda-Ichalkaranji, Shoba Gugale-Ichalkaranji, Chandrakala Ranka-Bhadgaon, Priya Lodha-Ajmer, Punita Jain-Beawar, Prakash Bai Bhrawat-Bhandara, Sunita Gandhi-Bhilwada, Mitali Gandhi-Bhilwada, Shanta Kataria-Bhilwada, Manju Kataria-Bhilwada, Meenakshi Kataria-Bhilwada, Gargi Kataria-Bhilwada, Parasmull Kataria-Bhilwada, Ghewarchand Chajed-Bellary, Sangita Choradia-Lasalgaon, Meenakshi Lodha-Gurgoan, Pramila Mehta-Bangalore, Preeti Jain-Bharatpur, Hema Baghmar-Secunderabad, Bharti Surpure-Ichalkaranji, Sarita Babel-Ichalkaranji, Anjana Katkani-Devas (MP), Pooja Bohra-Ichalkaranji, Nutan Bhandari-Ichalkaranji, Rekha Kothari-Ajmer, Janeshwardas Jain-Pilu Khera Mandi (Harayana), Shilpa Surana-Ajmer, G.C.Kothari-Ajmer, Vijaylakshmi-Ajmer, Suneeta Doshi-Beawar, Nirmala Gundecha-Ichalkaranji, Tilak Manjeri-Hospet,

Kank Bader-Delhi, Saroj Nahar-Delhi, Rikhabraj Bohra-Delhi, Madhu Loonavat-Varanasi, Monika Jain-Sultapur Lodhi (Punjab), Santosh Gelra-Borawar, Shilpa Bohra-Ratkuria, Usha Loonawat-Ajmer, Neeta Kankaria-Doddaballapur, Pushpa Kankaria-Raichur, Shoba Nahar-Secunderabad, Ugam Doshi-Secunderabad, Shakuntala Bohra-Secunderabad, Maya Alijar-Secunderabad, Neetu Gulecha-Hyderabad, Sarala Golcha-Beawar, Ratanchand Mehta-Jodhpur, Dalchand Jain-Jaipur, Pista Golecha-Jaipur, Vidya Sanghvi-Badanawar, Susheela Gang-Jodhpur, Kamala Devi Sethia-Masuda, Meena Jain-Kheratabad, Shanta Bafana-Nasik, Chandralatha Mehta-Dudu, Sangeeta Chajed-Chalisgaon.

24 अंक प्राप्तकर्ता– Heera Karnawat-Ahemadnagar, Chandrakala Mehta-Bangalore, Varsha Doshi-Merta City, Devilal Bhanawat-Kanore (Raj), Urmila Mehta-Jaipur, Kiran Jain-Devas (MP), Asha Doshi-Jaipur, Meena Bai Nahar-Ichalkaranji, Shiromani Jain-Shajapur (MP), Rajkumari Nawlaka-Jaipur, Mridula Kumbhat-Jodhpur, Chandani Jain-Indore, Hazarimul Jain-Durg, Manju Bafana-Jalgaon, Pramila Kothari-Jodhpur, Manju Khastiaya-Kolkotta, Sangeetha Jain-Faridabad, Seema Jain-Tonk (Raj), Yugal Ranka-Ahmedabad, Prasan Gang-Mumbai, Abhilasha Hirawat-Mumbai, Pinki Jain-Jaipur, Padma Jain-Jaipur, Sudha Daga-Bikaner, Neelam Kankaria-Nagaur, Rishab Jain-Sumeergang Mandi, Nauratmaul Changariya-Ajmer, Smita Muthiyan-Ichalkaranji, Padma Bohra-Raichur, Komal Kothari-Manjalpur-Baroda, Madhubala Bohra-Ichalkaranji, Malliga Vaid-Vellore, Bhavika Shah-Belgaum, Mamta Bhandari-Nagaur, Padamchand Agarwal-Jaipur, Vijaimul Mehta-Jodhpur, Joharimul Chajed-Jodhpur, Pushpa Kantichand Navlakha, Jyoti Bhansali-Bangalore, Babulal Kataria-Hyderabad, Sarla Bhansali-Durg, Sheela Pincha-Himayatnagar, Suryakala Bagmar-Chennai, Vimla Mehta-Jodhpur, Neelam Chipad-Jaipur, Reena Jain-Chattisgarh, Kanwalraj Mehta-Jodhpur, Basanta Saklecha-Nardana-Dhulia, Chinmay Jai-Durg, Nathmul Kothari-Balod-Durg, Vijaylaxmi Munot-Jaipur, Jagdishprasad Jain-Kota, Akhilesh-Jodhpur.

23.5 या इससे कम अंक प्राप्तकर्ता– Hansraj Munoot-Jaipur, Krishna Agarwal-Jaipur, Chameli Jain-Durg, Sushma Dhariwal-Jaipur, Chetna Bothra-Mumbai, Archi Jain-Chittodgarh, Susheela Bhandari-Bangalore, Meena Choradia-Chennai, Ugma Devi Dugar-Bangalore, Vanita Challani-Beawar, Nehachand Bafna-Jodhpur.

अच्छा गृहस्थ

संसार में दो तरह से पेट भरा जाता है। एक तो आर्य कर्म से, जिसमें हिंसा कम हो, कूड़-कपट, छल-छिद्र, धोखा आदि के बिना ही काम करके अपना गुजारा चला ले। दूसरा वह जिसमें धोखा देकर, झूठ बोलकर, गुमराह करके, सरकारी टैक्स की चोरी करके पैसा मिलाया जावे। इन दोनों में फर्क है। गृहस्थी के लिए धंधा करना मना नहीं है, लेकिन छल कर्म करके महारम्भ का धंधा करना मना है। अच्छा गृहस्थ अपने खाने-पीने में और अन्य खर्च में भी कमी करके गुजर करना मंजूर करेगा, लेकिन महापाप का धंधा नहीं करेगा। –आचार्य हस्ती

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नजर में

(1 दिसम्बर, 2011)

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 7	:	पावटा चातुर्मास सम्पन्न कर जोधपुर के कतिपय उपनगरों को फरसते हुए बनाड़, डांगियावास, बीनावास, छोड़ा, बुचकला होते हुए रींया पधारे हैं। अग्र विहार पीपाड़ की ओर चल रहा है।
परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	नागौर से चातुर्मास सम्पन्न कर गोगेलाव, अलाय फरसते हुए 24 नवम्बर को नोखा पधारे। अग्र विहार बीकानेर की ओर सम्भावित है।
तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोद मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	पावटा चातुर्मास के पश्चात् अग्र विहार कर 16 नवम्बर को आगोलाई पधारे। यहाँ कुछ दिन विराज कर मेघवासियाँ पधारे हैं। अग्र विहार जोधपुर होते हुए भोपालगढ़ की ओर सम्भावित है।
साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 8	:	श्री जैन सिद्धान्तशाला ,पावटा में सुख साता पूर्वक विराजमान हैं।
सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	मसूदा से चातुर्मास सम्पन्न कर 22 नवम्बर को गुलाबपुरा (जिला-भीलवाड़ा) पधारे हैं। अग्र विहार विजयनगर की ओर सम्भावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 9	:	भोपाल चातुर्मास सम्पन्न कर वल्लभनगर, लेकपर्ल, खजुरी होते

		हुए 30 नवम्बर को सिहोर पधारे हैं। अग्र विहार शाजापुर की ओर सम्भावित है।
विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	सुराणा मार्केट, पाली चातुर्मास सम्पन्न कर विभिन्न उपनगरों को फरसते हुए वर्द्धमान नगर पधारे हैं।
विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	मालवीय नगर, जयपुर चातुर्मास सम्पन्न कर विभिन्न उपनगरों को फरसते हुए सिद्धान्तशाला, साधना भवन, बजाज नगर, विराज रहे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7	:	पीपाड़ शहर चातुर्मास सम्पन्न कर 21 नवम्बर को बारणी पधारे हैं। अग्र विहार धनारीकला की ओर सम्भावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3	:	भोपालगढ़ चातुर्मास सम्पन्न कर नाडसर, बारणी होते हुए 28 नवम्बर को आसोप पधारे हैं।
सेवाभावी महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	बजरिया चातुर्मास सम्पन्न कर सवाईमाधोपुर के विभिन्न उपनगरों को फरसकर कुश्तला, देवली, जरखोदा होते हुए 29 नवम्बर को देई पधारे हैं। अग्र विहार देवली की तरफ चल रहा है।
व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 7	:	वेपेरी-चेन्नई चातुर्मास सम्पन्न कर चेन्नई के उपगनरों को फरसते हुए स्वाध्याय भवन, चेन्नई विराज रहे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	कुण्डीतोप विराज रहे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	इन्दौर चातुर्मास सम्पन्न कर विभिन्न उपनगरों को फरस रहे हैं। अग्रविहार शाजापुर की ओर सम्भावित है।

महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4	: गंगापुर सिटी चातुर्मास सम्पन्न कर विभिन्न उपनगरों को फरस रहे हैं।
महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4	: नागौर चातुर्मास सम्पन्न कर 25 नवम्बर को मेड़ता सिटी पधारे हैं।
महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4	: माण्डल चातुर्मास सम्पन्न कर 18 नवम्बर को होलनांथा पधारे। अग्र विहार शिरपुर की ओर संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा 3	: अजमेर चातुर्मास सम्पन्न कर 26 नवम्बर को किशनगढ़ पधारे। यहाँ से पाटण, दान्तरी, पडासोली होते हुए दूदू पधारे हैं। अग्र विहार जयपुर की ओर सम्भावित है।
सेवाभावी महासती श्री शशिकला जी म.सा. आदि ठाणा 4	: जोधपुर से विहार कर पीपाड़ पधारे हैं।

'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषय पर राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी सम्पन्न

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पावन सान्निध्य में 5-6 नवम्बर 2011 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा में 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषय पर राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी का आयोजन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में हुआ। संगोष्ठी में 35 विद्वान् वक्ताओं ने अपने विचारों से लाभान्वित किया।

संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने फरमाया कि प्राप्त वस्तु, योग्यता, सम्पदा, सामर्थ्य आदि का दुरुपयोग भ्रष्टाचार है। संग्रह करना अपने आपमें भ्रष्टाचार नहीं है, यदि वह न्यायपूर्वक अर्जित किया गया हो एवं उसका समाज के लिए सदुपयोग हो। विचारों में जितनी पवित्रता होगी, उतना ही आचरण श्रेष्ठ होगा। कानून के द्वारा पूर्णतः भ्रष्टाचार नहीं मिट सकता, क्योंकि भ्रष्टाचार निवारण के लिए जिस अधिकारी को नियुक्त किया जाता है वह भी एक मनुष्य होता है। उसके विचार एवं आचार कितने पवित्र हैं, इस पर

सफलता निश्चित होती है।

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने कहा कि पैसा केवल अनैतिकता से आता हो, यह सही नहीं है। नैतिक साधनों से भी धन का उपार्जन सम्भव है। संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधपत्रों की समीक्षा करते हुए उन्होंने कहा कि साधु के लिए एक कवल अधिक आहार करना भी भ्रष्टाचार की परिधि में आता है। आचरण की शुद्धि के लिए साता की आसक्ति का त्याग अनिवार्य है।

उद्घाटन सत्र

5 नवम्बर को प्रातः 9 बजे संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में बिहार उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधिपति एवं राजस्थान मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष माननीय श्री राजेश जी बालिया ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि ममत्व एवं लोभ भ्रष्टाचार के मुख्य कारण हैं। कानून मात्र बाह्य साधन है, इससे भ्रष्टाचार निवारण सम्भव नहीं है। मुख्य अतिथि के रूप में सेबी के पूर्व अध्यक्ष एवं संघ संरक्षक पद्मभूषण श्री डी.आर. मेहता ने समाज में अध्यात्म मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए प्राथमिक स्तर से नैतिक शिक्षा लागू करने का सुझाव दिया। विशिष्ट अतिथि नागौर के जिला कलक्टर श्री श्यामसुन्दर जी बिस्सा ने कहा कि अनीतिपूर्वक सम्पदा प्राप्त कर उसका अपने वैभव के लिए प्रदर्शन करने वाले लोगों की प्रशंसा भी भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है। श्रेष्ठ व्यक्ति का सभी आचरण करना चाहते हैं, किन्तु श्रेष्ठ किसे माना जाये, इसे समझने में ही प्रायः भूल हो जाती है। जैन विश्व भारती, लाडनूं के पूर्व कुलपति प्रो. महावीरराज जी गेलड़ा, जयपुर ने सारस्वत अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए इस बात पर बल दिया कि अर्थ के उपार्जन को लोक कल्याण के साथ जोड़ने की महती आवश्यकता है। उन्होंने अहिंसा, अपरिग्रह एवं अनेकान्त के आधार पर भ्रष्टाचार निवारण की बात कही। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने कहा कि दृष्टि परिवर्तन के बिना सृष्टि परिवर्तन सम्भव नहीं है। इसके पहले व्यक्ति को अपनी दृष्टि सम्यक् बनाने की आवश्यकता है। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. धर्मचन्द जैन ने विषय का प्रतिपादन करते हुए असम्यक् दृष्टि एवं अनैतिक रीति से भौतिक समृद्धि की चाह को भ्रष्टाचार का प्रमुख कारण बताया। प्रारम्भ में डॉ. श्वेता जैन एवं डॉ. हेमलता जैन ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। अन्त में मण्डल के अध्यक्ष एवं संगोष्ठी के प्रेरक श्री पी.शिखरमल सुराणा ने आभार प्रकट किया।

संगोष्ठी के कार्यकारी सत्र निम्नानुसार सम्पन्न हुए–

05 नवम्बर 2011

प्रथम सत्र - अपराह्न 12.30 बजे से 02.30 बजे तक

अध्यक्षता- डॉ. महावीरराज गेलड़ा, जयपुर
(पूर्व कुलपति, जैन विश्व भारती, लाडनूँ,)

संयोजन- प्रो. एम.के. भण्डारी, जोधपुर

1. डॉ. हेमन्त शर्मा, जोधपुर- **आध्यात्मिक जीवन का मनोवैज्ञानिक आधार**
2. डॉ. जगत्राम भट्टाचार्य, लाडनूँ- **व्रतों के अतिचार**
3. डॉ. एस.पी. गुप्ता, जोधपुर- **क्या भ्रष्टाचार विवशता है?**
4. प्रो. एम.के. भण्डारी, जोधपुर- **भ्रष्टाचार निरोधक कानून और जैन धर्म**
5. श्री के.एस. गलुण्डिया, जयपुर- **भ्रष्टाचार पर सामाजिक नियन्त्रण**
6. डॉ. चन्द्रशेखर, जोधपुर- **भ्रष्टाचार का दर्शन**
7. श्री पी.आर. दवे, जोधपुर- **भ्रष्टाचार : कारण और निवारण**

द्वितीय सत्र- अपराह्न 03.00 बजे

अध्यक्षता- डॉ. जितेन्द्र बी. शाह, अहमदाबाद (निदेशक, एल.डी. इन्स्टीट्यूट)

संयोजन- डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

1. श्री धर्मचन्द जैन, जोधपुर- **श्रमणों की आचारगत भ्रष्टता**
2. श्री चंचलमल चोरडिया, जोधपुर- **चिकित्सा में भ्रष्टता**
3. डॉ. जितेन्द्र बी. शाह, अहमदाबाद- **श्रमणाचार के निर्दोष पालन में श्रावकों की भूमिका**
4. श्री पदमचन्द गाँधी, जयपुर- **भ्रष्टाचार उन्मूलन में युवापीढ़ी का योगदान**
5. श्री एन.के. खींचा, जयपुर- **आध्यात्मिक दृष्टि और भ्रष्टाचार निवारण**
6. प्रो. संजीव भानावत, जयपुर- **लेखन एवं प्रकाशन में भ्रष्टाचार**

तृतीय सत्र- रात्रि 07.15 बजे

अध्यक्षता- डॉ. जीवराज जैन, जमशेदपुर

संयोजन- श्री सुन्दरलाल जैन, जोधपुर

1. डॉ. दिलीप सक्सेना, जोधपुर- **भ्रष्टाचार का दर्शन, पूर्णता ही शून्यता**
2. श्री रमेश कुमार जैन, सम्भागीय आयुक्त, जोधपुर-**समाज में व्याप्त विकृतियाँ**
3. श्री चतरसिंह मेहता, जोधपुर- **भ्रष्टाचार निरोध और सूचना का अधिकार**

4. श्री प्रसन्नचन्द बाफना, जोधपुर-**भ्रष्टाचार रहित व्यापार**

06 नवम्बर 2011

चतुर्थ सत्र - प्रातः 09 बजे

सान्निध्य- आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि सन्तवृन्द

संयोजन- श्री धर्मचन्द जैन, जोधपुर

1. श्री प्रकाशचन्द जैन, जलगाँव- **श्रावकाचार में व्याप्त विकृतियाँ एवं निवारण**
2. डॉ. सुषमा जी सिंघवी, जयपुर- **परिग्रह, समाज और भ्रष्टाचार**
3. प्रो. शैलेन्द्र जी मेहता, आई.आई.एम., अहमदाबाद- **जीवनदृष्टि एवं समाधि का महत्त्व**
4. श्री पी. शिखरमल सुराणा, अन्तरराष्ट्रीय एडवोकेट, चेन्नई- **नैतिकतापूर्ण जीविकोपार्जन कैसे हो?**

पंचम सत्र- अपराह्न 12.45 बजे

अध्यक्षता- डॉ. सुषमा जी सिंघवी, जयपुर

संयोजन- डॉ. सुरेश जी सिसोदिया, उदयपुर

1. डॉ. जीवराज जैन, जमशेदपुर- **समितियों के पालन में बाधाएँ एवं निवारण**
2. श्री सम्पतराज चौधरी, दिल्ली (कार्याध्यक्ष, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल)- **व्रतपालन में भ्रष्टता**
3. डॉ. ओ. पी. टाक, जोधपुर- **भ्रष्टाचार विषयक गांधी चिन्तन**
4. डॉ. पी.सी. जैन, जयपुर- **अनैतिकता के निवारण में अध्यात्म की भूमिका**
5. डॉ. जिनेन्द्र कुमार जैन, लाडनूँ-**समतावादी समाज में श्रावक-व्रत की भूमिका**
6. डॉ. सरोज कौशल, जोधपुर- **उपनिषदों में असदाचरण की समीक्षा**
7. श्री सुन्दरलाल जैन, जोधपुर-**वर्तमान में श्रमणपरम्परा की शिथिलता के कारण**
8. डॉ. सुरेश सिसोदिया, उदयपुर-**श्रमणों की शिथिलता**
9. डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर- **बौद्धदर्शन में भ्रष्टाचार उन्मूलन के तत्त्व**
10. श्री श्रीकान्त गुप्ता, जोधपुर-**आध्यात्मिक एवं नैतिक जीवन**

11. डॉ. धर्मचन्द जैन, जोधपुर- **जैन आगमों में भ्रष्टता विषयक चिन्तन**

विभिन्न सत्रों में शिक्षा, समाज, दर्शन, न्याय, प्रशासन आदि विविध क्षेत्र के विशेषज्ञों ने शोध-पत्रों के माध्यम से संगोष्ठी को सजीवता एवं सार्थकता प्रदान की।

सम्पूर्ति सत्र

सम्पूर्ति सत्र की अध्यक्षता जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. महावीरराज जी गेलड़ा-जयपुर ने की। उन्होंने अपने उद्बोधन में जैन विद्या की महत्ता को रेखांकित किया तथा उस पर व्यापक कार्य करने की प्रेरणा की। जिससे तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोद मुनि जी म.सा. ने भी अपने वक्तव्य में सहमति प्रकट करते हुए कहा कि आज जैन विद्वानों की महती आवश्यकता है। राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के जैन अनुशीलन केन्द्र के पूर्व निदेशक डॉ. पी.सी. जैन ने विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए अध्यात्मिक दृष्टि से भ्रष्टाचार निवारण के उपाय प्रस्तुत किए। इस सत्र का संयोजन राजस्थान विश्वविद्यालय के *मास कम्युनिकेशन विभाग के अध्यक्ष प्रो. संजीव भानावत ने किया।* संगोष्ठी के संयोजक डॉ. धर्मचन्द जैन ने संगोष्ठी का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए बताया कि संगोष्ठी के पाँच सत्रों में 32 शोधपत्र पढ़े गए। अन्त में धन्यवाद ज्ञापन श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री प्रसन्नचन्द जी बाफना ने किया।

संगोष्ठी में समागत विद्वानों का आतिथ्य श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर ने पूर्ण तत्परता से किया।

वीतराग ध्यान-साधना आवासीय शिविर 17 से

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर के तत्त्वावधान में 'वीतराग ध्यान-साधना केन्द्र' द्वारा परमपूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की प्रेरणा से 17 से 25 दिसम्बर 2011 तक भोपालगढ़ (जिला-जोधपुर) में वीतराग ध्यान-साधना का अभ्यास तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. द्वारा विशिष्ट ध्यान साधक श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा की उपस्थिति में कराया जायेगा। नौ दिवसीय वीतराग ध्यान-साधना आवासीय शिविर की अपनी एक अलग नियमावली एवं दिनचर्या होगी, उसी के अनुसार सभी ध्यान-साधकों को आचरण करना होगा। यह बहुत सहज एवं सरल ध्यान की विधि है। शान्ति एवं समभाव की प्राप्ति में सहायक है। पूर्व में भी विभिन्न स्थानों पर अनेक ध्यान-

साधना आवासीय शिविर आयोजित करके वीतराग ध्यान-साधना केन्द्र ने बहुत से ध्यानप्रेमी बन्धुओं को लाभान्वित किया है। इस बार अखिल भारतीय स्तर पर ध्यान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। भारत के सभी क्षेत्रों से वीतराग ध्यान-साधना शिविर में भाग लेने के लिए इच्छुक साधकगण सादर आमंत्रित हैं। वीतराग ध्यान शिविर में उपस्थिति दर्ज कराने के लिए निम्नलिखित सम्पर्क सूत्र पर अपना नामांकन करा सकते हैं- शान्ता मोदी (संयोजक), 9314470972, विरदराज सुराणा (मंत्री), 9314012415

जैनागम स्तोक वारिधि परीक्षा जनवरी 2012 में

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा छोटे-बड़े थोकड़ों के माध्यम से जैन तत्त्वज्ञान एवं आगम ज्ञान के प्रचार-प्रसार की महत्त्वपूर्ण योजना "जैनागम स्तोक वारिधि" के नाम से प्रारंभ की गई है। पंचवर्षीय योजना के प्रथम वर्ष में निम्नांकित 10 थोकड़े रखे गये हैं-

वर्ग अ- 1. 25 बोल, 2. 67 बोल, 3. सुपच्चक्खाण-दुपच्चक्खाण, 4. संज्ञा, 5. सवणे नाणे का थोकड़ा।

वर्ग ब- 1. कर्म प्रकृति, 2. गति-आगति, 3. चौदह गुणस्थानों का बासठिया, 4. रूपी-अरूपी, 5. उपयोग का थोकड़ा।

परीक्षा से सम्बन्धित प्रमुख जानकारी इस प्रकार है-

1. प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम में दो प्रश्न-पत्र होंगे। वर्ग अ का एक प्रश्न-पत्र तथा वर्ग ब का एक प्रश्न-पत्र होगा। दोनों प्रश्न-पत्रों की परीक्षा **15 जनवरी-2012,** रविवार को इस प्रकार होगी- प्रथम प्रश्न-पत्र-प्रातः 10.00 से 12.00 बजे तक, द्वितीय प्रश्न-पत्र- दोपहर 1.30 से 3.30 तक। प्रथम वर्ष की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए प्रत्येक प्रश्न-पत्र में 50 प्रतिशत अंक प्राप्त होना आवश्यक है। दोनों प्रश्न-पत्र उत्तीर्ण होने पर ही द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम की परीक्षा में भाग ले सकते हैं। दोनों प्रश्न-पत्र एक साथ उत्तीर्ण करने वाले परीक्षार्थियों मे से वरीयता सूची तैयार की जायेगी। यथासंभव दोनों प्रश्न-पत्रों की परीक्षा एक साथ दें। कदाचित् कोई एक साथ नहीं दे पायें तो एक-एक प्रश्न-पत्र भी उत्तीर्ण कर सकते हैं।
2. दोनों प्रश्न-पत्र उत्तीर्ण करने वाले परीक्षार्थियों को पुरस्कार निम्नानुसार

शिक्षण बोर्ड द्वारा प्रदान किये जायेंगे। वरीयता सूची में प्रथम स्थान- 4000/-, द्वितीय स्थान- 3000/-, तृतीय स्थान- 2000/-

50 से 59.99 अंक तक	-	प्रमाणपत्र दिया जायेगा, पुरस्कार नहीं।
60 से 85 अंक तक	-	150/- का नकद पुरस्कार व प्रमाण-पत्र।
85 से अधिक अंक	-	200/ का नकद पुरस्कार व प्रमाण-पत्र।

3. प्रथम प्रश्न-पत्र की पाठ्यपुस्तक में 25 बोल के थोकड़े का विस्तार से विवेचन परीक्षार्थियों की ज्ञान वृद्धि हेतु दिया गया है। इसमें से परीक्षा में 25 बोलों के प्रश्नोत्तर तथा आधार-संदर्भ नहीं पूछे जायेंगे।

4. प्रश्न-पत्र का प्रस्तावित प्रारूप इस प्रकार होगा-

1. बहुविकल्पात्मक प्रश्न (अ,ब,स,द)-	10 अंक	10 प्रश्न
2. हाँ/नहीं के प्रश्न -	10 अंक	10 प्रश्न
3. जोड़ियाँ मिलान -	10 अंक	10 प्रश्न
4. मुझे पहिचानो -	20 अंक	10 प्रश्न
5. एक-दो पंक्ति में उत्तर दीजिए -	18 अंक	09 प्रश्न
6. तीन-चार पंक्तियों में उत्तर दीजिए -	32 अंक	08 प्रश्न
	100 अंक	**57 प्रश्न**

5. 10 थोकड़ों का प्रस्तावित जैनागम स्तोक वारिधि पाठ्यक्रम प्रथम भाग पुस्तक में देखा जा सकता है।

6. शिक्षण बोर्ड की कक्षा 1 से 12 तक की परीक्षा अब केवल जुलाई माह में ही आयोजित की जायेगी।

7. परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन पत्र व पुस्तकें बोर्ड कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं। जैनागम स्तोक वारिधि परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन पत्र जमा कराने की अन्तिम तिथि 15 दिसम्बर, 2011 है।

8. आवेदन-पत्र व पुस्तक-प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें- **सुशीला बोहरा**, संयोजक-94141-33879, **धर्मचन्द जैन**, रजिस्ट्रार-93515-89694, **शिक्षण बोर्ड** कार्यालय-0291-2630490

जोधपुर में श्राविका मण्डल का शिविर सम्पन्न

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर 1008 पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा एवं साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी

जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में महिलाओं का आध्यात्मिक एवं नैतिक शिविर सामायिक-स्वाध्याय भवन पावटा में श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के द्वारा सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। इस दो दिवसीय शिविर का समय दिन में 11.45 से 4 बजे तक रखा गया। इस शिविर में जोधपुर के उपनगर पावटा, लक्ष्मीनगर, महामंदिर, सरदारपुरा, हाउसिंग बोर्ड, सिंहपोल, प्रतापनगर, सरस्वती नगर, घोड़ों का चौक आदि सभी क्षेत्रों की लगभग 225 महिलाओं ने भाग लिया। शिविर में परमश्रद्धेय प्रमोदमुनि जी म.सा. का प्रतिदिन 3 से 4 बजे तक मार्गदर्शन मिला। आपने बहुत से थोकड़े सिखाये एवं महिलाओं की जिज्ञासा का समाधान किया। शिविर में बोर्ड के द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार सात कक्षाएँ आयोजित की गईं। जैनागम-स्तोक वारिधि परीक्षा की भी तैयारी करवाई गई। 150 बहिनों ने परीक्षा देने हेतु बोर्ड के फार्म भी भरे। शिविर में विद्वान् अध्यापक श्री धर्मचन्द जी जैन, श्री नरपत जी चौपड़ा, श्री मूलचन्द जी बाफना, श्री अरूण जी मेहता, श्रीमती सुशीला जी बोहरा, श्रीमती मोहनकौर जी जैन आदि ने कक्षाएँ ली। शिविरार्थियों का मूल्यांकन करने हेतु परीक्षा ली गई।

-सुनीता मेहता, अध्यक्ष

जोधपुर में 10 केन्द्रों पर प्रति रविवार संस्कार शिविर

परमपूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की पावन प्रेरणा से श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा चातुर्मासोपरान्त रविवारीय संस्कार शिविर का शुभारम्भ 13 नवम्बर 2011 से किया गया है, जिसमें 8 से 18 वर्ष के बालक-बालिकाओं द्वारा जोधपुर के अग्रांकित 10 क्षेत्रों के स्थानकों में शिक्षण प्राप्त किया जा रहा है- 1. घोड़ों का चौक, 2. सिंहपोल, 3. पावटा, 4. शक्तिनगर, 5. महामन्दिर, 6. चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, 7. प्रतापनगर, 8. गुलाबनगर, 9. नेहरू पार्क एवं 10. सरस्वती नगर। शिविर प्रत्येक रविवार को प्रातः 8.30 से 10.30 बजे तक चल रहा है। शिविर में बालक-बालिकाएँ नियमित रूप से भाग लेकर सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल एवं थोकड़ों का ज्ञानार्जन कर रहे हैं। इस शिविर में सभी क्षेत्रों पर लगभग 50 से 80 अध्यापक अपनी अमूल्य सेवाएँ अवैतनिक रूप से प्रदान कर रहे हैं, कार्यकर्ता पूरे जोर-शोर से सभी क्षेत्रों पर सुचारू व्यवस्था में सहयोग कर रहे हैं। अब तक 13, 20, 27 नवम्बर को क्रमशः 565, 712 एवं 770 बालक-बालिकाओं ने भाग लेकर विद्वान् अध्यापकों से ज्ञान-ध्यान सीखा है। शिविर

संचालन हेतु विभिन्न दानदाताओं का अर्थ सहयोग प्राप्त हो रहा है। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के द्वारा संचालित इस रविवारीय शिविर कार्यक्रम का कुशल संचालन स्वाध्याय संघ के सचिव श्री राजेश जी भण्डारी एवं आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र के सचिव श्री सुभाष जी हुण्डीवाल कर रहे हैं।

-मानेन्द्र ओस्तवाल, मंत्री

वैशाली नगर अजमेर में क्षेत्रीय शिविर सम्पन्न

व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में दिनांक 29 अक्टूबर से 01 नवम्बर 2011 तक क्षेत्रीय धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित किया गया। शिविर में लगभग 80 बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। शिविर में बच्चों ने ज्ञानार्जन के साथ-साथ आत्महत्या नहीं करने, अन्य जाति में विवाह नहीं करने, सप्त कुव्यसन का त्याग रखने, प्रतिदिन माता-पिता को प्रणाम करने का नियम ग्रहण किया। अध्यापन हेतु श्रीमती ममता जी भण्डारी-अजमेर, श्री त्रिलोकचन्द जी जैन-जयपुर, श्री दिलीप जी जैन-जयपुर ने सेवाएँ प्रदान की। महासती मण्डल ने भी अपनी अमूल्य सेवाएँ शिविर में प्रदान की।

चौदहवाँ महावीर अवार्ड वितरण समारोह सम्पन्न

भगवान् महावीर फाउण्डेशन द्वारा चेन्नई में 9 नवम्बर 2011 को आयोजित 14वें महावीर अवार्ड वितरण समारोह में शाकाहार व अहिंसा के प्रचारक बैंगलुरू मूल के दयानंद स्वामी, शिक्षा क्षेत्र में मुम्बई के भारतीय ग्रहमालिका संगठन के प्रतिनिधि डॉ. जे.जे. रावल, स्वास्थ्य के क्षेत्र में वॉलंटरी हैल्थ सर्विसेज (वीएचएस) चेन्नई के प्रतिनिधि डॉ. ई.एस. कृष्णमूर्ति व समाज सेवा के लिए महाराष्ट्र के सोलापुर के स्नेहालय सोशल चैरिटेबल ट्रस्ट के प्रतिनिधि प्रदीप कुमार सिंघवी को अवार्ड व 10 लाख के नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार मुख्यातिथि पश्चिम बंगाल के राज्यपाल एम.के. नारायणन के कर-कमलों से प्रदान किया गया। फाउण्डेशन के प्रबन्ध न्यासी श्री सुगालचन्द जैन ने बताया कि इस वर्ष अवार्ड्स की संख्या तीन से बढ़ाकर पाँच एवं पुरस्कार राशि पाँच से दस लाख रुपये की गई है। मुख्यातिथि ने कहा कि उनको यह पता नहीं है कि राजस्थानियों में मानवीय सेवा का गुण धर्मनिष्ठा से है अथवा सामाजिक सरोकार की वजह से, लेकिन यह तय है कि

कल्याण कार्यों में अग्रणी हर दूसरा व्यक्ति मारवाड़ी अथवा जैन समुदाय से ही होता है।

पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी में पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारम्भ

जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूँ ने पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी को बी.ए., बी.कॉम., बी.लिब., एम.ए. (जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन, जीवन-विज्ञान, हिन्दी, अंग्रेजी, प्रेक्षाध्यान तथा योग, शिक्षा विज्ञान) एवं प्रमाण-पत्र (जैन धर्म-दर्शन, प्राकृत) परीक्षा आयोजित करने हेतु केन्द्र के रूप में नामित किया है। अतः जो व्यक्ति पत्राचार के माध्यम से इन परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना चाहते हैं वे संस्थान के निदेशक प्रो. सुदर्शनलाल जैन एवं पाठ्यक्रम संयोजक डॉ. अशोक कुमार सिंह से सम्पर्क कर पाठ्यक्रम की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। परीक्षा जुलाई 2012 में सम्पन्न होगी। सम्पर्क सूत्र- प्रो. सुदर्शनलाल जैन-निदेशक शोध, 9415388218, डॉ. अशोक कुमार सिंह- संयोजक, 8765508520

स्व. श्री प्रदीपकुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य-पुरस्कार हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर द्वारा विगत कई वर्षों से उत्कृष्ट साहित्य पर स्व. श्री प्रदीपकुमार रामपुरिया स्मृति-साहित्य-पुरस्कार प्रदान किया जाता रहा है। वर्ष 2011 हेतु साहित्य पुरस्कार प्रविष्टि सादर आमंत्रित है। यह साहित्य पुरस्कार जैन धर्म, दर्शन, इतिहास, कला एवं संस्कृति तथा जैन साहित्य, काव्य कला, निबन्ध, नाटक, संस्मरण एवं जीवनी आदि के सम्बन्ध में लिखित मौलिक ग्रन्थ पर दिया जाता है। चूंकि यह वर्ष संघ का स्वर्ण जयन्ती वर्ष है अतः इस बार यह पुरस्कार 51 हजार रुपये नकद के स्थान पर 1 लाख रुपये नकद, शॉल, श्रीफल एवं प्रशस्ति पत्र अर्पित किया जाना निश्चित किया गया है। पुरस्कार चयन के लिये निर्धारित नियम निम्नानुसार हैं- 1. अन्य संस्थाओं द्वारा पूर्व में पुरस्कृत कृति पर यह पुरस्कार नहीं दिया जाएगा। 2. पुरस्कार हेतु प्रकाशित/अप्रकाशित (पाण्डुलिपि) दोनों प्रकार की कृतियाँ निर्धारित आवेदन पत्र के साथ 26 जनवरी, 2012 से पूर्व प्रस्तुत की जा सकती है। 3. प्रकाशित कृति का प्रकाशन वर्ष 2004 से 2011 के मध्य होना चाहिए।

4. पुरस्कार मूल्यांकन के लिये कृति की मुद्रित 4 प्रतियाँ एवं पाण्डुलिपि की एक प्रति निःशुल्क भेजनी होगी। कृतियाँ पुनः नहीं लौटाई जायेंगी। 5. अप्रकाशित कृति (पाण्डुलिपि) की प्रति स्पष्ट टंकण की हुई अथवा हस्तलिखित सुवाच्य एवं जिल्द बंधी होनी चाहिये। 6. पुरस्कार हेतु प्रतिभागी विद्वानों के लिए यह आवश्यक होगा कि वे कृति के सम्बन्ध में स्वयं की कृति होने एवं इसके मौलिक होने का प्रमाणपत्र कृति के साथ भेजें। 7. आवेदन-पत्र मंगवाने एवं पुरस्कार प्रतियोगिता हेतु भेजने का पता है- ***पीरदान पारख, संयोजक***- स्व. श्री प्रदीपकुमार रामपुरिया स्मृति-साहित्य-पुरस्कार, द्वारा श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, श्री जैन पी.जी. कॉलेज के सामने, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)

पार्श्वनाथ विद्यापीठ में दो व्याख्यान सम्पन्न

प्रथम व्याख्यान डॉ. विमलचन्द्र जैन, सेवानिवृत्त प्राचार्य, शासकीय महाविद्यालय, बारां का 15 सितम्बर 2011 को ''जैन भूगोल : एक नवीन अवधारणा'' विषय पर हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध विद्वान् प्रो. आर. एस. यादव, भूगोल विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने की। द्वितीय व्याख्यान जैन विश्वभारती, लाडनूँ से समागत विदुषी समणी शारदाप्रज्ञा जी का 20 सितम्बर 2011 को 'भगवान् महावीर का वर्तमान समाज को अवदान' विषय पर हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के धर्मविज्ञान संकाय के प्रो. डॉ. आर.सी. पण्डा ने की तथा मुख्यातिथि प्रो. कृष्णकान्त शर्मा, धर्मविज्ञान संकाय थे।

अखिल भारतीय 'कल्प-संहिता' ज्ञान प्रतियोगिता

श्रुतप्रेमी साध्वी युगल निधि-कृपा श्री द्वारा लिखित पुस्तक ''कल्प-संहिता'' पर आधारित आगमपरक खुली किताब परीक्षा 2011-2012 का आयोजन किया जा रहा है। मैत्री चैरिटेबल फाउण्डेशन, दिल्ली द्वारा इस अखिल भारतीय 'कल्प-संहिता' अष्टम ज्ञान प्रतियोगिता की पुस्तक का मूल्य 150/- रजिस्ट्रेशन फीस 25/- तथा प्रश्नपुस्तिका का मूल्य 25/- है। प्रश्नपुस्तिका भरकर भेजने की अन्तिम तिथि 1 मई 2012 है। प्रतियोगिता का परिणाम 1 अक्टूबर 2012 को साध्वी युगल निधि कृपा की वेबसाइट पर उपलब्ध होगा।

'तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

जबलपुर- संतप्रवर श्री सुधासागर जी महाराज के सान्निध्य में 4 से 6 अक्टूबर 2011 को 'तत्त्वार्थसूत्र' पर आचार्य विद्यानन्द द्वारा रचित 'तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। संगोष्ठी में 40 से अधिक विद्वानों ने शोधपत्रों का वाचन किया। संगोष्ठी का संयोजन डॉ. जयकुमार जैन-मुज्जफरनगर, डॉ. कमलेश कुमार जैन-वाराणसी तथा डॉ. अतुल कुमार जैन-वाराणसी ने किया। यह आयोजन दिगम्बर जैन पंचायत के तत्त्वावधान में सम्पन्न हुआ। संगोष्ठी में डॉ. धर्मचन्द जैन ने तत्त्वार्थश्लोक-वार्तिक के आधार पर निर्विकल्प प्रत्यक्ष एवं स्व-संवेदन प्रत्यक्ष की चर्चा की।

संक्षिप्त-समाचार

गंगापुर सिटी- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. के चातुर्मास से यहाँ पहली बार दो मासखमण सम्पूर्ण हुए। इसके अतिरिक्त उपवास, बेला, तेला, पचोला, 6, 7, 8,9,11, 21 की तपस्याएँ भी हुई हैं। कषाय-त्याग, टी.वी. देखने का त्याग, चाय का त्याग, नवकारसी, रात्रि-भोजन त्याग तथा ब्रह्मचर्य पालन के मासखमण भी सम्पन्न हुए हैं।

अजमेर- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. के वैशाली नगर चातुर्मास में विभिन्न शिविरों के माध्यम से बालक, बालिका, महिला एवं श्रावक वर्ग ने अच्छा लाभ लिया। चातुर्मास काल में प्रतिदिन आयम्बिल, उपवास, एकासन की लड़ी चली। चातुर्मास में 15 अठाई, 5 ग्यारह, 2 नौ, 2 पाँच, 5 चार, 100 तेले, 1 मासखमण, 1एकासन का मासखमण, 2 आयम्बिल मासखमण तथा 500 के लगभग एकासन की तपश्चर्या हुई। भिक्षु दया, धर्मचक्र, पचरंगी भी हुई। चातुर्मास प्रारम्भ से अब तक 15 शीलव्रत के प्रत्याख्यान हुए।

अहमदाबाद- भारत के पूर्व राष्ट्रपति भारत रत्न डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने भारतीय संस्कृति के अध्ययन, संशोधन, प्राचीन हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थों के संरक्षण के क्षेत्र में अग्रणी संस्था लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर में 11 नवम्बर 2011 को इलेक्ट्रॉनिक लायब्रेरी परियोजना का उद्घाटन किया।

वैशाली- मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार द्वारा संचालित प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली के सभागार में 23 अक्टूबर

2011 को डॉ. गुलाबचन्द्र चौधरी स्मारक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन सांसद एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. रघुवंशप्रसाद सिंह ने किया तथा व्याख्यानमाला की अध्यक्षता राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान् डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव ने की। मुख्य वक्ता के रूप में प्राच्य भाषाओं की विदुषी डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्रा ने 'वैदिक और श्रमण के योगदान' को रेखांकित किया। व्याख्यानमाला में अन्य विद्वानों ने भी विचार प्रस्तुत किये। इसी आयोजन में वर्ष 2009 में एम.ए. प्राकृत और जैनशास्त्र की परीक्षा में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त संस्थान के छात्र श्री सुरेन्द्र कुमार को श्रीमती तुलसीदेवी गोरेलाल जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, नागपुर द्वारा प्रवर्तित प्रोफेसर 'भागचन्द्र पुष्पलता जैन' स्वर्णपदक प्रदान किया गया। इस अवसर पर संस्थान द्वारा प्रकाशित अपभ्रंश भाषा के महाकवि रइधू रचित 'सन्मति चरित' तथा आचार्य जिनप्रभ सूरि कृत 'कल्पप्रदीप' (अपरनाम विविधतीर्थकल्प) पुस्तकों का लोकार्पण किया गया।

मुम्बई- उत्तरी अमेरिका की **JAINA** संस्था के अन्तर्गत जैन लीडरशीप सम्मेलन का आयोजन जनवरी 2012 में मुम्बई व दिल्ली में किया जा रहा है। इस सम्मेलन का उद्देश्य विश्व के जैन समुदाय में पारस्परिक भाईचारा, सहयोग, सामाजिक शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं की जानकारी उपलब्ध कराकर समाज के प्रत्येक सदस्य को सुखी, शिक्षित, स्वस्थ और आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बनाना है। साथ ही साथ विभिन्न जैन संस्थाएँ जो इन कार्यों में संलग्न हैं उन्हें और सुदृढ़, आधुनिक टेक्नोलोजी से सुसज्जित कर उनकी सेवाएँ जैन परवर्ती समाज को उपलब्ध कराना है। शुगनचन्द जैन-09818139000, ई-मेल : **svana@vsnl.com**

अहमदाबाद- लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, गुजरात विश्वविद्यालय के पास अहमदाबाद में 16-17 फरवरी 2012 को राष्ट्रीय स्तर पर प्राकृत हस्तलिखित ग्रन्थों पर सेमिनार का आयोजन राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नई दिल्ली के सहयोग से किया जायेगा। इस विशिष्ट सेमिनार में लुप्तप्राय एवं अल्पज्ञात प्राकृत भाषा में लिखित हस्तलिखित ग्रन्थों में विद्यमान अप्रकाशित कृतियों पर प्रकाश डाला जाएगा। इच्छुक शिक्षार्थी आवेदन कर सकते हैं। ई-मेल **jitendrabshah@yahoo.com**

पुणे- भारतीय जैन संघटना, पुणे जैन समाज के विवाह योग्य अनिवासी भारतीय लड़के एवं लड़कियों के लिए 25 दिसम्बर 2011 को एक परिचय सम्मेलन

आयोजित कर रहा है। सम्मेलन 'होटल ओ' नॉर्थ मेन रोड, कोरेगाँव पार्क, पुणे-1 में प्रातः 9.30 बजे से आरम्भ होगा। यह सम्मेलन एक ही दिन में अनेक उम्मीदवारों को एक-दूसरे से बातचीत करने का एक साझा मंच प्रदान करता है। इस सम्मेलन के आवेदन पत्र बीजेएस के मुख्य कार्यालय- मुथ्था चैम्बर, सहारा होटल के सामने, सेनापति बापट रोड, पुणे-16 में मुफ्त उपलब्ध हैं। आवेदन पत्र वेबसाइट **www.bjsindia.org** से भी डाउनलोड किये जा सकते हैं। अन्य जानकारी के लिए श्री अनिल साल्वे 9158828000 या श्री शशि मुणोत 9420477052 से सम्पर्क करें।

बधाई/चुनाव

डॉ. सुषमा सिंघवी राजस्थान संस्कृत अकादमी की अध्यक्ष

जयपुर- श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की निदेशक एवं वर्द्धमान

महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा के जयपुर क्षेत्र की पूर्व निदेशक, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर में अपरिग्रह कोश की सम्पादक डॉ. सुषमा सिंघवी को राजस्थान सरकार ने राजस्थान संस्कृत अकादमी का अध्यक्ष नियुक्त किया है। उन्होंने 24 नवम्बर 2011 को तीन वर्ष के लिए कार्यभार सम्हाल लिया है। विदुषी डॉ. सुषमा जी अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की अध्यक्ष भी रही हैं एवं वरिष्ठ स्वाध्यायी भी हैं।

दिल्ली- प्राच्य विद्या के सुप्रतिष्ठित संस्थान भोगीलाल लहेरचन्द इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डोलोजी के नए निदेशक प्रो. फूलचन्द जैन नियुक्त हुए हैं। आप प्राकृत-संस्कृत तथा प्राच्य विद्याओं के विद्वान् हैं। आप सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में जैन दर्शन विभाग के अध्यक्ष तथा प्रोफेसर रह चुके हैं।

सुमेरगंजमण्डी- श्री ऋषभ जैन सुपुत्र श्री लक्ष्मीनारायण जैन, शारीरिक शिक्षक,

अन्धोरा को उपनिदेशक माध्यमिक शिक्षा विभाग की ओर से कोटा मण्डल के शिक्षक सम्मान समारोह में सम्मानित किया गया। उन्हें शॉल ओढाकर प्रशस्ति पत्र और स्मृति-चिह्न भेंट किया गया। यह पुरस्कार उन्हें उत्कृष्ट शिक्षक की भूमिका एवं सराहनीय लोक-सेवा के सार्वजनिक अभिनन्दन स्वरूप दिया गया।

भवानीमण्डी- प्राणिमित्र श्री नितेश नागोता को 10 नवम्बर 2011 को जयपुर में आयोजित समारोह में राजस्थान जन मंच एवं श्री उत्तम कल्याण ट्रस्ट, जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में जैन अहिंसा अवार्ड से सम्मानित किया गया। इससे पूर्व भी उन्हें कई राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

सवाईमाधोपुर- श्री इन्द्रप्रसाद जैन सुपुत्र श्री हेमराज जी जैन ने सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप 13 वर्षों से स्वाध्यायी के रूप में सेवा दे रहे हैं। आपने 60 से अधिक धार्मिक-शिविरों में अध्यापन कार्य भी किया है।

जयपुर- श्री जितेश जैन सुपुत्र श्री गुलाबचन्द जैन ने अखिल भारतीय विद्यार्थी

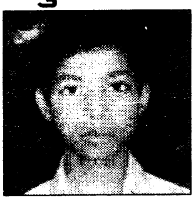

परिषद् द्वारा आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। इसके पूर्व आपको Care Promise Welfare Society की ओर से सामाजिक कार्यों में अग्र रहने पर दो बार गोल्ड मेडल से सम्मानित किया जा चुका है।

उदयपुर- उदयपुर की कवयित्री श्रीमती रेणु सिरोया धर्मपत्नी श्री मुकेश सिरोया को अखिल भारतीय साहित्य संगम, उदयपुर द्वारा हिन्दी साहित्य की बहुमूल्य सेवा करने के लिए 'काव्य कुमुदिनी' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

अलवर- श्री नमन पालावत सुपुत्र श्री रविकुमार-मंजू पालावत ने सी.ए.,

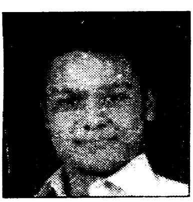

एम.कॉम. प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की। आप एम.टी.सी. ग्रुप, मुम्बई में नियुक्त हुए। आपके पूरे परिवार की आचार्यप्रवर एवं संत-साध्वी मण्डल के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति है। आप स्व. श्री अमरचन्द जी दुधेड़िया अजमेर वालों के दौहित्र है।

चौथ का बरवाड़ा- श्री पंकज कुमार सुपुत्र श्री श्योप्रसाद जैन की द्वितीय श्रेणी अध्यापक के रूप में राजकीय माध्यमिक विद्यालय, काठोड़ी-जैसलमेर में नियुक्ति हुई। आप 2009 से स्वाध्यायी के रूप में पर्युषण सेवा दे रहे हैं तथा जयपुर में श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान के छात्र रहे हैं।

बाल्यकाल में उपलब्धियाँ

पीपाड़- अंजलि लुणावत ने 6 वर्ष की वय में सामायिक, प्रतिक्रमण और 25

बोल स्मरण किए। अखिल लुणावत ने 8 वर्ष की वय में सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल, भक्तामर, दशवैकालिक के 1 से 6 अध्ययन और पुच्छिस्सुणं याद कर लिए।

जयपुर- सम्यक् बोहरा को आचार्य हस्ती स्मृति अलंकरण से सम्मानित किया गया। उन्होंने 10 वर्ष की वय में तेले की तपस्या तथा संस्कार शिविर में सम्पूर्ण प्रतिक्रमण कण्ठस्थ किया।

बैंगलुरु- पाँच वर्षीय श्री खीमेश लोढ़ा ने सम्पूर्ण प्रतिक्रमण कण्ठस्थ किया है।

श्रद्धाञ्जलि

मुम्बई- दिगम्बर आचार्य श्री सुबाहुसागर जी महाराज का पोदनपुर, बोरीवली में 4 नवम्बर 2011 को 89 वर्ष की वय में संलेखनापूर्वक समाधिमरण हो गया।

इन्दौर- संस्कार शिरोमणि साध्वी सुगनकंवर जी म.सा. का 25 अक्टूबर 2011 को संथारा सहित देवलोकगमन हो गया।

पीपाड़- वीरदादी धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती मोहनदेवी धर्मपत्नी श्री रामलाल जी

कवाड़ का 83 वर्ष की वय में 7 नवम्बर 2011 को स्वर्गगमन हो गया। आप प्रतिदिन 8-10 सामायिक करती थीं। आपके 40 वर्ष से चौविहार एवं जमीकन्द का त्याग था। आपने अपने जीवनकाल में 8, 9, 11 की तप-आराधना की। आप रत्नसंघ में दीक्षित साध्वी श्री सिंधुप्रभा जी म.सा. की सांसारिक दादीजी थीं।

जोधपुर- श्रद्धानिष्ठ, सुश्रावक श्री गौतममल जी गांग पुत्र श्री कानमल जी गांग का

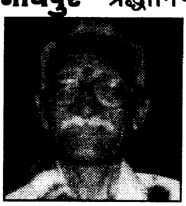

5 नवम्बर 2011 को 68 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आप शासन की प्रभावना में तत्पर रहते थे। गुरु भक्ति के प्रताप से आपने छह, अठाई, वर्षीतप की तपस्या भी की थी। आप माह में छह उपवास, पन्द्रह-बीस दया-पौषध व प्रतिदिन ग्यारह सामायिक किया करते थे। चार खंद के प्रत्याख्यान के साथ आपने आजीवन मिठाई, शक्कर आदि का पूर्ण त्याग कर दिया था। आप अपना अधिकांश समय धर्म-ध्यान व स्थानक में व्यतीत करते थे।

बैंगलुरु- संघसेवी युवारत्न श्री विनोद जी डोसी का 16 नवम्बर 2011 को देहावसान हो गया। आप श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ श्रावक थे। आपकी संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति थी। समायिक-स्वाध्याय के प्रति उनकी

विशेष रुचि थी। संघ एवं समाज की गतिविधियों में उनका सदैव तन-मन-धन से सहयोग रहता था। बैंगलुरू चातुर्मास में तथा चातुर्मास पश्चात् विचरण-विहार में आपकी महनीय सेवाएँ रहीं।

रावटी (म.प्र.)- समतानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सज्जनबाई मेहता धर्मपत्नी श्री

सागरमल जी मेहता का 82 वर्ष की उम्र में 9 नवम्बर 2011 को 3 दिन के तिविहार संथारे सहित समाधिमरण हो गया। सरलमना शांत स्वभावी सुश्राविका रुग्णावस्था में भी शांत और प्रसन्नचित्त रहीं।

जयपुर- स्वाध्यायप्रेमी सुश्रावक श्रीमान् प्रकाशचन्द जी नवलखा (डाक्टर बाबू)

सुपुत्र स्व. श्री मोहनलाल जी नवलखा का 12 नवम्बर 2011 को स्वर्गगमन हो गया। आप कई सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं से जुड़े हुए थे और आपने समाज को अपनी सेवाओं से गौरवान्वित किया। आप धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में सदैव रुचि रखते थे। आपका पूरा परिवार तन, मन, धन से सदैव सहयोग प्रदान करने के लिए अग्रणी रहता है।

जयपुर- सुश्राविका श्रीमती मालती देवी पुंगलिया धर्मपत्नी स्व. श्री चम्पालाल

जी पुंगलिया का 75 वर्ष की आयु में 6 नवम्बर 2011 को स्वर्गगमन हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय करती थीं एवं संत-सतियों की सेवा में अग्रणी रहती थीं। आप शांत स्वभावी, सरलमना एवं धार्मिक रुचि वाली श्राविका थीं।

कुण्डेरा- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री रामबिलास जी जैन का 98 वर्ष की आयु में 29

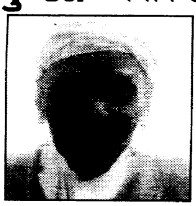

अक्टूबर 2011 को स्वर्गवास हो गया है। आपका जीवन सहजता, सरलता एवं सादगी से परिपूर्ण था। मिलनसारिता का गुण होने से आप परिवारजनों में प्रिय थे तथा सेवा में हमेशा तत्पर रहते थे।

खरियार रोड- धर्मसाधिका, सरलमना श्रीमती अनोपी बाई पुगलिया धर्मपत्नी स्व. श्री कन्हैयालाल जी पुगलिया का 90 वर्ष की वय में संथारा पूर्वक मरण हो गया। आप सभी साधु-संतों की सेवा में अग्रणी रहती थीं। आपके विगत कई वर्षों से आजवीन रात्रि-भोजन एवं जमीकन्द का त्याग था।

जयपुर- संघ समर्पित सुश्रावक श्री संग्रामसिंह जी कोठारी का 9 नवम्बर 2011 को देवलोकगमन हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आपके पिताश्री एवं नानाश्री पर आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का विशेष प्रभाव था।

पैरम्बुर-चेन्नई- धर्मानुरागी सुश्राविका श्रीमती हगामबाई जी पटवा धर्मपत्नी स्व.

श्री मांगीलाल जी पटवा का 10 अगस्त 2011 को संथारा सहित देवलोकगमन हो गया। आप धार्मिक कार्यों में सदैव आगे रहती थीं तथा नियमित सामायिक-साधना, प्रतिक्रमण आदि करती थीं। आपकी समाज, परिवार तथा सम्बन्धियों के प्रति समर्पित सेवाएँ अनुकरणीय हैं।

उदयपुर- छन्दराज कविवर श्री ओमप्रकाश डांगी 'पारदर्शी' का 71वर्ष की वय में

12 अक्टूबर 2011को स्वर्गवास हो गया। श्री पारदर्शी की पार्थिव देह को संकल्पानुसार आर.एन.टी. मेडिकल कॉलेज, उदयपुर में अध्ययनरत शोधार्थियों के अनुसंधान हेतु समर्पित किया गया। आपने 35 वर्ष पूर्व देहदान का संकल्प समाचार-पत्रों के माध्यम से निम्बाहेड़ा (राजस्थान) में किया था। आपने साहित्य की दश विधाओं कविता, दोहे, कुंडलियाँ, सवैया, हाइकू, गीत, गजल, पैरोडियाँ, भक्ति-स्तवनों आदि में विपुल काव्य सर्जन किया।

चेन्नई- कर्त्तव्यपरायण सुश्रावक श्री विमलचन्द जी बोरून्दिया का समाधिभाव एवं

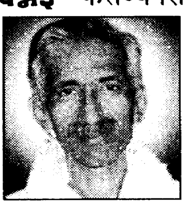

जागृत अवस्था में धर्म-श्रवण करते हुए सागारी संथारा के साथ 55 वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। धर्म के प्रति गहरी रुचि और चारित्रनिष्ठ आत्माओं के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा थी। आपने अपने जीवनकाल में कई गुप्त प्रत्याख्यानों का निर्दोषता पूर्वक पालन किया। कम खाना, गम खाना और नम जाना आपके जीवन का सार था। आपकी सुपुत्री कु. राजुल बोरून्दिया मद्रास युनिवर्सिटी में जैनोलॉजी विभाग में अध्यापन कराती है।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन सदस्यता हेतु प्रत्येक

13264 Dr. Ajit Kumar ji Jain, Bhadgaon, Jalgaon (M.H.)
13265 Shri Anil Kumar ji Tated, Police Choki, Baroda (Gujrat)
13266 Shri Lokesh Kumar ji Jain (IAS), Navi Mumbai (M.H.)
13267 Shri BudhiPrakashji Jain,Andwa, Sawaimadhopur (Raj.)
13268 Shri Mahavir Chand ji Mehta, Bangaluru(Karnataka)
13269 श्री ऋषभजी डागा, डागा बाजार,जोधपुर(राज.)
13270 श्री राजकुमार जी देसर्डा, सदरबाजार, गंगापुर,जिला-भीलवाड़ा (राज.)
13271 श्री अंकित जी बाफणा, महावीर नगर-प्रथम, जयपुर (राजस्थान)
13272 श्री प्रसन्नराजजी कांकरिया,शान्तिपुरा, हाथीराम ओड़ा, जोधपुर (राज.)
13273 न्यायाधिपति डॉ. विनीतजी कोठारी,पी.डब्ल्यू.डी.कॉलोनी,जोधपुर(राज.)
13274 श्री राजेन्द्र जी मेहता, उमरगाँव रोड़,सोलसुमबा,जिला–वलसाड (गुज.)
13275 Shri Sanjay N. Kacholia, Bangaluru (Karnataka)
13276 श्री नाथूलाल जी सुराणा, दरीबा माइन्स, जिला-राजसमन्द (राजस्थान)
13277 Shri Ranjit ji Chajjed, Vepery, Chennai (Tamilnadu)
13278 Shri M. P. Bafna ji, Chennai-600001 (Tamilnadu)
13279 डॉ. विमलचन्द जी जैन, पारिजात, 13, गायत्री नगर, बून्दी (राज.)
13280 श्री जितेन्द्र जी भंडारी,प्लॉट नं.1,न्यू पावर हाउस रोड़, जोधपुर (राज.)
13281 श्री अनिल जी ढेलड़िया, मु.पोस्ट–नगरी, जिला–धमतरी (छत्तीसगढ़)
13282 श्री दलवीरसिंह जी ढढ्ढा, उपखण्ड अधिकारी,फलौदी,जोधपुर (राज.)
13283 Shri Sampat ji Ranka, Kandiwali (East), Mumbai (M.H.)

जिनवाणी हेतु साभार-प्राप्त

5100/- श्री सागरमल जी, महावीर जी, राजेश जी छाजेड़, चेन्नई, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा, उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा एवं साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा सन्त-सती वृन्द के दर्शन-वन्दन व प्रवचन श्रवण के लिए सपरिवार उपस्थित होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

4000/- श्रीमती सुशीला जी गांग, राजेन्द्र जी गांग, जोधपुर, पूज्य गौतममल जी गांग का 5 नवम्बर,2011 को देहावसान होने पर उनकी पावन स्मृति में उनके परिवार द्वारा भेंट।

2500/- श्री आर बोहरा, दिल्ली, पूज्य उपाध्यायप्रवर प. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के

मुखारविन्द से 29 अगस्त, 2011 को नागौर में आजीवन शीलव्रत ग्रहण करने पर भेंट।

2100/- श्री प्रकाशचन्द जी, सुशील कुमार जी, आयुष्य जी डूँगरवाल, बैंगलोर, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा, उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा एवं साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा सन्त-सती वृन्द के दर्शन-वन्दन व प्रवचन श्रवण के लिए सपरिवार उपस्थित होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री झूमरलाल जी , शान्तिलाल जी, रतनलाल जी, अमृतलाल जी गौतमचंद जी कवाड़, पीपाड़ शहर, अपने पूज्य माताजी स्व. श्री मोहनदेवी धर्मपत्नी श्री रामलाल जी कवाड़ का 07 नवम्बर, 2011 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

2100/- श्री सज्जनराज जी, मदनराज जी, पदमराज जी, पवनराज जी, विमलराज जी मेहता, जोधपुर, परमपूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा एवं साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा के जोधपुर चातुर्मास में दर्शन, प्रवचन लाभ लेने पर भेंट।

2005/- श्री दीपक जी, नेमीचन्द जी मुणोत, पूना, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि सन्त-सतीवृन्द एवं साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा के पावटा-जोधपुर में दर्शन-वन्दन लाभ होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2000/- श्री धनपतमल जी, रोहित कुमार जी चोरड़िया, चेन्नई, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि सन्त-सतीवृन्द एवं साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा के पावटा-जोधपुर में दर्शन-वन्दन लाभ होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1500/- श्री प्रेमचन्द जी गांधी, दिल्ली, अपनी पुत्रवधू मौना जैन के 8 उपवास एवं धर्मपत्नी श्रीमती कमला जी जैन के 3 के उपवास के उपलक्ष्य में भेंट।

1101/- श्री कमलकिशोर जी, अभय कुमार जी कांकरिया, चेन्नई, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा, उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा एवं साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा सन्त-सती वृन्द के दर्शन-वन्दन व प्रवचन श्रवण के लिए सपरिवार उपस्थित होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री पूनमचन्द जी जामड़, जयपुर, सुपौत्र चि. आशीष जी (सुपुत्र श्री वीरेन्द्र जी जामड़) का शुभ विवाह सौ.कां. प्रभा जी के संग दिनांक 6 नवम्बर 2011 को सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री मिश्रीमल जी, दिलीप जी संकलेचा,कलकता-हाल मुकाम सेथिया, परम पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 11 एवं साध्वी प्रमुखा श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के सांसारिक पक्ष के मामाजी की तरफ से भेंट।

1000/- श्री प्रसन्नचन्द चोरड़िया ट्रस्ट, चेन्नई, सप्रेम भेंट।

1000/- श्रीमती नरपतराज जी भण्डारी, जोधपुर, आचार्यप्रवर के दर्शन-वन्दन करने पर सप्रेम भेंट।

1000/- श्री धनपतमल जी, रोहित कुमार जी चोरड़िया, चेन्नई, सुपौत्र चि. यश जी की प्रथम वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री नेमीचन्द जी, राजेन्द्र कुमार जी जैन, कोटा, चि. रॉबिन का शुभ विवाह सौ.कां. शिखा जी के संग सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री हेमचन्द जी, दिलीप कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर, श्री इन्द्रप्रसाद जी जैन के सी.ए. होने एवं कल्पतरु लिमिटेड, मुम्बई में चार्टर्ड एकाउण्टेंट के पद पर कार्यभार ग्रहण करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती इन्द्रा-गौतम जी भण्डारी, जोधपुर, अपनी सुपुत्री सौ. कां. चांदनी (सुपौत्री स्व. श्रीमती कमलादेवी-सुगनचन्द जी भण्डारी) संग चि. मितेश की शादी की सालगिरह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री ऋषभ जी जैन, सुमेरगंज मण्डी, शिक्षक सम्मान मिलने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री राधेश्याम जी, नरेशचन्द जी जैन, जयपुर, श्री रामबिलास जी जैन (कुण्डेरा वाले) का स्वर्गवास दिनांक 29 अक्टूबर 2011 को हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री ज्ञानचन्द जी, पदमचन्द जी लुणावत, पीपाड़ शहर, अखिल लुणावत एवं अंजलि लुणावत द्वारा व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. के पीपाड़ शहर चातुर्मास में ज्ञान सीखने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री सतीश कुमार जी जैन, गाजियाबाद, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि सन्त-सतीवृन्द एवं साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा के पावटा-जोधपुर में दर्शन-वन्दन लाभ होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री नेमीचन्द जी, पुखराज जी जामड़, रियांबड़ी (नागौर), बहिन श्रीमती हगामदेवी जी धर्मपत्नी श्री माँगीलाल जी पटवा, पेराम्बूर-चेन्नई का दिनांक 10 अगस्त 2011 को संथारा सहित महाप्रयाण हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री सागरमल जी मेहता, रावटी-रतलाम, श्रीमती सज्जनबाई जी मेहता धर्मपत्नी श्री सागरमल जी मेहता का दिनांक 9 नवम्बर 2011 को संथारा सहित महाप्रयाण हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

21000/- श्री लाभचन्द जी जैन, जोधपुर, संघ सहायतार्थ।

10000/- श्रीमती ललीता गुलाबचन्द जी कटारिया, श्री निलेश जी, श्री शैलेष जी

कटारिया-जलगांव (महा.) संघ सहायतार्थ।

7100/- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, बीजापुर (कर्नाटक), संघ सहायतार्थ।

5000/- सौ. सरोजा जी, श्री सुशीलकुमार जी बोहरा, तिरुवन्नामल्ले (तमिलनाडू), जीव दया हेतु।

5000/- सौ. चन्द्र जी श्री आनन्द कुमार जी बोहरा, तिरुवन्नामल्लै (तमिलनाडू), जीव दया हेतु।

5000/- श्री पुरुषोत्तम मल जी एवं श्रीमती पूनम जी भण्डारी, मुम्बई, शिक्षा-दीक्षा हेतु।

2600/- श्री सरदार सिंह जी कर्नावट, मुम्बई, जीवदया हेतु।

1500/- सौ. गुलाब कंवर जी मेहता, जोधपुर, संघ सहायतार्थ।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

1100/- श्री प्रेमचन्द जी गांधी, दिल्ली, पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के जोधपुर वर्षावास में चार महीने सेवालाभ लेने पर।

1100/- श्री धमेन्द्र जी जैन, भरतपुर, सहयोग हेतु।

500/- श्री राजकुमार जी जैन, भरतपुर, सहयोग हेतु।

500/- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, कुश्तला, पर्युषण सहायतार्थ।

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड को साभार प्राप्त

51000/- श्रीमान् दलीचन्द जी, अशोक जी कवाड़, मैसर्स पृथ्वी सॉफ्टेक लिमिटेड, पुनमल्ली, चेन्नई, पूज्य पिताजी श्री पृथ्वीराज जी कवाड़ की पावन स्मृति में पुस्तक प्रकाशन हेतु सादर सप्रेम भेंट।

21000/- श्रीमती सुन्दरबाई, चंचलबाई, ललिताबाई कवाड़ (पीपाड़ शहर वाले), पुनमल्ली, चेन्नई, श्री पृथ्वीराज जी कवाड़ की पावन स्मृति में पुस्तक प्रकाशन हेतु सादर सप्रेम भेंट।

11000/- श्री राजमल जी कवाड़, मैसर्स राजमल जैन एण्ड कम्पनी, मुम्बई की तरफ से पुस्तक प्रकाशन हेतु सादर भेंट।

1100/- श्री झुमरलाल जी, शान्तिलाल जी, रतनलाल जी अमृतलाल जी, गौतम जी कवाड़, पीपाड़ शहर, द्वारा सप्रेम भेंट।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

120000/- श्री मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई।

60000/- श्री दुलीचन्द जी बाघमार, चेन्नई।

36000/- श्री रूपकुमार जी, मोहनराज जी, मदनराज जी, धर्मेशकुमार जी चौपड़ा 'कवास

वाले', जोधपुर।

36000/- श्री पी. दलीचन्द जी सुरेशकुमार जी कवाड़ एवं परिवार, पुनमल्लै-चेन्नई, श्री पृथ्वीराज जी कवाड़ की पुण्य स्मृति में भेंट।

24000/- श्री जिनेश जी जैन, जयपुर, की तरफ से।

12000/- श्री राजेन्द्र जी सिंघवी, फरीदाबाद, की तरफ से।

12000/- श्री एस. राजन सोहनलाल जी बाघमार, मैसूर, आचार्यश्री, उपाध्यायश्री एवं साध्वी प्रमुखा आदि संत-सती मण्डल के सपरिवार दर्शन-वंदन करने के उपलक्ष्य में भेंट।

12000/- श्री अनोपचन्द जी बाघमार, चेन्नई, श्रीमती सपना बाघमार धर्मपत्नी श्री पंकज जी बाघमार पुत्रवधू श्रीमान् अनोपचंद जी बाघमार के नौ उपवास की तपस्या करने के उपलक्ष्य में।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***श्री अशोक जी कवाड़,*** 33, *Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

पौष कृष्णा 8	**रविवार**	**18.12.2011**	**अष्टमी**
पौष कृष्णा 10	**मंगलवार**	**20.12.2011**	**भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक**
पौष कृष्णा 14	**शुक्रवार**	**23.12.2011**	**चतुर्दशी**
पौष कृष्णा 30	**शनिवार**	**24.12.2011**	**पक्खी**
पौष शुक्ला 8	**रविवार**	**01.01.2012**	**अष्टमी**
पौष शुक्ला 14	**रविवार**	**08.01.2012**	**चतुर्दशी, पक्खी, आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का 102वाँ जन्म-दिवस**
माघ कृष्णा 4	**शुक्रवार**	**13.01.2012**	**उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. 78वाँ जन्म-दिवस**
माघ कृष्णा 8	**सोमवार**	**16.01.2012**	**अष्टमी**

पर्युषण-सेवा 2011

माह अक्टूबर एवं नवम्बर के अंक में पर्युषण रिपोर्ट प्रकाशित की गई थी। उसके पश्चात् प्राप्त रिपोर्ट निम्नानुसार है-

155. चांगोटोला - श्री मुकेश जी बुरड़, शिरपुर
श्री राकेश जी संकलेचा-शिरपुर

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा से प्रतिकार करें ।

– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाऊस खरीदनें व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती

डेवलोपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

प्लॉट नं. 170 ललवाणी भवन, आस्था हॉस्पीटल के पीछे
द्वितीय पोलो, पावटा, जोधपुर 342001 फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

जो संघ में भक्ति रखता है और शासन की उन्नति करता है, वह प्रभावक श्रावक है।

Opening Ceremony

of

BAGHMAR TOWER

C/o CHANARMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIER'S
S. RAJAN FINANCIERS

BAGHMAR TOWER
218, Ashoka Road 1, Mohalla, Mysore-570001
(Karanataka)

With Best Compliments from :
C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar
Tel. : 4265431 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

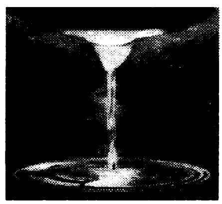

Electric Arc Furnace

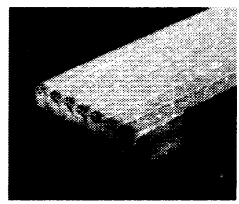

Billets

Rolling Mill

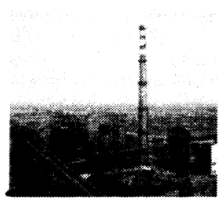

Captive Power Plant

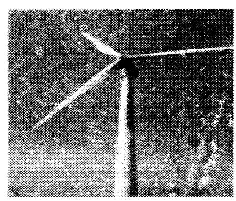

Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजानें के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

आओ प्रत्याख्यान करें

जीवन को निरन्तर उत्कर्ष की ओर ले जाने और गतिशील बनानें के लिए व्रत नियम का पालन अत्यन्त आवश्यक है। मन को वश में करने का एकमात्र उपाय है - **व्रत नियम**। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में छोटे-छोटे व्रत नियम को ग्रहण कर सफल बना सकें, इस उद्देश्य के लिए ही अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद द्वारा ''आओ प्रत्याख्यान करें'' पुस्तक का प्रकाशन विगत वर्षों से किया जा रहा है। इस वर्ष भी किया गया है। आप अपने क्षेत्र में आओ प्रत्याख्यान करें पुस्तक मंगवाने के लिए सम्पर्क करें -.
राजकुमार गोलेच्छा, पाली (9829020742), **मनोज कांकरिया,** जोधपुर (9414563597), **मनीष जैन,** चैन्नई (09543068382/044-42728476)

ज्ञान का दीया जलाइये, सहयोग के लिए आगे आइये
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का लाभ उठाकर आनन्द पाइये

आदरणीय रत्न बंधुवर

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए रू. 12000 के गुणक में दान राशि "Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund" योजना के नाम चैक/डाफ्ट (Donation to Gajendra Nidhi are Exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) देने के लिए **निम्नांकित व्यक्तियों से सम्पर्क करें** –

1. अशोक कवाड़, चैन्नई (9381041097),
2. सुमतिचन्द मेहता पीपाड़ (9414462729),
3. महेन्द्र सुराणा, जोधपुर (9414921164),
4. बुधमल बोहरा,चैन्नई (9444235065),
5. राजकुमार गोलेच्छा,पाली (9829020742)
6. मनोज कांकरिया, जोधपुर (9414563597),
7. कुशलचन्द जैन, सवाई माधोपुर (9460441570)
8. प्रवीण कर्णावट, मुम्बई (9821055932),
9. जितेन्द्र डागा, जयपुर (9829011589)
10. महेन्द्र बाफना,जलगांव (9422773411),
11. हरीश कवाड़,चैन्नई (9500114455)

सहयोग राशि भेजने,योजना संबंधी अन्य जानकारी एवं आवेदन पत्र प्रेषित करने के लिए निम्न पत्ते पर सम्पर्क करें–

B.BUDHMAL BOHRA
No.-53,Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)
Telefax No - 044-42728476

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 68 ★ अंक : 12 ★ मूल्य : 10 रु.
10 दिसम्बर, 2011 ★ मार्गशीर्ष-पौष, 2068

Kalpataru
AURA

• Awarded Best Architecture (Multiple Units) at Asia Pacific Property Awards 2010 • A complex of multi-storeyed buildings • Luxurious 2 BHK & E3 homes • Two clubhouses with gymnasium, squash, half-basketball and tennis courts • Mini-theatre • Yoga room • Swimming pool • Multi-functional room • Spa • Landscaped garden and children's play area • Safety and security features

KALPA-TARU®

Site Address: LBS Marg, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.
Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055.
Tel.: 022-3064 3065 • **Fax:** 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com • **Visit:** www.kalpataru.com

All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. All project elevations are an artistic design. Conditions apply.

Kalpataru Limited is proposing, subject to market conditions and other considerations, to make a public issue of securities and has filed a Draft Red Herring Prospectus ("DRHP") with the Securities and Exchange Board of India (SEBI). The DRHP is available on the website of SEBI at www.sebi.gov.in and the respective websites of the Book Running Lead Managers at www.morganstanley.com/indiaofferdocuments, www.online.citibank.co.in/rhtm/citigroupglobalscreen1.htm, www.csinga.com, www.icicisecurities.com, www.nomura.com/asia/services/capital_raising/equity.shtml, www.idfccapital.com. Investors should note that investment in equity shares involves a high degree of risk and for details relating to the same, see 'Risk Factors' in the aforementioned offer documents. This communication is not for publication or distribution to persons in the United States, and is not an offer for sale within the United States of any equity shares or any other security of Kalpataru Limited. Securities of Kalpataru Limited, including its equity shares, may not be offered or sold in the United States absent registration under U.S. securities laws or unless exempt from registration under such laws.

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक – विरदराज सुराणा द्वारा दी डामयण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर – 302003 से प्रकाशित । सम्पादक – डॉ. धर्मचन्द जैन